चलो दिल्ली मारो फिरंगी...

ERINPURA
छावणी

छगन लाल मीणा (डाकोल), धनापुरा

सहयोग/रिसर्च टीम

श्री जोराराम मीणा सेदरिया, श्री नरेन्द्र कुमार मीणा मालनू,
श्री भरतराज मीणा पालडी जोड़, श्री जगदीश कुमार मीणा पिण्डवाडा,
श्री तरुण कुमार मीणा पिण्डवाडा, श्री रामलाल मीणा पुराडा, फालना

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Chhagan lal meena (Dakol), Dhanapura 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-975-3

Cover design: Aafiya Saifi
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: December 2025

समर्पण

यह पुस्तक एरिनपूरा के उन सभी आदिवासी मीना और अन्य आदिवासी समुदाय के वीर सैनिकों और शुरवीर विद्रोहियों के नाम समर्पित है जिन्होंने एरिनपूरा छावनी की स्थापना व सन-1857 की क्रांति तथा प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में अपनी वीरता का परिचय देने वाले उन सभी आदिवासी सैनिको, जिन्होंने अपने सर्वोच्च बलिदान से हमारे इतिहास के गौरवशाली पन्नों को अपने रक्त से की श्याही से रंग परन्तु विडम्बना ही रही की उनको इतिहास में हमेशा से हाशिये पर रखा गया और इन के बलिदान को इतिहास में वो स्थान नहीं मिला जो मिलना चाहिये था उन गुमनाम शूरवीरो का अदम्य साहस और देश के प्रति प्रेम ही इस ऐतिहासिक कार्य की असली प्रेरणा है। मेरा यह विनम्र प्रयास उन सभी दबे कुचले शोषित वर्ग के हितेषी मसीहाओ और स्वतंत्रता के परवानो के असीम प्रेम, त्याग और बलिदान के नाम समर्पित है।

यह पुस्तक, और इसके हर एक पन्ने में सहेजा गया इतिहास का अंश, मेरे जीवन के उन महत्वपूर्ण स्तंभों और प्रेरणा स्रोतों को समर्पित है, जिनके अटूट समर्थन और बलिदान के बिना यह यात्रा संभव नहीं थी।

मेरे आदरणीय माता-पिता,

श्रीमती राम्बा देवी और श्री फुलाराम जी मीना (डाकोल) आपके द्वारा दिए गए संस्कारों, शिक्षा और बलिदानों ने मेरे जीवन की नींव रखी। आपने ही मुझे हमारे पूर्वजो के इतिहास और बलिदान के प्रति जिज्ञासा और इतिहास के महत्व को समझना सिखाया। आपकी प्रेरणा और आशीर्वाद ने ही मुझे इस कार्य को पूरा करने का साहस दिया।

मेरी प्रिय पत्नी,

श्रीमती संगीता कुमारी, मेरे हर संघर्ष और हर सफलता में मेरी सबसे बड़ी साथी रही हैं। इस शोध-यात्रा और लेखन कार्य के दौरान मैंने परिवार, आपके और बच्चो के हिस्से के समय को मेरे इस कार्य के लिए समर्पित कर दिया आपके धैर्य, समझ और निरंतर प्रोत्साहन ने मुझे आगे बढ़ने की शक्ति दी। आपका साथ मेरे लिए ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है।

—छगन लाल मीना (डाकोल), धनापुरा

अस्वीकरण

इस पुस्तक के प्रकाशन से पूर्व मेरी एक और पुस्तक " ***मीणा -(गोडवाड और मारवाड़ पाली जालोर सिरोही) संक्षिप्त इतिहास के बिखरे हुए मोती*** '' का सफल प्रकाशन हो चुका है, इस पुस्तक को मिले प्यार और पाठको की इतिहास के प्रति रुचि ने मुझे इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए प्रेरित किया, साथ ही इस पुस्तक को लिखने का मेरा एक उद्देश्य यह भी था की सन-1857 के सैनिक विद्रोह की शुरुआत मेरठ तथा नसीराबाद, नीमच, देवली आदि छावनियों के विद्रोह से हुई और इसी कड़ी मे एरिनपुरा छावणी के विद्रोह का भी महत्वपूर्ण स्थान है, जहाँ पर आदिवासी मीणा, भील **(भील और मीना अलग अलग जनजातियाँ है इन्हे भील-मीना संबोधित कर भ्रम की स्थति उत्पन्न न करे)** और अन्य स्थानीय जनजातिय सैनिकों के शौर्य और बलिदान को सम्मान देने और इनके संघर्ष को पृथक प्रकाश में लाने के उद्देश्य से इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है, क्योंकि पुर्व-लिखित इतिहास का अवलोकन करने पर हम पक्षपातपूर्ण लेखन को पाते है जिसमे किसी वंचित वर्ग या आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी का इतना वर्णन नहीं मिलता जितना अन्य प्रभावशाली समुदायों का मिलता है इन इतिहासकारो की लेखनी पक्षपात पूर्ण महसूस होती है, देश की आजादी के लिए मर-मिटने वाले देश प्रेमी और क्रांतिकारी मे भेद करना संकीर्ण मानसिकता को दर्शाता है देशभक्त की सिर्फ एक ही जाति होती है ओर वो है **देश-भक्ति** लेकिन कुछ मौका परस्त इतिहासकारो ने इनमे भी भेद करने की कोशिश की और देश भक्तों को भी जातिय भेद और तोड़ने वाली लेखनी से प्रस्तुत किया और साथ ही जो अपमान जनक शब्द और नामकरण अंग्रेजों और पूर्व के शासकों ने इन्हे अपमानित करने के उद्देश्य से दिए उन्हे ही आगे बढ़ाने का कार्य किया उन शब्दावलियों पर जरा सा भी विचार नहीं किया और ज्यों का त्यो अपनी

किताबों मे छाप दिया जैसे पूर्व मे द्वेष भावनावश अंग्रेजों और पूर्ववर्ती शासकों ने आदिवासी जन-जातियों को चोर, डाकू लुटेरा,अराजक यहां तक की आतंकवादी और जंगली तक कहा क्योंकि ये लोग निस्वार्थऽऽ भाव से क्रांति/विद्रोह कर रहे थे ये विद्रोह न सिर्फ अंग्रेजों के खिलाफ बल्कि यह विद्रोह हर उस बाहरी आक्रांता और निरंकुश सत्ता के विरुद्ध न्याय की आवाज था जो अत्याचार की मानसिकता के अधीन थे , ये लोग दमनकारी सत्ताधारियों और शोषणकारियों को इसी तरीके से सजा देते थे तथा शोषित और लाचार की मदद करते थे, इनका सिद्धांत सिर्फ इतना था की भ्रष्ट और बेईमान से छीन कर जरूरतमद को दे देना इन्हे (मीणाओ व अन्य आदिवासी समुदायों को) सदियों तक मुख्यधारा और रोजगार से वंचित रखा गया और भोली-भाली जनता को इनके खिलाफ गुमराह किया गया, अत: इनके पास रोजगार न होने की स्थति मे छीने हुए धन या अन्न का छोटा सा हिस्सा ही अपने पास रखने का नियम बन गया था जिससे उनके परिवार का सप्ताह भर का भरण पोषण हो सके अन्यथा ये लोग अगर सारा धन अपने लिए रखते तो क्या अब तक धनवान नहीं हो जाते? जिस कारण ये लोग सदियों से ही सत्ता की आँख का कांटा थे तथा सत्तापोषित इतिहासकारों और जगाओ व भाटो ने इनकी नकारात्मक छवि प्रसारित की जिसे बाद के लेखकों ने भी ज्यों का त्यो प्रस्तुत किया, स्वंत्रता के संघर्ष में हम आदिवासियों का भी विशेष योगदान पाते है। अतः इस पुस्तक के माध्यम से इन आदिवासी मीणा और भील स्वंत्रता सेनानियो को सम्मान देने की एक छोटी सी कोशिश की गई है, इस पुस्तक को क्षेत्र के मीणा और भील आदिवासी समुदायों के नजरिए से लिखा गया है, क्योंकि इस क्षेत्र के इन आदिवासी समुदायों मे लंबे समय तक शिक्षा के अभाव के कारण इनके इतिहास को इनके नजरिए से पुस्तकों के रूप मे दर्ज नहीं किया जा सका है अगर इनका जिक्र किया भी गया है तो इनके नजरिए को समझने की कोशिश नहीं की गई है तथा सत्ता पक्ष के लेखको और इतिहासकारो द्वारा सत्ता धारकों को महान और इन समुदायों के संघर्ष और विद्रोह को आपराधिक गतिविधि के रूप मे वर्णित किया गया, अत: इस पुस्तक

के माध्यम से इनके नजरिए को सबके सामने लाने का प्रयास किया गया है अतः इस पुस्तक मे समानांतर अन्य समुदायों को छोड़ कर इन आदिवासी समुदायों पर ज्यादा प्रकाश डाला गया है इसका ये मतलब कधापि नहीं है की लेखक अन्य समुदायों के संघर्ष और देशभक्ति अपमान करना चाहता है, लेखक की किसी भी समुदाय की भावनाओ ठेस पहुचाने की मंशा नहीं है ये पुस्तक इतिहास के दूसरे पहलू को दिखाने का एक आईना भर है इसे किसी प्रकार के विरोधभाषी विचार के अधीन होकर ना पढे इसे खुले दिल और स्वीकृति के भाव से पढ़ेंगे तो पाठक पाएंगे की ये पुस्तक उन वंचित समुदायों के सम्मान और अधिकार की एक आवाज भर है, लेखक सर्वसमाज व सम्पूर्ण भारतवासियों का सम्मान करता है और उनकी मान्यताओ और विचारों को सम्मान के भाव से देखता है,लेखक इस पुस्तक के माध्यम से सामाजिक समरसता का भाव बढ़ाना चाहता है इसके उपरांत भी अगर कोई त्रुटि रह गई हो तो लेखक के अच्छे उद्देश्य को ध्यान रखते हुए मानवीय भूल समझ कर नजरंदाज कर दे और मार्गदर्शन करने का प्रयास करे जिससे लेखक का मनोबल बना रहे धन्यवाद

छगन लाल मीणा (डाकोल), धनापुरा (राज.)

नोट- *इस पुस्तक में दी गयी हर जानकारी से सम्बंधित सन्दर्भ व् श्रोत उक्त जानकारी से पहले बोक्स में अंकित किया गया है।*

प्रेरणा स्त्रोत

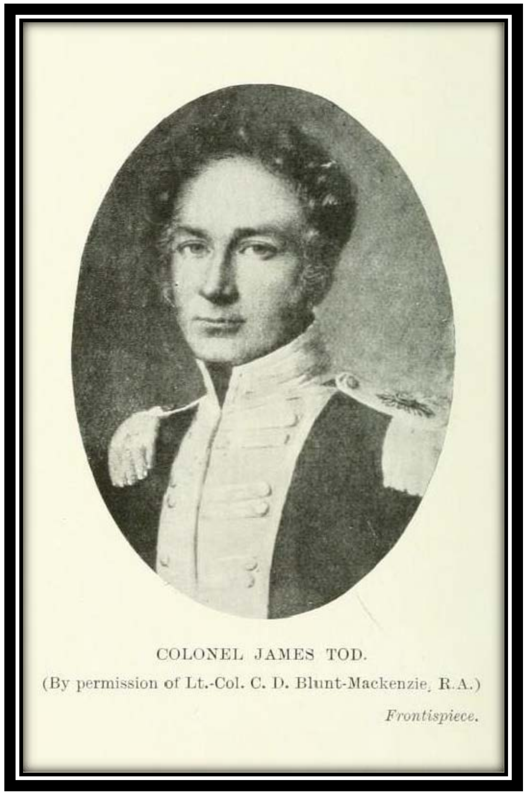

(कर्नल जेम्स टॉड राजस्थान के इतिहास के पितामह)

परिचय

सन-1857 कि क्रांति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम सशस्त्र प्रयास था जिसमे कई सैनिक छावनियो ने विद्रोह किया जिसे '' **भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम** '' भी कहा जाता है, यह विद्रोह केवल एक सैनिक विद्रोह नहीं था बल्कि वर्षो कि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और धार्मिक असंतोष का परिणाम था इस आन्दोलन मे सैनिक छावनियो का महत्वपूर्ण योगदान रहा क्योकि इसी चिंगारी ने पुरे देशभर मे क्रांति कि ज्वाला प्रज्वलित कि वास्तव मे इस विद्रोह के बाद ही देश मे स्वतंत्रता का बिगुल बजा और राजपूताने मे स्थित छः छावनियो मे से एरिनपूरा छावनी का विद्रोह विशेष रूप से उल्लेखनीय है, एरिनपुरा छावनी वर्तमान राजस्थान के सिरोही जिले के, शिवगंज कस्बे के पास स्थित थी। तथा इनके अधिकारियों के बंगले और कार्यालय जवाई बांध स्टेशन जिसे पहले एरिनपुर स्टेशन कहा जाता था के पास खंडहर हालत मे स्थित है इससे ये सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है की ये छावनी कितने विशाल क्षेत्र मे फैली हुई थी,यह छावनी ब्रिटिश सरकार द्वारा रणनीतिक दृष्टिकोण से स्थापित की गई थी, ताकि राजपूताने की राजनीतिक गतिविधियों और स्थानीय आदिवासी विद्रोहियों पर नियंत्रण रखा जा सके। जब 1857 में क्रांति का बिगुल बजा, तो एरिनपुरा के सैनिकों ने भी अन्य स्थानों की भांति विद्रोह कर दिया। उन्होंने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध हथियार उठाए और स्वतंत्रता की आवाज बुलंद की। यह विद्रोह यधपि लंबे समय तक नहीं टिक सका, परंतु इसने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय सैनिक और आमजन अब गुलामी स्वीकार नहीं करना चाहते। आज एरिनपुरा में खंडहरों के रूप में जो इमारतें बची हैं, वे उस ऐतिहासिक संघर्ष की गवाही देती हैं। ब्रिटिश काल की ये जर्जर इमारतें न केवल इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि ये इतिहास के जीवित प्रमाण भी हैं। आवश्यकता है कि इन स्थलों को संरक्षित किया जाए और इनकी ऐतिहासिक महत्ता को जन-मानस तक पहुँचाने के लिए

दस्तावेजीकरण किया जाए। ऐसे प्रयासों के माध्यम से आने वाली पीढ़ियाँ इस गौरवशाली अतीत से प्रेरणा ले सकेंगी और स्वतंत्रता संग्राम के उन गुमनाम योद्धाओ को उचित सम्मान दे सकेंगी।

धन्यवाद

छगन लाल मीणा (डाकोल), धनापुरा (राज.)

भूमिका

एरिनपुरा छावनी सन-1857 की क्रांति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है, एरिनपुरा छावनी के गठन की प्रक्रिया सन्-1831 से पूर्व ही शुरू हो चुकी थी लेकिन सन्-1836 में सेना की एक कोर स्थापित की गई जिसका जोधपुर लीजन नाम दिया गया जिसे कैप्टन डाउनिंग के जन्म स्थल यूरोप के एक द्वीप '**एरिन**' पर नामित किया गया।

एरिनपुरा छावनी की स्थापना सन्-1842 में जिसे सन-1860 में एरिनपुरा रेजिमेंट के अनियमित बल के रूप में परिवर्तित कर दिया गया तथा सन्-1903 में इसे एरिनपुरा रेजिमेंट बना दिया गया इसके 19 वर्ष पश्चात ही 14,अक्टूबर1922 को अंग्रेज अधिकारी किचनर के निर्देशन में सैनिक सुधार के तहत भंग कर दिया गया, जो कि अंग्रेजों और उनके सहयोगियों की सोची समझी रणनीति प्रतीत होती है जो कि शुरू में एरिनपुरा इस छावनी का मुख्यालय था ।

भारत में सन् 1857 की क्रांति की ज्वाला बैरकपुर, बंगाल से पूरे देश में आग की तरह फैल गई जिसके प्रभाव से 21अगस्त को पुरबिया सैनिकों ने आबू में क्रांति की आवाज बुलंद की और छावनी के अधिकारी " **होल** " के बंगले पर आक्रमण कर दिया और उसके दो दिन बाद 23 अगस्त को एरिनपुरा के सैनिक भी क्रांति की इस आग में कूद पड़े और क्रांति कर दी और एक सुप्रसिद्ध नारा दिया-

'चलो दिल्ली, मारो फिरंगी' |

एरिनपुरा सैनिकों में मीणा सैनिकों का बाहुल्य था अतः आज भी एरिनपुरा के आसपास के क्षेत्रों में मीणा समुदाय के लोगों का बाहुल्य है जिनके पूर्वजों ने इस विद्रोह में हिस्सा लिया परंतु इतिहास के पन्नों में उन शूरवीरों का नाम गायब ही रहा जिसका मुख्य कारण शिक्षा की कमी

और आदिवासी समाज में श्रुति परंपरा का होना प्रतीत होता है परंतु जनश्रुतियों और किंवदंतियों में उन वीरों की वीरता का बखान सदियों से होता रहा है परंतु आज इस इतिहास को लिपिबद्ध करना समय की मांग है । आज के आधुनिक समय में जनश्रुतियो की प्रासंगिकता पहले से कम प्रतीत होती है अत: उन उलझी हुई कड़ियों को लिपिबद्ध करना आवश्यक है।

प्रमाण पत्र

A NAAC-accredited
A+ University (Cycle III)

Rajasthan College Jaipur
Established - 1957

ICSSR

National Seminar

On

Tribals of India: In Search of Identity

7th – 8th August, 2025 (NSTP-2025)

Certificate

This is to certify that Dr./Mr/Ms./Mrs. Chhagan Lal Meena

Designation Govt Official *of College/Institution/University* ESIC Hospital Udaipur (Raj.) *has participated & presented a research paper/poster entitled* एरिनपुर छावनी का आदिवासी विद्रोह : 1857 क्रांति में एक अनसुना योगदान *in the National Seminar on* ***"Tribals of India: In Search of Identity"*** *organized by University Rajasthan College, University of Rajasthan, Jaipur, in collaboration with* ***Indian Council of Social Science Research (ICSSR)*** *under Janjatiya Gaurav (Tribal Pride) Seminars.*

Director	Convener	Organizing Secretary	Organizing Secretary
Prof. Vinod Sharma	**Dr. G.L. Meena**	**Dr. Geeta Meena**	**Dr. Mukesh K Bairwa**
Principal, University Rajasthan College	Assistant Professor, Dept. of Economics, Univ. of Rajasthan	Assistant Professor, Dept. of Zoology, Univ. of Rajasthan	Assistant Professor, Dept. of Geology, Univ. of Rajasthan

अनुक्रमणिका

शोधपत्र 1

01. भोगोलिक स्थति एवम् एतिहाSसिक,वर्तमान व्यापारिक और प्रशासनिक, महत्त्व 13

02. अरिनपुरा छावनी कि स्थापना नामकरण एवम ऐतिहासिक महत्व के साक्ष्य- 20

03 एरीनपुरा मे आदिवासी मीणा सेनिक भर्ती प्रक्रिया व
इस क्षेत्र के मीनाओ का संक्षिप्त इतिहास 28

04.एरिनपुरा छावनी मे सैन्य बल और उनकी रैंक 35

05.एरिनपुरा छावनी में सैनिक विद्रोह और आउवा का संघर्ष
(चलो दिल्ली मरो फिरंगी) नारे की गूंज 40

06. चलो दिल्ली मारो फिरंगी नारे की प्रासंगिकता 71

07. 43वी एरिनपुरा रेजिमेंट का गठन 76

08.राजपुताना रियासतों व् ब्रिटिश सत्ता के मध्य प्रमुख सुरक्षा संधियाँ 81

09. शिवगंज स्थापना एवम् एरिनपुरा से सम्बन्ध 91

10.एरिनपूरा अनियमित बल की सन-1901 में बॉम्बे प्रेसीडेंसी
Sराफल्स एसोसिएशन की खेल स्पर्धा में जीत 95

11. प्रथम विश्व युद्ध की सुरुआत 98

12. प्रथम विश्व युद्ध मे एरिनपुर छावनी का योगदान 103

13. द्वितीय विश्व युद्ध 113

14. प्रथम तथा द्वित्य विश्व युद्ध में हिस्सा रहे कुछ मीना सैनिक 119

15. एस.एस. एरिनपूरा जहाज परिचय (नामकरण, उपयोग और नष्ट) 124

16. 42वी देवली रेजिमेंट (मीना बटालियन) 131

17. CRPF की स्थापना तथा एरिनपूरा और देवली की मीना कोर का विलय 134

17. केशरपुरा (झुपा) गाँव का एरिन्पुरा छावनी से सम्बन्ध 140

18. वर्तमान में एरिनपूरा के नष्ट होते एतिहासिक साक्ष्य 143

19.ब्रिटिश सरकार द्वारा ब्रिटिश व भारतीयों को दिए जाने वाले मेडल 148

सन्दर्भ सूचि 150

नोट्स 157

शोधपत्र

एरिनपुरा छावनी का आदिवासी विद्रोह: 1857 की क्रांति में एक अनसुना योगदान

छगन लाल मीणा(डाकोल),धनापुरा

भारत राज मीणा, पालडी जोड़

सारांश :

1857 का विद्रोह भारत के स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम संगठित प्रयास था, जिसमें देश के विभिन्न समुदायों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाई। यद्यपि इस क्रांति के केंद्र मेरठ, दिल्ली, झांसी, कानपुर, और लखनऊ जैसे स्थानों को अधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई, परंतु राजस्थान की एरिनपुरा छावनी में हुए आदिवासी विद्रोह को इतिहास ने अपेक्षित स्थान नहीं दिया। यह विद्रोह न केवल अंग्रेजों के विरुद्ध आदिवासी असंतोष की अभिव्यक्ति था, बल्कि यह भारत की आज़ादी की उस नींव का हिस्सा भी था जिसमें जनजातीय समुदायों का अहम योगदान रहा।

एरिनपुरा छावनी में ब्रिटिश सेना और स्थानीय रियासतों की संयुक्त रणनीति के तहत बड़ी संख्या में आदिवासी मीणा सैनिकों को नियुक्त किया गया तथा कुछ भील सैनिकों को भी सेना में शामिल किया गया, इन सैनिकों की निष्ठा और बहादुरी को अंग्रेजों ने अपने हित में इस्तेमाल किया, परंतु उन्हें बराबरी और सम्मान कभी नहीं दिया गया हमेशा सेना के वरिष्ठ पदों पर अंग्रेज अफसर ही होते थे।

1857 की क्रांति के दौरान जब देशभर में विद्रोह की लहर उठी, तब एरिनपुरा के इन आदिवासी सैनिकों ने भी अपने स्वाभिमान और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की।

यह शोधपत्र एरिनपुरा छावनी के आदिवासी विद्रोह का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो 1857 की क्रांति का एक अनसुना और उपेक्षित पक्ष है। इसमें विद्रोह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, आदिवासी भूमिका, राजनीतिक प्रभाव और ब्रिटिश प्रतिक्रियाओं को समझने का प्रयास किया गया है। यह कार्य जनजातीय योगदान को सही पहचान दिलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

मुख्य शब्द: एरिनपुरा छावनी, 1857 का विद्रोह, जनजातिया, सिरोही, सेना

1.एरिनपुरा छावनी- एक ऐतिहासिक परिचय

1.1: सन 1836 में जोधपुर लिजन की स्थापना की गई , एरिनपुरा सिरोही राज्य (राजपुताना) के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक प्रमुख ब्रिटिश छावनी थी। यह जवाई नदी के बाएँ तट पर, 25° 9′ उत्तर अक्षांश और 73° 4′ पूर्व देशांतर पर स्थित थी, तथा राजपुताना-मालवा रेलवे की एरिनपुरा स्टेशन से लगभग 6 मील की दूरी पर थी। 1901 की जनगणना के अनुसार, यहां की जनसंख्या 3,206 थी।

1.2: यह छावनी 43वीं एरिनपुरा रेजिमेंट का मुख्यालय थी, जिसकी टुकड़ियाँ आबू, बीकानेर और पचभदर में तैनात थीं। 1818 की संधि के अंतर्गत मारवाड़ दरबार को ब्रिटिश सरकार को आवश्यकता पड़ने पर 1,500 घुड़सवार सैनिकों की टुकड़ी देनी थी। किन्तु 1832 में भेजी गई यह टुकड़ी अप्रभावी सिद्ध हुई, जिसके कारण 1835 में इस सैन्य

सहयोग को समाप्त कर, उसके स्थान पर ₹1.2 लाख वार्षिक भुगतान तय किया गया ताकि एक स्थायी बल बनाए रखा जा सके।

फोटो: 01,02: (43वी एरिनपुरा रेजिमेंट का चिन्ह),

(43वी एरिनपुरा रेजिमेंट, 1913 कलर हवलदार “Mina”)

1.3: 1836 में इस बल को “जोधपुर लीजन” के नाम से गठित किया गया और इसे वर्तमान एरिनपुरा छावनी में तैनात किया गया। इसके पहले कमांडेंट कैप्टन डाउनिंग ने इस स्थान का नाम अपने जन्म स्थान द्वीप “एरिन” के नाम पर रखा। प्रारंभिक संरचना में इसमें 3 घुड़सवार टुकड़ियाँ, 8 पैदल कंपनियाँ और दो 9-पाउंडर तोपें थीं

1.4: 1841 में इसमें भील समुदाय की तीन कंपनियाँ और जोड़ी गईं। 1857 के विद्रोह के समय भील कंपनियों ने विद्रोह में हिस्सा नहीं लिया, इन 3 भील कंपनियों को छोड़कर शेष बल ने विद्रोह कर दिया। इसके पश्चात् सन 1860 में एक नया बल ‘एरिनपुरा इर्रेगुलर फोर्स’ के रूप में गठित हुआ, जिसकी नींव वही भील कंपनियाँ बनीं।

1.5: यह बल एक घुड़सवार टुकड़ी (मुख्यतः सिखों की) और आठ पैदल कंपनियों (मुख्यतः स्थानीय आदिवासी मीणा सैनिकों और कुछ भील सैनिकों से बनी और साथ ही इन कंपनियों का उद्देश्य जनजातीय लोगों की शक्ति को अपने हित में उपयोग करने, इन्हें नियंत्रण में रखने

के लिए इन्हें रोजगार देने और मुख्यधारा में लाने के प्रलोभन के नाम पर उन्हें सेना में भर्ती किया गया जिससे इन्हें आपराधिक और सत्ता विरोधी गतिविधियों से दूर रखा जा सके।

1.6: 1870 से 1881 तक, एरिनपुरा का कमांडेंट सिरोही का राजनीतिक अधिकारी भी रहा। आवश्यकता पड़ने पर छावनी की टुकड़ियों को ब्रिटिश और रियासती सत्ता विरोधी ताकतों पर नियंत्रण हेतु पुलिस सहायता में भी भेजा जाता था। 1895 में घुड़सवार बल को 164 से घटाकर 100 सैनिकों तक सीमित कर दिया गया।

1.7: 1897 में यह बल, जो पहले भारत सरकार के विदेश विभाग के अधीन था, अब कमांडर-इन-चीफ के नियंत्रण में लाया गया। अंततः 1903 में इसका नाम परिवर्तित कर "43वीं (एरिनपुरा) रेजिमेंट" कर दिया गया ।

2. एरिनपुरा छावनी में विद्रोह की घटना

1857 ईस्वी में अंग्रेजों की देशी सेना ने जब हिंदुस्तान में क्रांति का आगाज़ किया, तब इसकी चिंगारी सिरोही तक भी पहुँच गई। यहाँ स्थित एरिनपुरा छावनी, जो एक महत्वपूर्ण ब्रिटिश सैन्य केंद्र थी, वहाँ की सेना भी इस क्रांति की भावना से अछूती नहीं रही। छावनी में तैनात सैनिकों, विशेषकर मीणा आदिवासी समुदाय, ने अंग्रेजों के प्रति विद्रोह कर दिया।

2.1: इतिहासकारों और स्थानीय स्रोतों के अनुसार, एरिनपुरा की क्रांति के समय अंग्रेज अधिकारियों को अपनी जान बचाने के लिए रिसालों की लाइनों में शरण लेनी पड़ी। कुछ अंग्रेज अधिकारी स्वयं को बचाकर भाग निकले, तो कुछ को बागी सैनिक अपने साथ ले गए। इस विद्रोह की गंभीरता का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि सिरोही राज्य के तत्कालीन शासक महाराव शिवसिंह ने अपने मंत्रियों को भेजकर अंग्रेज अधिकारियों को बागियों के हाथ से छुड़ाया और उन्हें सिरोही के महलों में सुरक्षा प्रदान की।

इससे स्पष्ट होता है कि एरिनपुरा का विद्रोह केवल एक छावनी तक सीमित घटना नहीं थी, बल्कि इसका संबंध उस व्यापक जनआंदोलन से था, जो 1857 में देश भर में स्वतंत्रता की भावना से प्रेरित होकर खड़ा हुआ था।

3. एरिनपुरा छावनी में विद्रोह: घटनाओं का क्रमिक विवरण

1857 की क्रांति की लपटें जैसे ही सिरोही क्षेत्र में पहुँचीं, एरिनपुरा छावनी के मीणा सैनिकों ने अंग्रेज़ी हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। अंग्रेजों की स्थानीय सेना, विशेष रूप से मीणा कंपनियाँ, विद्रोही हो गईं। उस समय एरिनपुरा छावनी में ब्रिटिश अधिकारी कमांडर हॉल साहब, लेफ्टिनेंट कोनोली, और अन्य उच्च अधिकारी अपने परिवार सहित उपस्थित थे। जैसे ही विद्रोह शुरू हुआ, अंग्रेज़ों ने रिसालों की लाइनों में जाकर अपने बचाव के प्रयास किए। कुछ को बागियों ने बंदी बना लिया और कुछ भाग निकले।

19 अगस्त 1857 को सिपाहियों का एक दल, जो पहले ही विद्रोही हो चुका था, आबू की ओर बढ़ा और वहां की देशी सेना के साथ मिलकर 21 अगस्त को आबू में विद्रोह कर दिया तथा आबू में तैनात 83 नंबर की अंग्रेज़ी रेजीमेंट के अधिकांश सैनिक बीमार थे, लेकिन फिर भी संघर्ष हुआ।

विद्रोही सैनिकों ने आबू में स्थित अंग्रेज अधिकारियों के बंगलों पर बंदूकें चलाईं, जिसमें कमांडर हॉल और कोनोली साहब के बंगलों पर हमला हुआ। हालांकि, कुछ अंग्रेज़ अधिकारी अपने बच्चों और महिलाओं सहित भागने में सफल रहे। फिर सिरोही के महाराव शिवसिंह के हस्तक्षेप से कुछ अंग्रेजों को बागियों से छुड़ाया गया और उन्हें सिरोही के महलों में शरण दी गई।

रिसालों की लाइनों में तैनात मेहरबान सिंह नामक सैनिक ने अन्य अंग्रेज़ों को सही रास्ता दिखा कर भागने में मदद की, जबकि कोनोली साहब को बागियों ने पकड़ लिया। राजा शिवसिंह ने तुरंत मुन्शी नियमत अली खां को भेजकर कहा कि "तुम फ़ौज के साथ एरिनपुरा जाकर बागियों के हाथ से किसी तरह अंग्रेज़ों को छुड़ाओ"। नियमत अली खां और उनकी टुकड़ी ने बागियों से वड़गांव के पास मुक़ाबला किया और बचे हुए अंग्रेजों को सिरोही लाकर राजा के संरक्षण में रखा।

आबू से भागे कई विद्रोही सैनिक सिरोही के पास होकर निकले, लेकिन वहां के मज़बूत प्रशासन और सुरक्षा व्यवस्था को देखकर उन्होंने वहाँ लड़ाई नहीं की और आगे बढ़ गए।

कुछ दिन तक आबू और एरिनपुरा का डाक मार्ग बाधित हो गया था, क्योंकि बागियों के डर से कोई भी चिट्ठी या संदेश नहीं भेजा जा सकता था। बाद में शांति स्थापना के बाद सभी अंग्रेजों और उनके परिवारों को सुरक्षित उनके स्थानों तक पहुँचाया गया। तथा विद्रोही सैनिक एरिनपुरा के बाकी सैनिकों के साथ मिल गए और दिल्ली की ओर कुच किया तथा " चलो दिल्ली मारो फिरंगी" का नारा लगाते हुए आगे बढ़ गए, योजना बनाई कि पाली, अजमेर, व जयपुर के रस्ते होते हुए दिल्ली जाएंगे और वहां जाकर बहादुर शाह जफर के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ेंगे इससे पहले इनके कुछ नायकों अब्बास अली, मोती खां, शीतलप्रसाद, तिलक राम की सलाह पर अब्बास अली ने अंग्रेजों को एक पत्र लिखा परन्तु अंग्रेजों की तरफ से कोई जवाब नहीं आया जिसके पश्चात विद्रोही सैनिक पाली के पास खेरवा पहुंचे वहां पर विद्रोही सैनिकों की मुलाकात आउवा ठाकुर खुशहाल सिंह चम्पावत के साथ हुई जिनका पहले से ही मारवाड़ (जोधपुर) रियासत के राजा तख्त सिंह के साथ विवाद चल रहा था जिसमें ठाकुर खुशहाल सिंह ने एरिनपुरा विद्रोहियों का बड़ी चतुराई से जोधपुर (मारवाड़) के खिलाफ किया जिसमें अंग्रेज और मारवाड़ रियासत की संयुक्त वो पृथक सेना के साथ अलग अलग युद्ध हुए जिसमें चेलवास का युद्ध भी शामिल था जिसे काले गोरों का

युद्ध भी कहा जाता है, इन घटनाक्रमों मेंअजमेर का ए.जी.जी. जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस की चेलवास के युद्ध में हार हुई और जोधपुर के पॉलिटिकल एजेंट मौकमेसन मारा गया विद्रोही सैनिकों ने मौकमेसन का गला काट कर आउवा किले के मुख्य द्वार पर लटका दिया और जीत की खुशियां मनाई और एक गीत गया ,

ढोल बाजे चंग बाजे भेलो बजे बाकियों,

मौकमेसन ने काट के आउवा माते टांगियों।।

इन घटना कर्मों के बाद एरिनपुरा के विद्रोही सैनिकों ने रेवाड़ी के रास्ते दिल्ली कुच किया परंतु नारनौल (हरियाणा) में अंग्रेज अधिकारी गेरार्ड ने रोक लिया और वह से विद्रोही बिखर गए । इसके बाद एरिनपुरा में छः महीने तक अव्यवस्थाएं रही और 20 जनवरी 1858 को अंग्रेजों ने फिर से एरिनपुरा छावनी को अपने कब्जे में लिया, इसके लिए इस विद्रोह के बाद ब्रिटिश हुकूमत ने मीणा सैनिकों की निष्ठा पर सवाल उठाया और आवश्यक कार्यवाही की ।

4.एरिनपुरा छावनी के विद्रोह का प्रभाव और ऐतिहासिक महत्व

एरिनपुरा छावनी में 1857 की क्रांति के दौरान हुआ विद्रोह केवल एक स्थानीय घटना नहीं थी, बल्कि इसने कई स्तरों पर प्रभाव छोड़ा, जो दूरगामी और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

4.1: सामाजिक प्रभाव:

विद्रोह ने स्थानीय मीणा और भील आदिवासियों में राष्ट्रभक्ति की भावना को जागृत किया। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि देश के दूरदराज़ क्षेत्रों में रहने वाले जनजातीय समुदाय भी

स्वतंत्रता के संघर्ष में अपने ढंग से सक्रिय रूप से भाग ले रहे थे। इसने समाज में अंग्रेजों के प्रति असंतोष और संघर्ष की भावना को मज़बूत किया।

4.2: राजनीतिक प्रभाव:

एरिनपुरा छावनी में हुए विद्रोह की राजनीतिक गूंज राजस्थानी रियासतों तक भी पहुँची। सिरोही राज्य के शासक राजा शिवसिंह ने अंग्रेजों के प्रति वफादारी दिखाते हुए विद्रोहियों के विरुद्ध सहयोग किया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि कुछ देसी शासक ब्रिटिश शासन के साथ अपने संबंध बनाए रखना चाहते थे। इस सहयोग ने अंग्रेजों की स्थिति को मजबूत किया और विद्रोह को नियंत्रित करने में उन्हें स्थानीय स्तर पर सहारा मिला। हालांकि, जनजातीय समाज में इससे असंतोष भी गहरा गया, क्योंकि उन्हें अपने पारंपरिक नेतृत्व से अपेक्षित समर्थन नहीं मिला।

4.3: सैन्य प्रभाव:

इस विद्रोह ने अंग्रेजों को उनकी सैन्य प्रणाली की कमजोरी का एहसास कराया। देसी सैनिकों, विशेषकर मीणा भील समुदाय के सिपाहियों द्वारा बगावत करना ब्रिटिश सैन्य ढांचे के लिए गहरा झटका था। इसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने स्थानीय सैनिकों पर अविश्वास जताते हुए उनकी संख्या में कटौती की और छावनियों में निगरानी बढ़ाई।

4.4: ऐतिहासिक महत्व:

एरिनपुरा विद्रोह 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का एक अनसुना किंतु उल्लेखनीय अध्याय है। यह घटना दर्शाती है कि भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल दिल्ली, कानपुर, झांसी या मेरठ तक सीमित नहीं था, बल्कि सिरोही और एरिनपुरा जैसे क्षेत्रों में भी इसकी लपटें पहुँची थीं। यह

विद्रोह इस बात का सशक्त प्रमाण है कि जनजातीय समाज भी स्वतंत्रता की लड़ाई में पीछे नहीं थे उनकी अहम भूमिका थी ।

5. निष्कर्ष

एरिनपुरा छावनी का आदिवासी विद्रोह 1857 की महान क्रांति का वह उपेक्षित अध्याय है, जिसे इतिहासकारों ने लंबे समय तक नजरअंदाज किया। यह विद्रोह केवल ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध असंतोष नहीं था, बल्कि यह उस आदिवासी चेतना और स्वाभिमान की अभिव्यक्ति था जो सामाजिक अन्याय, सैन्य भेदभाव और सांस्कृतिक उपेक्षा के विरुद्ध फूट पड़ी। मीणा और भील जैसे समुदायों ने, जिन्हें अंग्रेजों ने अपनी सेना में तो भर्ती किया परंतु सम्मान से वंचित रखा, जब देशभर में आजादी की लहर उठी तो उन्होंने भी हथियार उठाकर यह दिखा दिया कि वे केवल युद्ध की शक्ति नहीं, बल्कि आत्मबल और राष्ट्रीय चेतना के भी वाहक हैं। विद्रोह की विफलता के बावजूद यह संघर्ष एक बड़ा संदेश छोड़ गया कि आदिवासी समाज केवल हाशिए का विषय नहीं, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन का सक्रिय और जागरूक घटक रहा है। यह विद्रोह राजनीतिक रूप से भी महत्वपूर्ण था, क्योंकि सिरोही रियासत के राजा शिवसिंह जैसे शासकों का अंग्रेजों के साथ दिया गया समर्थन आदिवासी असंतोष को और भड़काने वाला कारक बना। इस आंदोलन की अनदेखी केवल इतिहास की भूल नहीं, बल्कि आदिवासी योगदान के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण की विफलता भी है। आज जब जनजातीय समुदायों को सामाजिक न्याय और आत्मसम्मान की लड़ाई लड़नी पड़ रही है, तब एरिनपुरा का यह विद्रोह एक प्रेरक इतिहास बनकर उभरता है। यह आवश्यक है कि ऐसे क्षेत्रीय और लोक आधारित आंदोलनों को राष्ट्रीय इतिहास में सम्मानित स्थान मिले, ताकि स्वतंत्रता संग्राम की पूर्ण और समावेशी कथा स्थापित हो सके।

अंततः, एरिनपुरा छावनी का विद्रोह 1857 की क्रांति की एक अनसुनी लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण धारा है। इसे इतिहास में उचित स्थान दिलाना न केवल हमारी बौद्धिक जिम्मेदारी है, बल्कि यह जनजातीय योगदान को सम्मान देने का कार्य भी है।

सन्दर्भः

1. Einme, T. G. (1908). The imperial gazetteer of India (Vol. 12, p. 27). Oxford: Clarendon Press.
2. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद. (2018). सिरोही राज्य का इतिहास (चतुर्थ प्रकाशन, पृ. 176–177). जोधपुरः राजस्थानी ग्रन्थागार।
3. लाला, सीताराम. (1920). सिरोही राज का इतिहास (पृ. 238-241). इलाहाबादः पायनियर प्रेस।
4. Archibald, A. (1899). The Western Rajputana State: A medico-topographical and general account (pp. 31, 39). London: Limited York House, Regent Street.
5. Vidal, D. (1997). Violence and truth: A Rajasthani kingdom confronts colonial authority (pp. 174–177). Delhi: Oxford University Press.
6. British Empire. (n.d.). 43rd Erinpura Regiment. BritishEmpire.co.uk. Retrieved July 28, 2025, from https://www.britishempire.co.uk/forces/armyunits/indianinfantry/43rderinpura.htm

7. National Army Museum. (n.d.). 43rd Erinpura Regiment, Colour Havildar Mina [Photograph].National Army Museum Collection. Retrieved from https://collection.nam.ac.uk/detail.php?acc=1951-06-2-12

8. Prichard, I. T. (n.d.). The mutinies in Rajputana (pp. 131–233).

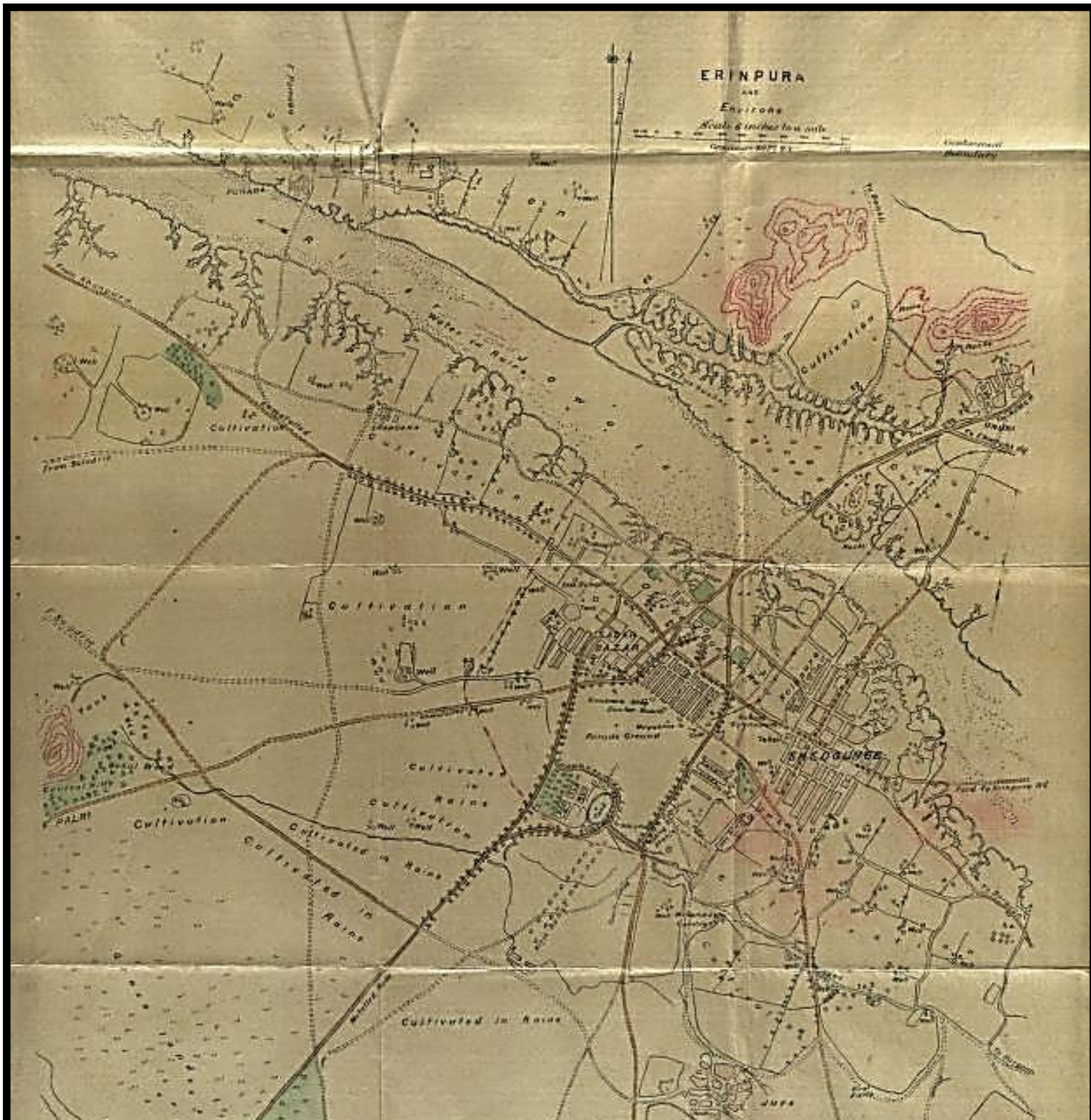

फोटो01 *:(एरिनपुरा छावनी का तत्कालीन नक्शा-1906)*

01. भौगोलिक स्थति एवम् एतिहासिक,वर्तमान व्यापारिक और प्रशासनिक, महत्त्व

एरिनपुरा छावणी वर्तमान में राजस्थान राज्य के सिरोही जिले की शिवगंज तहसील में शिवगंज कस्बे से लगता हुआ एक हिस्सा है, शिवगंज कि स्थापना 12,अप्रेल1855 मे 169 साल पूर्व सिरोही रियासत के तत्कालीन महाराव शिवसिंह ने नगर सेठ कालूराम लोढ़ा को नगर सेठ की पदवी से विभूषित कर नगर की नींव रखी थी, यह जवाई बांध स्टेशन से लगभग 11 किलोमीटर कि दुरी पर स्थित है, जवाई बांध स्टेशन पूर्व मे एरिनपुरा रोड स्टेशन के नाम से जाना जाता था। एरिनपुरा छावनी को आम बोलचाल मे छावनी नाम से जाना जाता है पहले जो राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-14 शिवगंज के बीच से गुजरता था वर्वतमान मे सारा भारी यातायात शिवगंज और सुमेरपुर के बाहर से गुजरता है परन्तु आज भी जवाई नदी पर बना पुलिया सुमेरपुर और शिवगंज दोनों शहरों के आन्तरिक एवं स्थानीय आवागमन का मुख्य मार्ग है,इस मार्ग(सड़क) पर छावनी व शिवगंज को जोड़ने वाले चौराहे का सन-1998 मे शिवगंज नगर पालिका द्वारा नामकरण किया गया, जिसके तहत नगर पालिका द्वारा एरिनपुरा

फोटो-02: *(43 वी एरिनपूरा रेजिमेंट का चिन्ह)*

छावनी के स्वतंत्रता सेनानियों के सम्मान मे **'क्रांति चौराहा'** नाम रखा गया, वर्तमान मे एरिनपुरा और सम्पूर्ण छावनी क्षेत्र शिवगंज नगर पालिका के अंतर्गत आता है एरिनपुरा छावनी भोगोलिक बनवस्थति और वर्तमान मे व्यापार, पर्यटन और परिवहन कि दृष्टि से अत्यंत ही महत्वपूर्ण है यहाँ शहर अरावली कि पश्छिम भाग के समीप है और चारो और से कई एतिहासिक दर्शनीय स्थलों से घिरा हुआ है, मानसून के दिनों मे आसपास का वातावरण मनोरम हो जाता है और आस-पास का क्षेत्र उपजाऊ खेतो से घिरा हुआ है यहाँ भूगर्भीय जल स्तर अच्छा था परन्तु वर्तमान में आधुनिक विकास के नाम पर औध्योगिकीकरण की गतिविधियों ने यहाँ के प्राकर्तिक जलवायु को गहरा आघात पहुँचाया है जिस कारण वर्तमान में जल स्तर अत्यधिक गहरा गया है अतः वर्तमान मे जल संकट को ध्यान में रखते हुए जवाई

सिंचाई व पेयजल परियोजन से काफी सहूलियत हो गयी है अतः हम कह सकते है कि ये क्षेत्र प्राकर्तिक सौन्दर्य कि दृष्टी से भी संपन्न है ठीक वैसे ही जैसे रियासत काल और ब्रिटिश काल मे भी रणनीतिक, राजनीतिक, और सामरिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण था क्योकि इतिहास के पन्नो मे ये बहुर ही अच्छी से तरह से वर्णित है कि इस क्षेत्र मे आदिवासी मीणाओ का वर्चस्व था या यु कहे कि पूरा गोडवाड,मारवाड़ व पूरा अरावली क्षेत्र इनके प्रभाव मे था तथा इस गोडवाड और मारवाड़ के सम्पूर्ण क्षेत्र मे मीणाओ ने अपनी प्रतीकात्मक सत्ता कायम कर रखी थी तथा इस क्षेत्र मे मीणा सरदारों, मुखियाओ, क्रांतिकारियों और धाड़ेतियों का बोलबाला चरम पर था जिस कारण रियासती फौजे भी इनके साहस और विशिस्ट युद्ध कौशल (गुरिल्ला युद्ध निति) से प्रभावित थी इस क्षेत्र के आदिवासी मीणा किसी भी रियासती सेना के नियंत्रण मे आने वाले नहीं थे तथा इस क्षेत्र के नजदीकी सिरोही रियासत और मारवाड़ (जोधपुर) रियासतो कि सीमाए लगती थी हालांकि मारवाड़ ने सिरोही को अपने अधीन करने की काफी कोशिश की परन्तु कई कोशिशो के बावजुद सिरोही अपने अपने आप को स्वतंत्र रियासत मानता रहा अतः इस क्षेत्र मे अंग्रेजो और रियासतों के सामंजस्य से ब्रिटिश सरकार को सैनिक छावनी स्थापित करनी पड़ी परन्तु रियासतों और अंग्रेजो का गठजोड़ इन पर नियंत्रण करने मे असमर्थ रहा और आखिरकार एक कुटनीतिक चाल चली गयी जिसके तहत इनको मुख्यधारा मे लाने और रोजगार देने का हवाला देकर एरिनपुरा छावनी मे सैनिक के तौर पर भर्ती किया गया, वर्तमान मे जवाई नदी पर पाली जिले और सिरोही जिले कि सीमा लगती है तथा शिवगंज व्यापर कि दृष्टि से सिरोही जिले का एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण शहर है जो क्षेत्र बड़ी सब्जी मंडी, कपडा और ज्वेलरी बाजार के लिए प्रसिद्ध है कपड़ा मार्केट के कारण तो इसे **मिनी बॉम्बे** भी बोला जाता है और साथ ही शिवगंज उपखंड मुख्यालय और तहसील कर्यालय भी है तथा इसका पूरक शहर सुमेरपुर भी उतना ही अहम् है जिसे जोधपुर (मारवाड़) के महाराजा सुमेर सिंह ने सन-1912 मे बसाया था जहां पर सन-1915 मे प्रथम

विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार ने जोधपुर के महाराजा से तुर्क युद्धबंधियो के लिए युद्धबंधी शिविर कि स्थापना करवाई गयी सन-1917 मे जब अंतरराष्ट्रीय रेडक्रॉस सोसायटी के आयुक्तों ने सुमेरपुर युद्धबंधी शिविर का दौरा किया गया तो यहाँ 3366 तुर्की युद्धबंधी थे जिनमे अधिकांश मेसोपोटामिया के अरब, इराक और अर्मेनिया के युद्धबंधी थे बाद मे इसका विस्तार किया गया और एक समय मे यहाँ लगभग 9000 युद्धबंधी थे सुमेरपुर मे आज भी तुर्क युद्घबंदियो कि 149 कब्रे मौजूद है ***हिंदुस्तान टाइम्स कि एक रिपोर्ट जो कि 11 जुलाई,2013 छपी थी*** जिसके अनुसार इतिहासिक महत्त्व और पर्यटन कि को ध्यान मे रखते हुए राजस्थान कि तत्कालीन **पर्यटन मंत्री बिना कांक** द्वारा तुर्की के दूतावास से संपर्क किया गया था और तुर्की सरकार यहाँ पर स्मारक बनाने के लिए राजी भी हो गयी थी परन्तु स्थानीय विरोध राजनीति के चलते इस योजना को ठन्डे बसते मे डाल दिया गया,दैनिक भास्कर समाचार पत्र की एक रिपोर्ट जिसे मोतीलाल सिद्धावत,पाली/सुमेरपुर ने कवर किया था रिपोर्ट के अनुसार **एतिहासिक दस्तावेजों के हवाले से** जानकारी मिलती है कि 4 अगस्त,1914 को जर्मनी व इंगलैंड के बीच युद्ध छिडऩे की सूचना मिलने पर तत्कालीन जोधपुर स्टेट के महाराजा सुमेरसिंह (जिनके नाम पर सुमेरपुर शहर बसा) एवं उनके अभिभावक सर प्रतापसिंह ब्रिटिश सरकार की सहायता के लिए तैयार हुए। युद्ध स्थल पर जाने के लिए जोधपुर रिसाले को साथ लेकर स्पेशल ट्रेनों से अगस्त 1914 को रवाना हुए। लंदन पहुंचने पर महाराजा सुमेरसिंह व सर प्रतापसिंह जार्ज पंचम से मिले। सम्राट ने नवयुवक महाराजा सुमेरसिंह के उत्साह से प्रसन्न होकर 15 अक्टूबर 1914 को ब्रिटिश भारत की सेना का ऑनरेरी लैफ्टीनेंट नियुक्त किया। प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी-इंगलैंड युद्ध में तुर्की ने जर्मनी का साथ दिया। इसलिए इस युद्ध में सैकड़ों तुर्की सैनिकों को बंदी बनाकर जोधपुर भेजा गया। जहा सैंट्रल जेल में रखा गया। कुछ दिनों तक वहां रखने के बाद सुमेरपुर भेजने की योजना पर विचार किया गया। सुमेरपुर में जहां कैदकर रखा जाना था। वहां के निवासियों को 1 लाख

57 हजार 76 रुपए हर्जाना देकर सुमेरपुर के पुराने स्थान पर बसाया गया। जिसे आज भी उंदरी कहा जाता है। सुमेरपुर बसने से पूर्व यहां उंदरी गांव आबाद था सभी तुर्की युद्ध बंदियों को सुमेरपुर लाकर एक अस्थाई जेल में रखा गया। इस दौरान कुछ कैदियों की मौत हो गई। धीरे-धीरे सभी कैदी मौत का शिकार हो गए। कैदियों के मरने के बाद दफनाया गया। कैदियों की कब्रों के चारों ओर चारदीवारी बनाई गई। प्रत्येक कैदी के शव के पास सैनिक का नाम, बटालियन का नाम व मृत्यु तिथि अंकित किए हुए पत्थर लगाए गए हैं। आस-पास झाडियां हो गई हैं, लेकिन कब्रें व शिलालेख स्पष्ट नजर आ रहे हैं। अधिकांश सैनिकों की मौत सितंबर 1918 को होने संबंधी शिलालेख लगे हैं। सुमेरपुर के इस स्थान पर कुल 149 युद्धबंदियों की कब्रें हैं।

सुमेरपुर में जहां कब्रें हैं। वहां पहले खुले भूखण्ड में कब्रें थी। बाद में सरकार ने उसके चारो ओर पक्की चारदीवारी का निर्माण करवाकर चारों ओर गेट लगाए गए। इस बारे में जर्मन दूतावास के अधिकारी भी पूरी जानकारी लेते रहते हैं। एक बार नई दिल्ली से जर्मन दूतावास के अधिकारियों का दल भी यहां दौरा करके गया था।

इस रिपोर्ट के आधार पर देखे तो सुमेरपुर भी इतिहास में अति महत्वपूर्ण स्थान रखता है अगर वोट बैंक की राजनीति से ऊपर उठ कर इस प्रकार की धरोहरों को संरक्षित किया जाता है तो शहर अंतरराष्ट्रीय पहचान बना सकेगा और पर्यटन के साथ ही देसी विदेशी इतिहासकारों को भी बहुत सहायता मिलेगी पर्यटन से स्थानीय लोगो के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। वैसे भी सुमेरपुर ऑटो पार्ट्स,भारी कृषि मशीनरी, हार्डवेयर, के लिए पाली जिले का अग्रणी शहर है साथ ही सुमेरपुर के आसपास का क्षेत्र जैवविविधता पर्यटन(जवाई बांध, जवाई लेपर्ड सफारी, मगरमच्छ और मछली संवर्धन व प्रजनन केंद्र होने के कारण पर्यटकों और शोधकर्ताओं में काफी लोकप्रिय है, हाल ही में यहां 15 एकड़ जमीन मे 500 करोड़ कि लागत

से फिल्मसिटी के प्रोजेक्ट के लिए जमीन आवंटित हुई है सब कुछ अगर ठीक रह तो सुमेरपुर विकास की दिशा में नई बुलंदियो को छुएगा।

शिवगंज और सुमेरपुर अलग-अलग जिलों में होने के बावजूद जुड़वा शहर के रूप से जाने जाते है। क्यों कि अगर इन दोनों शहरों का आपसी संपर्क किसी कारणवश अवरुद्ध हो जाए तो आम जन को मुश्किलें आना तय है।

एरिनपुरा में मौसम रिपोर्ट केंद्र भी है तथा यह निर्देशांक 25-1412 44°N, 73.057444°E पर स्थित है एरिनपुरा के नाम से इस क्षेत्र में पाए जाने वाले ग्रेनाइट पत्थर को भी एरिनपुरा ग्रेनाइट के नाम से जाना जाता है विशेषज्ञों के अनुमान के आधार पर एरिनपुरा ग्रेनाइट लगभग 860 से 890 मिलियन वर्ष पुराना है।

ऑनलाइन जर्नल Tylor & Francis के अनुसार-

एरिनपुरा ग्रेनाइट आर्कियन क्रस्ट के पिघलने से बना उत्पाद है तथा ये ग्रेनाइट से ग्रेनोडायोराइट रूप में वर्गीकृत किया गया है तथा इसकी क्षार प्रॉपर्टी Sio की सांद्रता बढ़ने के साथ बढ़ जाती है सिरोही के आसपास के क्षेत्रों में एरिनपुरा ग्रेनाइट प्लूटोन की समकालिक आयु

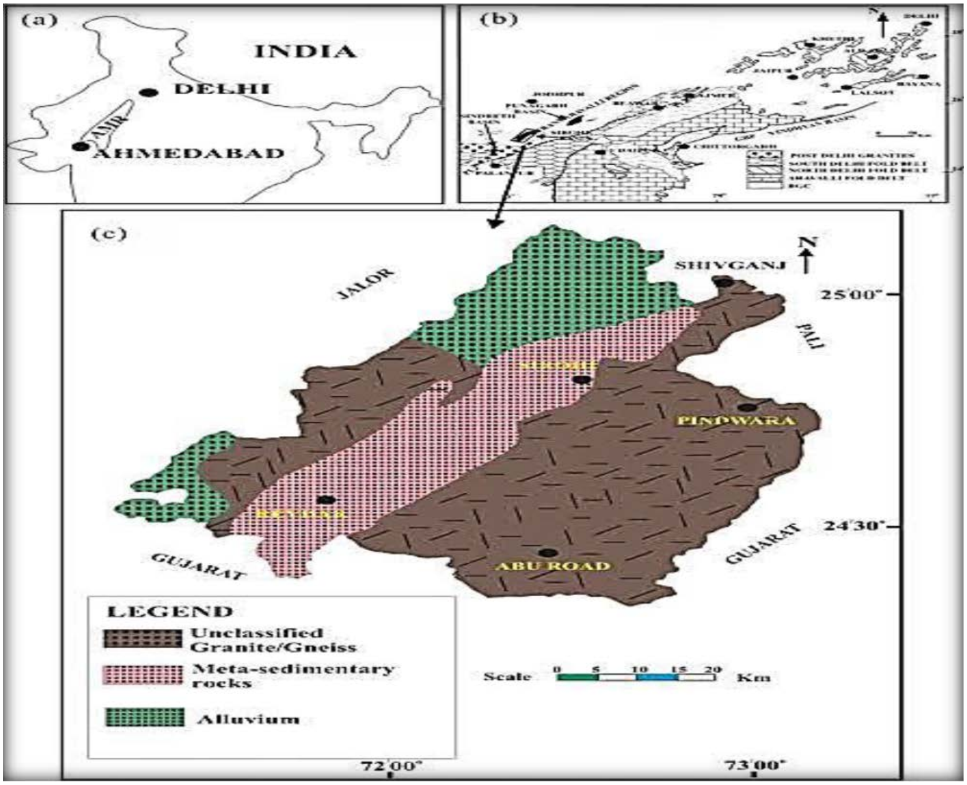

फोटो 03 -*(एरिनपुरा ग्रेनाइट्रस अरावली क्षेत्र)*

लगभग 740 मिलियन वर्ष बताई जाती है तथा इसकी संरचना एरिनपुरा रापाकिवि ग्रेनाइट (आई आर जी) Erinpura Rapakivi granite (ARG) एक मोटे दाने की चट्टान है और इसमें क्षार फेल्डस्पार के मेगाक्रिस्ट होते है जिसकी रसायनिक रूप से इसकी विशेषता अपेक्षाकृत कम होती है जो कि SiO_2, TiO_2, MgO_2, और CaO_2 है सकती है। एरिनपुरा ग्रेनाइट सबसे प्राचीन ग्रेनाइट मे आता है

02. एरिनपुरा छावनी कि स्थापना नामकरण एवम ऐतिहासिक महत्व के साक्ष्य-

इस स्थान कि भौगोलिक स्थति और सामरिक महत्त्व और स्थानीय आदिवासी मीणा व अन्य विद्रोहियों के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए सन-1836 मे ब्रिटिश शासनकाल में इस स्थान पर सेना कि एक कोर स्थापित कि गयी जिसका नाम जोधपुर लिजन रखा गया जिसके कमांडेंट कैप्टन डाउनिंग थे जिसे जोधपुर लीजन के तत्कालीन कमांडेंट कैप्टन डाउनिंग के जन्म स्थल एरिन द्वीप जो कि युरोप मे स्थित है के नाम पर सन-1842 में एरिनपुरा छावणी की स्थापना की गई|

***सन्दर्भ: Imperial Gajetiar of India (1908-1931) खंड-02,पेज-27* के अनुसार**-

एरिनपुरा रेजिमेंट कि उत्पत्ति जोधपुर सेना की मीणा और भील जनजाति की तीन पैदल सेना कंपनियों में हुई, जो 1857 में सेना के विद्रोह के समय अंग्रेजों के प्रति वफादार रहीं। (भील कंपनियों की स्थापना 1841 में हुई थी।) 43वीं **एरिनपुरा रेजिमेंट** ब्रिटिश भारतीय सेना की एक रेजिमेंट थी ।

इन सैनिक कंपनियों को सन-1860 में लेफ्टिनेंट-कर्नल जे.एफ.डब्ल्यू. हॉल द्वारा एरिनपुरा अनियमित बल के रूप में शामिल किया गया था। यह बल घुड़सवार सेना के एक दस्ते से बना था, जिसमें सभी रैंकों के 164 सदस्य और पैदल सेना की आठ कंपनियां शामिल थीं, जिनकी संख्या 719 थी। अंग्रेजों ने स्थानीय जनजातियों के प्रभाव को कम करने और उन्हें रोजगार प्रदान कर मुख्यधारा मे लाने के लिए पैदल सेना में ज्यादातर मीणाओ और भील जन-जाति के लोगो को शामिल किया, क्योकि जैसा कि पूर्व मे जिक्र किया गया है

इस क्षेत्र मे मीणाओ का प्रभाव बहुत ज्यादा था तथा इन लोगो के प्रभाव के कारण रियासती सेना के कार्यो और ब्रिटिश सेना के कार्यो करने मे बहुत ही ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ता था क्योकि रियासती सेनाये और ब्रिटिश अपने आपसी सहयोग संधियों के कारण एक दुसरे कि सहयोगी हो गयी थी परन्तु ये मीणा और भील जनजाति के लोग अपनी वीरता और नीडरता के कारण हमेशा इनसे लौहा लेती रहती थी और इनकि परेशानी का सबब बनी रहती थी क्योकि मीणा और अन्य जन जातीयां हमेशा से ही सामंतवाद और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध मजबूती से खड़ी हुई, ये जन- जातियां हमेशा से ही अंग्रेजो को देश से बाहर खदेड़ने के पक्ष मे

रही थी इसी कारण से ये मीणा और भील जन जातियो ने हमेशा से ही ब्रिटिश और रियासती फौजों के नाक मे दम कर के रखा था इस कारण सामंती व्यवस्था के स्त्रोत राजपुताने की देसी

फोटो:04 (आधुनिक हथियारों के प्रशिक्षण के दौरान भारतीय टुकड़ी)

रियासतों ने हमेशा ही मीणा जनजाति को अपना शत्रु समझा और इनका विरोध किया क्योंकि आज जिस क्षेत्र में राजपूत अपना अधिपत्य और प्रभाव जमाये बैठे है

उस भूमि पर कभी मीनाओ का सुदृढ़ साम्राज्य रहा था जो जनपद काल में समृद्ध था और कालांतर में राजपूतों से पराजित हो कर ये साम्राज्य छोटी-छोटी रियासतों और फिर मेवासो में

विखंडित हो गया मीनाओ को सत्ता छोड़ अरावली के पहाड़ों में शरण लेनी पड़ी परन्तु अपने आत्मसम्मान ,मातृभूमि और प्रकृति के लिए सदियों से लड़ते रहे, समय का चक्र चला और समय आया ब्रिटिश शासन का यहा तक आते-आते राजपुताने की अधिकतर रियासतें ब्रिटिश

फोटो:05 *(गोडवाड क्षेत्र आदिवासी पदीया मीणा रॉबिनहुड विद्रोही)*

सरकार के आगे नतमस्तक हो चुकी थी जिसमें कई ऐसी रियासतें थी जो अंग्रेजों के सामने झुकी नहीं और अपने आत्मसम्मान और मातृभूमि की आन-बान के लिए लड़तीं रही तथा आदिवासी मीणा और भील जनजाति के कार्यों को सम्मान की दृष्टी से देखती रही।

परन्तु जो रियासतें अपने स्वार्थ के कारण अंग्रेजों के प्रेमपाश में जकड़ी जा चुकी थी वहां के शासकों ने अपने विलासिता, ऐशो आराम और अंग्रेजी सरकार में सम्मान व बड़े पदों को पाने की लालसा में अपने राज्य और वहां की जनता की गरिमा को अंग्रेजों के कदमो में रख दिया उन रियासतों और अंग्रेज गठबंधन ने इन जन-जातियो के विद्रोह को बदनाम करने का काम किया मीणा जनजाति का प्रत्येक विद्रोही बागी सरदार अपने आप में रॉबिनहुड था इन क्रांतिकारी सरदारों का दमनकारी व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह का अपना तरीका था ये दमनकारी निरंकुश और सूदखोर सेठों और धनाढ्यों को लूट कर लूटे हुए धन में से एक छोटा सा हिस्सा अपने और अपने परिवार के कुछ दिन खाने और पेट पालने के लिए रख लेते थे बाकी का बचा सारा धन ,अनाज गरीबों, ज़रूरतमंदो और सताए हुए लोगों में बाट देते थे इन्होंने अपने लिए कभी भी धन इकट्ठा नहीं किया अगर करते तो अपने लिये महल बना लेते ऐसे क्रन्तिकारी और मातृभूमि के लिए लड़ने वाले समुदाय को बदनाम कर उनके बारे मे दुष्प्रचार किया गया और इन्हें अपराधी जाती घोषित करवा दिया और अंग्रेजों से मिलकर इन पर अमानवीय अपराधिक जरायम पेशा कानून थोप दिया गया इतिहास गवाह है कि आदिवासियों ने कभी किसी को नही सताया बल्कि सताए हुए लोगो के मसीहा बने परन्तु सत्ता प्रेमी रियासतों और ब्रिटिश गठजोड़ ने इन्हें सदियों पीछे धकेल दिया अब इनका अपने परिवार का पेट पलना भी दुश्वार हो गया था क्योकि इनके सर पर अपराधी और चोर डाकू का ठप्पा लग गया था इस कारण इन्हें मजदूरी पर भी कोई रखने के लिए तैयार नही होता था जब अपनी आँखों के सामने अपने बच्चो और परिवार को भूख से मरता देखा तो अपने परिवार का पेट पालने के लिए कुछ तो करना ही था तो इन मीणा और भील आदि जन जातियों ने अपने

युद्ध कौशल और अपने ऊपर लगे धब्बे को ही अपना हथियार बना लिया और अपनी क्रांति, विद्रोह और दबे कुचलो के लिए सहायता, सहयोग, और अपने परिवार का पेट पालने का जरिया बना लिया जो सैकड़ो वर्षो तक चलता रहा इन्हें सदियों से शिक्षा और संपत्ति के अधिकार से वंचित रखा गया, कुल मिला के बात का सारांश ये है कि इन मीणा, भील और अन्य जन जातियों ने आजादी ,आत्मरक्षा, आत्मसम्मान और प्रतिशोध कि लड़ाई को ही अपना पारम्परिक पेशा बना लिया जिससे दमनकारी ब्रिटिश सरकार और रियासती कारिंदे असहज हो गये फिर अंग्रेज और रियासतों गठजोड़ के द्वारा एक सोची समझी रणनीति के तहत इन जन जातियों को रोजगार, सम्मान और मुख्यधारा से जोड़ने के नाम पर एक रणनीतिक योजना बनायीं गयी जिससे कि इनकी शक्तियों को अपने पक्ष मे उपयोग लिया जा सके क्योकि सदियों से ही मीणा और भील जनजातियाँ अपनी वीरता, ईमानदारी, त्याग और संघर्ष के लिए प्रसिद्द रही है क्योकि अगर ये लोग अगर किसी काम को दिल से करने लग जाये तो उस काम को करने मे अपनी जान लगा देते है इस कारण इन्हें सेना मे भर्ती किया जाने लगा और इन्हें आधुनिक हथियार चलाने और सैनिक प्रोटोकॉल कि ट्रेनिंग दे कर सेना मे शामिल किया जाने लगा जिससे इनकी पारम्परिक युद्ध कौशल और आधुनिक युद्ध तकनीक के साझा उपयोग से अजेय युद्ध कौशल निर्मित कर अपने अपनी स्थति को मजबूत किया जा सके और इनके विद्रोह को दबाया जा सके| सन-1870 के अंत से सन-1881 तक कमान्डेंट सिरोही जिले कि राजनितिक प्रभारी द्वारा इन आदिवासी मीणा सैनिको का उपयोग इनके ही समुदाय के क्रन्तिकारी और विद्रोही सरदारों के खिलाफ किया जाने लगा और इन्ही से ही इनके प्रभाव क्षेत्र मे गश्ती करने और स्थानीय मीणाओ का आदिवासी विद्रोहीयो को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस कि सहायता के लिए उपयोग किया जाने लगा, ये तरीका बिटिश सरकार के **फुट डालो राज करो** रणनीति का जीता जगता साबुत था इसके कुछ सालो बाद सन-1895 मे इनके स्क्वाड्रन ताकत को घटा कर कमजोर किया गया, जिससे कि ये फिर दुबारा कभी-

1857 की तरह विद्रोह ना कर पाये और इसी निति तहत स्क्वाड्रन कि सभी रैंको कि संख्या 164 से घटा कर 100 कर दि गयी तथा 1897 मे बल को भारत कि ब्रिटिश सरकार के विदेश विभाग के अधीन रखा जो कि कमांडर इन चीफ के अधीन था तथा 1903 मे इस बल का नाम बदल कर 43वि एरिनपुरा रेजिमेंट कर दिया गया इस समय तक स्क्वाड्रन मे मुख्यतया पंजाब के सिख, मुसलमान और राजपूत शामिल हो गये थे जबकि पैदल सेना मुख्य रूप से मीणा व कुछ भील सैनिक शामिल किये गए थे पैदल सेना कि चार डबल कम्पनियों से ये रेजिमेंट बनी थी तथा 1860 से 1921 तक के समय काल मे राजपूताने का एरिनपूरा रेजिमेंटल सैनिक डिपो था प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 43 वि एरिनपूरा रेजिमेंट 5वि महु डिविजन का के हिस्से के रूप मे अपनी सेवाए दी थी तथा प्रथम विश्व युद्ध मे इस रेजिमेंट ने मेसोपोटामिया अभियान के दौरान 15वि भारतीय डिविजन मे अपनी सेवाए दी एरिनपूरा रेजिमेंट कि पहली नियमित बटालियन को प्रथम युद्ध काल मे एस्कॉर्ट ड्यूटी और संचार लाइनों कि रखवाली के लिए तैनात किया गया हालाँकि सितम्बर, 1917 मे ये दूसरी लड़ाई मे मौजूद थी, सन-1917 मे एक दूसरी बटालियन का गठन किया गया और ऐसा माना जाता है की युद्ध कालीन इकाई के रूप मे अनुभवी सैनिको कि कमी के कारण या शायद इसकी 1857 के विद्रोह मे भाग लेने के कारण इसे मुख्य रूप से बॉम्बे मे गार्ड और अन्य सुरक्षा उद्देश्यों के लिये नियोजित किया गया तथा सन-1920 मे इसे भंग होने से पहले प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय (ब्रिटिश) सरकार ने सेना मे सुधार के नाम पर एक बटालियन पैदल सेना कि इकाइओ मे बहु- बटालियन रेजीमेंटो मे स्थानान्तरित कर दिया गया तथा इस पुनर्गठन मे नौ पैदल सेना कि रेजीमेंटो को भंग कर दिया गया तथा इन नो पैदल रेजिमेंटो मे 43 वि एरिनपुरा रेजिमेंट भी शामिल थी जिसे अक्टूबर, 1921 को भंग कर दिया गया।

इन्हें भंग करने का आधार ये बनाया गया कि अब इनकी उपयोगिता नहीं रही परन्तु इन बटालियनो और रेजीमेंटो के इतिहास पर नज़र डालते है तो पाते है कि इन रेजीमेंटो और

बटालियनो ने सन 1857 के विद्रोह मे भाग लिया था जिस कारण अंग्रेजो के द्वारा द्वेष भावना के तहत इन्हें समाप्त कर दिया गया |

सन्दर्भ-

इम्पीरियल गजेटीयर ऑफ़ इंडिया(1908 - 1913), खंड- 12 प्रष्ठ सं.-27

ब्रिटिश साम्राज्य, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, उपनिवेश, सुमनेर, प्रष्ठ सं.-15

श्रोत-

Barthor P, Michael Burn, Jeffrey (1979)

Indian Infantry Regiments- (1860 - 1914)

Osprey Publication

ISBN-0-85045-307-0

Sumner Ian (2001) The Indian Army (1914-1917),Osprey Publication

ISBN-1-84-176-196-6

Researchingww1.uk website के अनुसार भारतीय सेना मे निम्नलिखित रेंक होती थी जिनमे विशेषकर बड़े पदों पर प्राय: अंग्रेज अधिकारी ही होता था और निचे के पदों पर प्राय भरतीय होते थे जो वरिस्ठता के अनुसार पदोन्नति से इन पदों पर पहुचते थे

इंडियन इन्फेंट्री	इंडियन कैवेलरी	ब्रिटिश इन्फेंट्री
Sepoy	Sower	Private
Lance-Naik	Acting Lance Daffadar	Lance Corporal
Naik	Lance Daffadar	Corporal
Havildar	Daffadar	Sargent
Havildar Major	Kot Daffadar	Sargent Major
Jamadar	Jamadar	Lieutenant
Subedar	Risaldar	Caption
Subedar Major	Risaldar Major	Major

Photo-06 (soldiers-43rd-erinpura regiment, **Photo-07** (Meena Sepoy (WW-1)
44th merwara infantry and 108thinfantry)

03 एरीनपुरा मे आदिवासी मीणा सेनिक भर्ती प्रक्रिया व इस क्षेत्र के मीनाओ का संक्षिप्त इतिहास

सन 1836 मे सेना कि एक कोर जोधपुर लिजन कि स्थापना कि गयी जिसका नाम तत्कालीन कमान्डेंट कैप्टन डाउनिंग के जन्म स्थल यूरोप के एक टापू एरिन के नाम पर एरिनपुरा रखा गया, जिसमे स्थानीय आदिवासी मीणा और कुछ भील सैनिको को भी भर्ती किया गया जिनमे पैदल सेना कि आठ टुकडिया थी तथा 1841 मे इसमें मीणा और भील सैनिको कि तीन कम्पनिया और जोड़ी गयी बाद वाली भील कम्पनी को छोड़ कर बाकि कि पूरी कोर ने 1857 के विद्रोह मे हिस्सा लिया इसके तुरंत बाद में जे. अफ. डब्लू. हॉल ने एरिनपूरा अनियमित बल का गठन किया गया जिसमे मुख्य रूप से मीणा सैनिक शामिल किये गये|

एरिनपूरा छावनी कि स्थापना के बाद सन-1842 मे अंग्रेज प्रशासन व मारवाड़ (जोधपुर) रियासत व सिरोही रियासत के सामने एक बहुत बड़ा खतरा अभी भी बाकि था और वो था आसपास के क्षेत्र गोडवाड, मारवाड़ व सिरोही के आसपास अरावली कि तलहटी मे बसे मीणा समुदाय का जिसका सदियों से इस क्षेत्र पर प्रभाव रहा है और यह माना जाता रहा है कि सदियो पहले अर्योत्तर काल राजपूत उदय से पहले इस क्षेत्र पर मीणाओ का शासन था जो राजपूतो के आगमन के बाद परास्त होकर अरावली कि पहाडियों कि और चले गये और इसे ही अपना अभेद किला बना लिया अरावली कि पहाडियों मे मीणाओ और अन्य आदिवासी समुदायों से लड़ना और जीतना किसी के बस मे नहीं था

संदर्भ-

राजस्थान सरकार के पोर्टल, राजस्थान सरकार

लेख व पुस्तक- अनाल्स ऑफ़ एक्टिविटी ऑफ़ राजस्थान - जेम्स टॉड

रहस्थान का इतिहास - गोपीनाथ शर्मा

The tribes are costs of the central provinces of india- R.V. Russell (1916).

History of Rajasthan - Rima Hooja – 2006 के अनुसार-

गोडवाड क्षेत्र मे मीणा समुदाय के लोग यहाँ के मूल निवासी है तथा राजपूतो के आगमन व उदय से पहले इस सम्पूर्ण क्षेत्र पर गोंड गोत्रीय मीणाओ का स्वतंत्र साम्राज्य था इस क्षेत्र के मीणा सरदारों का दिल्ली सल्तनत (सन-1206 -1526) के शासको ,विशेषकर गयासुद्दीन बलबन (सन-1266 - 1287)के साथ संघर्ष उल्लेखनीय है, बलबन शासन काल मे '**लहू और लौह** ' निति के तहत मीणा समुदाय का व्यापक संघर्ष हुआ, जिसमे बड़े पैमाने पर नरसंहार कि घटनाये हुई

गोडवाड क्षेत्र मे भी मीणा सरदारों का दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध प्रतिरोध व संघर्ष था जिसके फलस्वरूप मीणाओ और केंद्रीय सत्ता के बिच तनाव बढा और मीणा समय के साथ कमजोर होते चले गए परन्तु गोडवाड के मीणाओ ने अपना संघर्ष जारी रखा तत्पश्चात जब राजपूत रियासतों का उदय हुआ तो अपने क्षेत्र मे प्रभाव बनाये रखने के लिए राजपूत रियासतों से भी काफी संघर्ष किया, तत्पश्चात जब ब्रिटिश भारत आये राजपूताने कि कई राजपुत रियासतों ने उनके साथ अनगिनत सुरक्षा संधियाँ कर ली जिससे ब्रिटिश कम्पनी सरकार को इस क्षेत्र मे अपने पैर ज़माने मे मदद मिली परन्तु ब्रिटिशर्स को भी मीणाओ के प्रतिरोध का सामना करना

पड़ा मीणाओ के दीर्घकालीन संघर्ष पर अगर नज़र डाले तो हम ये सहज ही अंदाजा लगा सकते है कि इस क्षेत्र मे प्राचीन काल से मीणाओ ने हमेशा से ही बाहरी अक्रान्ताओ से डटकर मुकाबला किया है जिसमे इस समुदाय ने अपनी सत्ता से लेकर सम्मान व जीवन को अपने क्षेत्र कि स्वतंत्रता के लिए हमेशा ही दांव पर लगाया जिसमे इन्होने अपना सर्वस्व खो दिया इसके बावजूद भी यह मीणा समुदाय अपनी स्वतंत्रता, सम्मान और क्षेत्र के लिए संघर्ष करता रहा, इतने प्रभावशाली समुदाय जिसने एरिनपुरा छावनी की स्थापना के समय भी अपने संघर्ष को जारी रखा हालांकि समय बीतने के साथ-साथ मीणा समुदाय की भी शक्ति क्षीण हो चली थी लेकिन मीणा समुदाय अब भी ब्रिटिश और रियासती गठजोड़ की मजबूती की राह पर बहुत बड़ा रोडा था इस प्रकृति प्रेमी, मातृभूमि प्रेमी और कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अडिग रहने वाले समुदाय के व्यक्ति को एक समय का खाना नहीं मिले तो भी अपने ईमान से टस से मस नहीं होना ही इस समुदाय की असली ताकत थी।

समय बीतने के साथ संघर्ष ने अपना स्वरूप बदला और यह धाड़ो में परिवर्तित हो गया ***(धाडा – किसी धनी व्यक्ति से अनाज,धन, रुपया पैसा आदि लूट कर अपने परिवार के गुजारे जितना धन या अनाज अपने पास रख कर बाकी का धन गरीबों या शोषितों में बाट देना)*** ये काम सामने वाले व्यक्ति को चुनौती देकर किया जाता था जिसमें उस व्यक्ति के परिवार, बीवी- बच्चों को कोई नुकसान न हो इस नियम का सख्ती से पालन होता था साथ ही ***धड़ेतियों का एक ओर नियम था जिसका पालन करना अनिवार्य था चाहे पकड़े ही क्यों न जाए या जान ही क्यों न चली जाए और वो था किसी भी बहन,बेटी को बुरी नजर से कभी नही देखना चाहे वो दुश्मन के परिवार की सदस्य ही क्यों न हो।***

मीणा समुदाय शिव को अपना इष्ट देव मानता है और क्षेत्र में सिरोही जिले में सुकड़ी नदी के किनारे पर चोटिला गांव के पास गोमगुआ जी धाम है जहा वार्षिक मेला लगता है जिन्हें इस क्षेत्र के मीना/मीणा समुदाय के लोग भूरिया बाबा भी कहते है और इन्हें गौतम बाबा के नाम से

भी जाना जाता है परन्तु कालांतर में नाम में अपभ्रंष और सामान कथा/ कहानी के कारण इन्हें गौतम ऋषि धाम भी कहा जाने लगा है वास्तवीकता में यह घोमगुआ जी (मीणा) की तपोस्थली है जहाँ पर गाये चराते हुए गोमगुआ जी ने शिवजी की भक्ति और तपस्या की थी और उन्हें प्रसन्न किया था और उनसे गंगा अवतरण और मेले का वरदान माँगा था जिस कारण यहाँ लगने वाले वार्षिक मेले को गोमगुआ का मेला कहा जाता है यह स्थान मीना समुदाय का पूजनीय स्थान है जो मारवाड़ गोड़वाड़ मीणा समुदाय का आस्था का केंद्र है , गोडवाड और मारवाड़ क्षेत्र के मीना समुदाय के लोग गौतम बाबा की कसम खा कर कभी कोई गलत काम नहीं करते और न ही झूठ बोलते है । ये धाड़ेती होने की वजह से कई आर्थिक और सत्ता के नजरिए से मजबूत व्यक्तियों और व्यक्तियों के समूहों की आंखों में हमेशा खटकते रहे परन्तु शोषित व सताए हुए लोगों और समुदायों के लिए हमेशा मसीहा बने रहे साथ ही देश आ अपने क्षेत्र की गरिमा व स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते रहे। एरिनपुरा छावनी की स्थापना ही इन मीणा लोगों के बाहुल्य और प्रभाव कारण की गई थी मीणाओ के कारनामो की आज भी कई जनश्रुतियां प्रचलित है तथा इस बारे में ब्रिटिश लाइब्रेरी, कतर लाइब्रेरी और कई अनगिनत विदेशी वेबसाइटों, किताबों और स्थानीय रियासतों के ऐतिहासिक दस्तावेजों व इतिहास में वर्णित है जिनका संदर्भ पुस्तक अंत में दे दिया गया है।

मीणा सैनिकों की संभावित भर्ती प्रक्रिया का स्वरूप-

- **स्थानीय स्तर पर भर्ती :** ब्रिटिश सेना ने स्थानीय जनजातियों को भर्ती करने के लिए उनके क्षेत्र के प्रभावशाली व्यक्तियों, उनके समुदाय के सरदारों, जमींदारों , मुखियाओं और पंच पटेलों के माध्यम से संपर्क स्थापित किया, क्योंकि मीणा और भील जनजाति अपनी शारीरिक दक्षता, जंगल युद्ध कौशल (गोरिल्ला युद्ध पद्धति) ब स्थानीय भूगोल की जानकारी रखते थे जो के सैन्य अभियानों के लिए उपयोगी थे।

- एरिनपुरा जो कि आदिवासी बहुल क्षेत्रों (अरावली की पहाड़ियों) के नजदीक थे अतः यह माना जा सकता है कि इन समुदायों का बहादुर और निडर होने के कारण आसपास के क्षेत्र, गावो,ढाणियों में से के गई थी।
- शारीरिक क्षमता और कौशल परिक्षण : सेना मे भर्ती के दौरान शारीरिक फिटनेस और हथियार चलाने की क्षमता की जांच की जाती थी।
- प्रशिक्षण और अनुशासन : स्वछन्द विचरण करने वाले आदिवासी समुदाय को अनुशासित करना
- प्रलोभन और मजबूरी : इन्हें रोज शाम को वेतन देना पड़ता था जिससे इनमे विश्वास बना रहे
- रोजगार और बेहतर जीवन शैली : समाज की मुख्यधारा से जोड़ना और दुसरे लोगो से मेलजोल बढ़ाना

सारांश मे अगर कहा जाये तो एरिनपूरा छावनी मे आदिवासी मीणा सैनिको कि भर्ती प्रक्रिया औपचारिक भर्ती अभियानों , शारीरिक परीक्षणों, और स्थानीय सरदारों और मुखयाओ व रियासतों के सहयोग पर आधारित थी यहाँ भर्ती प्रक्रिया ब्रिटिश सरकार और स्थानीय रियासतों कि साझा रणनीति का हिस्सा थी जिसके तहत स्थानीय आदिवासी मीणा और भील समुदायों कि शक्ति अपने फायदे के लिए स्तेमाल करना और स्थानीय संसाधनों पर नियंत्रण करना था इन्हें सेना मे भर्ती कर इनके विद्रोह को दबाने और इनकि विशिष्ट युद्ध कला को अपने फायदे के लिए इस्तेमार करना जिससे कि ***" सांप भी मर जाये और लाठी भी नही टूटे"*** वाले सिधांत के तहत इन समुदायों को बेहतर जीवन और रोजगार का प्रलोभन देने कि कोशिश कि गयी जो कि सफल होती भी दिखी परन्तु समय के साथ इन स्थानीय समुदायों के दिल मे से अपनी मात् भूमि और देश के प्रति प्रेम को पूरी तरीके से नहीं मिटा सके जो कि

समय के साथ सन 1857 मे क्रांति के रूप एक ज्वालामुखी कि तरह फूटा और क्रांति का उदय हुआ

सन्दर्भ-

Imperial Gazetteer of India, (1908–1931), v. 12, p. 27, *British Indian Army infantry regiment, और अन्य स्थानीय रियासती और ब्रिटिश अभिलेखागार और ब्रिटिश सैन्य रिकॉर्ड मे संदर्भित है*

यह रेजिमेंट 1903 में एरिनपुरा अनियमित बल के रूप में शुरू हुई थी और 1914 में प्रथम विश्व युद्ध शुरू होने पर 15वीं भारतीय डिवीजन के हिस्से के रूप में कार्यरत थी,43वीं एरिनपुरा रेजिमेंट ने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मेसोपोटामिया अभियान में भाग लिया था, विशेष रूप से रामादा की दूसरी लड़ाई में अपना विशेष योगदान दिया

इस दौरान चार डबल कंपनिया (800 से 900) सैनिको कि एक नियमित बटालियन थी जिनमे से एक मेसोपोटामिया और दूसरी मे आधुनिक हथियारो के मामले मे अपेक्षाकृत कम अनुभवी सैनिक थे , एरिनपूरा रेजिमेंट कि सुरुआत एरिनपुरा अनियमित बल से हुई थी जिसमे 719 पैदल सैनिक(8 कम्पनिया), 164 घुडसवार(एक स्काड्रन) कुल संख्या 883थी

अधिकतर मीणा और भील सैनिको के साथ ही सिख घुड़सवार भी शामिल थे, सन-1903 मे इसका पुनर्गठन हुआ जिसके बाद इस रेजिमेंट का नाम ''**43 वि एरिनपुरा रेजिमेंट**'' रखा गया, प्रथम विश्व युद्ध के समय सन 1914 मे चार डबल कम्पनियां (800 से 1000) सैनिको कि नियमित बटालियन थी जिसमे एक एक मेसोपोटामिया अभियान मे शामिल थी जो आधुनिक

हथियारों के मामले मे ज्यादा अनुभवी थी तथा दूसरी बटालियन सन-1917 मे जो युद्धकालीन इकाई थी जिसमे पारम्परिक हथियारों के मामले मे तो अनुभवी परन्तु आधुनिक हथियारों के मामले मे कम अनुभवी थी जिसे स्थानीय सुरक्षा मे नियुक्त किया गया था।

फोटो-08: (*1915 की इस दुर्लभ तस्वीर में बॉम्बे पैदल सेना की पहली रेजीमेंट के जवान सिगनल तैयार करते हुए दिखते हैं.*)

04.एरिनपुरा छावनी मे सैन्य बल और उनकी रैंक

एरिनपुरा छावनी एक मध्यम आकार कि सैन्य टुकड़ी थी, इसका मुख्य उद्देश्य स्थनीय शांति बनाये रखना और क्षेत्र मे प्रभावशाली आदिवासी मीणा और भील समुदाय नियंत्रण मे रख कर उनकी शक्ति को अपने लिए स्तेमाल करना तथा इन समुदायों से सैनिको को भर्ती कर उन्हें प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आधुनिक युद्ध के लिए तैयार करना मुख्या उद्देश्य था

सन्दर्भ-

Book: Book- Penal Power and Colonial Rule*, by-Mark Brown-2014, page-02,80,81,138.* ***Published by-****Taylor & Francis.*

आम तौर पर ऐसी छावनियो मे सैनिको कि संख्या सामान्यतः 500 से 1500 होती थी, जो समय और परिस्थिति के अनुसार बदली जा सकती थी एरिनपुरा छावनी मे ये संख्या संभवतः लगभग 800-1000 लगभग थी ये रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण और बड़ी छावनी थी

यहाँ पर भर्ती सैनिको मे मुख्यतया स्थानीय आदिवासी मीणा और कुछ भील सैनिक थे और इनके आलावा राजपूत , कायमखानी मुस्लिम, मेव, और ब्रिटिश सेना के यूरोपियन सैनिक भी शामिल थे आम तौर पर यूरोपियन सैनिक बड़े पदों पर होते थे कुछ राजपूत सैनिक जो स्थानीय रियासतों के राजपरिवार से समबन्ध रखते थे वो भी कुछ उच्च पदों पर पदस्थ होते थे

रैंक व संरचना-

जोधपुर लीजन

जोधपुर लीजन में सैनिक पदों की कोई विशेष सूचि उपलब्ध नही हो पाई, लेकिन स्थानीय समकालिक रियासती सेना और ब्रिटिश सेना कि सैनिक संरचना को आधार मान कर यह अंदाजा लगाया जा सकता हैं, कि 1835 में स्थापित इस सेना में विभिन्न रैंक के सैनिक शामिल रहे हो सकते है। जोधपुर लीजन, जिसे बाद में एरिनपुरा रेजिमेंट के रूप में जाना गया, में भारतीय सैनिक और ब्रिटिश अधिकारी दोनों थे।

जोधपुर लीजन में शामिल बल के संभावित पद और रेंक :

- **जोधपुर लीजन**

सैनिक/सिपाही : यह सबसे निचला पद था, जिसमें आम सैनिक शामिल थे,

हवलदार: यह एक मध्य-स्तरीय पद था, जो कुछ सैनिकों की देखरेख करता था।

सूबेदार: यह एक उच्च-स्तरीय पद था, जो कुछ सैनिकों और हवलदारों की देखरेख करता था।

कर्नल/मेजर: ये ब्रिटिश अधिकारी थे जो लीजन की कमान संभालते थे।

अन्य अधिकारी:

लीजन में अन्य ब्रिटिश अधिकारी भी शामिल थे, जैसे कि

लेफ्टिनेंट और कैप्टन।

- **एरिनपुरा अनियमित बल**
- **43वी एरिनपुरा रेजिमेंट**

43वी एरिनपुरा रेजिमेंट मे सैनिको कि रेंक संरचना भारतीय सेना के पैदल सेना मानको के अनुसार थीं जो निम्न प्रकार है

सिपाही- यहाँ सबसे निचली रेंक थी जिसमे आम भारतीय सैनिक होते थे जो कम पढ़े लिखे या अनपढ़ होते थे ये ज्यादातर स्थानीय जनजातियो से सम्बन्ध रखने वाले लोग होते थे

लांच नायक- ब्रिटिश भारतीय सेना में, लांस नायक (जिसे लांस कॉर्पोरल के समकक्ष भी कहा जाता था) एक गैर-कमीशन अधिकारी (NCO) रैंक था जो सिपाही से ऊपर और नायक से नीचे होता था। घुड़सवार सेना में, समकक्ष रैंक लांस दफादार था। यह रैंक सैनिकों को अपनी टीम के भीतर छोटी इकाइयों या टीमों का नेतृत्व करने और सहायता करने के लिए जिम्मेदारियाँ सौंपती थी।

नायक- ब्रिटिश भारतीय सेना में, नायक रैंक ब्रिटिश कॉर्पोरल के बराबर था और लांस नायक और हवलदार के बीच एक जूनियर गैर-कमीशन अधिकारी (NCO) पद था। घुड़सवार सेना की इकाइयों में, इसका समकक्ष रैंक लांस दफादार था। एक नायक दो रैंक शेवरॉन पहनता था, जो उसके पद को दर्शाता था।

हवलदार- ब्रिटिश भारतीय सेना में हवलदार एक गैर-कमीशन अधिकारी (NCO) रैंक था, जो भारतीय और पाकिस्तानी सेनाओं में सार्जेंट के समकक्ष था। यह रैंक पैदल सेना में उपयोग होता था; घुड़सवार और बख्तरबंद इकाइयों में इसका समकक्ष दफादार था। हवलदार रैंक वाले सिपाही आमतौर पर अपने बैज पर तीन रैंक शेवरॉन (शेवरॉन) पहनते थे।

जमादार- ब्रिटिश भारतीय सेना में, जमादार एक निचले दर्जे का अधिकारी (officer) था। यह वायसराय के कमीशन प्राप्त अधिकारियों के लिए सबसे निचला पद था और जमादार प्लाटून का नेतृत्व करते थे या अपने ब्रिटिश कमांडर की सहायता करते थे।

सूबेदार- ब्रिटिश भारतीय सेना में सूबेदार रैंक वायसराय के कमीशन प्राप्त अधिकारी (VCO) के अंतर्गत आता था, जो एक ब्रिटिश कप्तान के बराबर होता था। यह रैंक ब्रिटिश कमीशन प्राप्त अधिकारियों और गैर-कमीशन प्राप्त अधिकारियों के बीच की कड़ी थी। सूबेदार को देशी सैनिकों के साथ संवाद स्थापित करने में मदद के लिए शुरू किया गया था, जिसके लिए अंग्रेजी में धाराप्रवाह होना आवश्यक था।

सूबेदार मेजर– ब्रिटिश भारतीय सेना में सिपाही सबसे निचली रैंक होती थी इससे लेकर हवालदार और नायक जैसे पद शामिल थे घुड़सवार सेना में इनके समकक्ष दफादार और सवार जैसे पद होते थे

ब्रिटिश अधिकारी

लेफ्टिनेंट- ब्रिटिश भारतीय सेना में, लेफ्टिनेंट एक जूनियर अधिकारी रैंक थी जो सेकंड लेफ्टिनेंट से ऊपर और कैप्टन से नीचे थी। इस रैंक के अधिकारी आमतौर पर लगभग 30 सैनिकों की टुकड़ी या प्लाटून की कमान संभालते थे।

कप्तान- ब्रिटिश भारतीय सेना में, कप्तान रैंक एक जूनियर अधिकारी की रैंक थी, जो लेफ्टिनेंट से ऊपर और मेजर से नीचे होती थी। यह ब्रिटिश सेना में एक सामान्य अधिकारी पद था जो भारतीय सेना के अधिकारियों के लिए एक समकक्ष पद के रूप में कार्य करता था। भारतीय अधिकारी जो "किंग कमीशन" प्राप्त करते थे, वे ब्रिटिश सेना के समकक्ष होते थे, जबकि "वाइसराय का कमीशन प्राप्त अधिकारी" (जैसे सूबेदार या रिसालदार) के पद ब्रिटिश अधिकारी के रैंक के बराबर होते थे, लेकिन उन्हें "सूबेदार-मेजर (मानद कप्तान)" जैसी उपाधियाँ भी मिलती थीं।

मेजर- ब्रिटिश भारतीय सेना में, मेजर रैंक फील्ड ऑफिसरों के समूह के अंतर्गत आता था, जो लेफ्टिनेंट कर्नल से नीचे और कैप्टन से ऊपर का पद होता था। यह पद लेफ्टिनेंट कर्नल के बाद बटालियन में दूसरा सबसे वरिष्ठ पद होता था और मेजर आमतौर पर एक कंपनी, स्क्वाड्रन या बैटरी (लगभग 150-200 सैनिकों) की कमान संभालता था।

05.एरिनपुरा छावनी में सैनिक विद्रोह और आउवा का संघर्ष (चलो दिल्ली मरो फिरंगी) नारे की गूंज

सन-1857 का विद्रोह भारत के स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम संघठित प्रयास था जो केवल एक सैनिक विद्रोह ही नहीं बल्कि आम जन के मन में पनप रहा असंतोष भी था, इस क्रांति में आम जनता ने भी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई थी एरिनपूरा छावनी में फूटी सैनिक विद्रोह की चिंगारी ही स्वतंत्रा संग्राम की ज्वाला की पहली चिंगारी मानी जाती है, जिसने ब्रिटिश शासन के पैर उखाड़ फेंकने में मुख्य भुमिका निभाई जैसा की पूर्व के अध्यायों में वर्णित है की सन-1818 की मारवाड(जोधपुर) रियासत और ब्रिटिश सरकार के मध्य एक अग्रीमेंट हुआ जिसके तहत मारवाड़ (जोधपुर) के राजा मान सिंह ब्रिटिश सरकार को आवश्यकता अनुसार 1500 घुड़सवार सैनिको की टुकड़ी ब्रिटिश सरकार को उपलब्ध करवाएंगे परन्तु इस शर्त को राजा मान सिंह ने मानने से इंकार कर दिया और अग्रीमेंट तोड़ दिया फिर इसके 17 वर्ष पश्चात 7 दिसंबर,1835 को मारवाड़ (जोधपुर) के राजा मान सिंह ने इस शर्त को मान लिया तथा सन-1832 में भेजी गयी सैनिक टुकड़ी अप्रभावी सिद्ध हुई जिस कारण सन-1835 में इस सैन्य सहयोग को समाप्त कर उसके स्थान पर नए सैनिक भर्ती करने के लिए राजा मान सिंह द्वारा 1 लाख 15000 रुपये का वार्षिक बजट जारी किया गया जिससे की एक स्थायी बल बनाये रखा जा सके इस योजना के तहत नए सैनिको की भर्ती की गयी और तब सिरोही के तत्कालीन महाराव शिवसिंह से सैनिक छावनी स्थापित करने के लिए जगह (जमिन) की मांग की गयी तथा महाराव शिवसिंह द्वारा इस मांग को मान लिया गया संभवतया सिरोही के भी कुछ हित रहे हो क्योकि सिरोही की सीमा जोधपुर(मारवाड़) से लगती थी और इस सीमावर्ती क्षेत्र और आसपास के अरावली क्षेत्र में मीणाओ का प्रभाव चरम पर था जो अंग्रेज

और रियासती सत्ता के विद्रोही थे जिसका मुख्य कारण आम जन पर ब्रिटिश तथा रियासती सत्ता के शोषण-अत्याचार था ये लोग सूदखोर और गरीबो को सताने वाले धनाढ्य लोगो से धन जबरन वसूल कर गरीबो और जरूरतमंदों में बाँट देते थे, ये उनका आवाज उठाने का तरीका था जिसे कालांतर में चोरी और डकेती का नाम दे दिया गया, यही मुख्य कारण होना प्रतीत होता है तथा इन नए भर्ती सैनिको को अजमेर की ब्रिटिश सेना के अधिन रखा गया और इस बल का नाम जोधपुर लिजन रखा गया इस प्रकार जोधपुर लिजन की स्थापना हुई और एरिनपुरा नामक स्थान जो की सिरोही राज्य (राजपुताना) के उत्तर-पूर्वी भाग जवाई नदी के बाये तट पर 25°9′ उत्तरी अक्षांश उत्तर औए 73°4′ पूर्व देशांतर पर स्थित था तथा राजपुताना मालवा रेलवे स्टेशन वर्तमान में (जवाई बांध) रेलवे स्टेशन से लगभग 6 मील की दूरी पर वर्तमान शिवगंज के समीप जवाई नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित था तथा इस एरिनपुरा को जोधपुर लिजन का मुख्यालय बनाया गया और यहाँ पर एक सैनिक छावनी स्थापित की गयी जिसे एरिनपूरा छावनी कहा गया तथा इस छावनी में पुर्बिया सैनिको को भी तैनात किया गया (पुर्बिया शब्द से आशय भारत के पूर्वी क्षेत्रो से है) एरिनपुरा से लगभग 100 किलो मीटर की दुरी पर आबू स्थित है और इस स्थान को अंग्रेजो ने अपना सैनिक मुख्यालय बनाया हुआ था जहा पर अंग्रेज अधिकारियो के आवास और सैनिक ट्रेनिंग केंद्र भी था संभवतया यह स्थान और जगहों से कम गर्म और ठंडा था और सिरोही, उदयपुर और गुजरात के नजदीक था जो की अंग्रेजो के लिए सहूलियत भरा था।

जैसा की पूर्व वर्णित है की एरिनपुरा का नाम कैप्टन डाउनिंग के जन्म स्थल यूरोप के एक टापू **एरिन** पर रखा गया इस छावनी की प्रारंभिक संरचना में **3 घुड़सवार टुकड़ियाँ, 8 पैदल कंपनियां, और दो 9 पाउंडर तोपे** शामिल थी सन 1841में इसमें तीन कम्पनिया और जोड़ी गयी 1857 के **विद्रोह के समय भील कंपनियों ने विद्रोह में हिस्सा नही लिया** इन तीन कंपनियों को छोड़ कर शेष सारे बल ने विद्रोह कर दिया था

सन्दर्भ- *गोरीशंकर ओझा, हिराचंद ओझा की पुस्तक **सिरोही राज्य का इतिहास"** पेज संख्या-310*

*- **राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास** - डॉ. गोपीनाथ शर्मा , डी. लीट. **(राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर) जुलाई, 1991.** प्रष्ठ संख्या – 73,74, 81, 82, 83*

***- मेंसन का पंत्र लारेन्स को**, 10 सितम्बर, 1857, फाइल नं. रा.अ.; **म्यूटीनी भाग-3**, ए.जी .जी .. की रिपोर्ट, एफ एण्ड पी.; नं. 3146-47, 31 दिसम्बर, 1856; **हीटकोट का पत्र**, 13 सितंबर, 1857, फाइल नं, 01 II, म्यूटीनी, भाग-3, रा.अ.*

*- सी.,एल. शावसं-**ए मिर्मिंग चेप्टर ऑफ इंडियन म्यु टीनी**, पृ. 108*

*- एफ. एण्ड पी. **डिपार्टमेंट सीक्रेट कंसल्टेंसन** दि, 27 नव, सन् 1857, नं.. 249-251], रा.अ, **दस्ती रेकार्ड, जोधपुर**, बही नं. 18 पृ, 278-389, अ.बी.*

के अनुसार -

क्रांति आरम्भ से पूर्व AGG की कार्यवाही-

19मई, 1857 को मेरठ में होने वाले विप्लव/विद्रोह की सुचना राजस्थान में पहुच चुकी थी, उस समय राजपूताने के तत्कालीन AGG जनरल लोरेंस आबू में थे। विप्लव की सुचना मिलते ही AGG लोरेंस ने तुरंत ही सम्बंधित अधिकारियो को सूचित किया और समझाया की उन्हें सावधानी रखनी चाहिये और अजमेर की सुरक्षा के लिए उसने 21 मई 1857 को दोसा से एक ब्रिगेड नसीराबाद मंगवाई क्योकि ये स्थान अबू से सबसे नजदीक था और यही पर यूरोपियन सैनिक मौजूद थे AGG लोरेंस ने राजपुताने के शासको के नाम एक घोषणा-पत्र जरी किया की सारे शासक अपने राज्य की सीमा के अन्दर शांति बनाये रखे और उठने वाली किसी भी

तरह की विद्रोह की आवाज को दबाये उनके राज्य में से हो कर जो कोई भी विद्रोही लोग गुजरे उनको गिरफ्तार कर ले, इस घोषणा पत्र में सर्वोच्चता के प्रति निष्ठावान रहने और सैनिक सहायता के लिए तैयार रहने की लिए सूचित भी किया गया था, अंग्रेजो के इस प्रकार के घोषणा-पत्रों से ये सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है की उस समय के शासक कितने सत्ता लोलुप और अंग्रेज सरकार से डरे हुए थे जो अपने ही लोगो के खिलाफ अंग्रेजो के साथ कंधे से कंधा मिला के खड़े थे। जिन्हें जरा सा भी संकोच नही हो रहा था की वे आक्रंताओ के साथ मिलकर अपने ही नागरिको का दमन कर रहे है।

नरेशो और तत्कालीन शासको का अंग्रेजो को सहयोग-

यह आदेश मिलने के बाद राजाओ ने अंग्रेजो की मित्रता पूर्ण तरीके से पूरी सहायता करने का वचन दिया, बिकानेर के महाराजा सरदार सिंह ने इस दिशा में पहल की और सिरोही के महाराव ने इच्छा प्रकट की की **"दिल्ली का फसाद (विद्रोह) जल्द ही दब जायेगा और मेरे जितने भी साधन/ संसाधन है वे सारे अंग्रेजी शासन को समर्पित है** " जयपुर के महाराजा से अनुमति प्राप्त कर वहा के पोलिटिकल एजेंट केप्टन इडन जयपुर के 5000 सैनिको के साथ मथुरा से गुडगांव की जिलो की ओर कुच किया महाराजा अलवर ने भी अपने पोलिटिकल एजेंट केप्टन निक्सन के नेतृत्व में 2500 सैनिक दिल्ली की और रवाना किये महाराजा जोधपुर ने AGG की मांग पर 2000 सवार और पैदल सैनिक/प्यादे तथा 6 तोपे सुपुर्द की, यही दृष्टिकोण डूंगरपुर, बांसवाडा, भरतपुर, धोलपुर, करौली, आदि के शासको का भी था इन राज्यों में जिन्होंने विद्रोह की अफवाहों और विद्रोहियों के पक्ष में जिसने बात की उन्हें दण्डित किया।

मेवाड़ के महाराणा का अंग्रेजो को सहयोग-

मेवाड़ के महाराणा स्वरुप सिंह ने अंग्रेजो का समर्थन किया और बेदला, बांगडा सेवत्रि बिनोता, सरबमेर, उत्थाना आदि के जागीरदारों को आदेश दिया की सब मिल कर अंग्रेजो के हितो की रक्षा करे महाराणा ने अपने विश्वसनीय सैनिक केप्टन सी एल सावर्स (पोलिटिकल एजेंट मेवाड़) को सुपुर्द कर दिए इन सैनिको का नेतृत्व बेदला के एक राव बख्त सिंह को सुपुर्द किया।

27 मई 1857 को महाराणा ने खास आदेश जारी किया की सभी जागीरदार और जिला अधिकारी अंग्रेजो की सैनिक कार्यवाही का सहयोग करे और वे शावर्स के आदेश को महाराणा का ही आदेश समझे अक्टूबर,1857 में महाराणा ने ओगना, पानरवा, जवास, मादडी, झाडोल, और छाणीके भोमियो और सरदारों को परवाने भेजे की खेरवाडा, और कोटडा में रहने वाले अंग्रेजो को कोई हानि न हो और पर्वतीय प्रदेशो में किसी तरह का कोई उत्पात ना हो इतना कुछ करने के बाद भी उत्पात हुआ जिसका कारण यह था की जनता और कुछ जागीरदारों में दबी हुई घ्रणा पैदा हुई जो एक मौका पाकर उबल पड़ी।

क्रांति की शुरुआत:

राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम का श्रीगणेश नसीराबाद से हुआ वहां पर 28 मई 1857 को पैदल सेना और तोपखाने के सैनिको ने तोपों पर कब्ज़ा कर लिया और लोगो में यह अफवाह फ़ैल गयी की विशेषकर अंग्रेजी पलटनो और तोपखानो में जानवरों की हड्डियाँ पीसकर सैनिको के खाने के आटे में मिलायी जा रही है और कारतूसो में गाय और सूअर की चर्बी लगी हुई है, जिनको बन्दूको में रखने से पहले मुह से खोलना पड़ता है, कारतूसो में चर्बी की बात कई अंग्रेज लेखको ने भी मानी है परन्तु हड्डियाँ पीस कर खिलाने वाली बात साफ नहीं हो पायी, 27

मई को दौसा से नसीराबाद आने वाली सेना की खबर से यहाँ के सैनिको में और ज्यादा सनसनी फ़ैल गयी और स्थति हाथ से निकलने लगी बम्बई से हुए तोपचियों ने आदेशानुसार तोपे चलाई परन्तु अन्य सभी ने तोपे चलने से इनकार कर दिया ।इसमें दो अंग्रेज मारे गए और दो घायल हुए इस प्रकार नासिराबाद स्वत्रंता सैनानियो के कब्जे में चला गया और दुसरे दिन उन्होंने नासिराबाद छावनी लूट ली और दिल्ली की और कुच किया इनका पीछ मारवाड़ के 1000 पैदल सैनिको ने किया जिसका नेतृत्व अजमेर के असिस्टेंट कमिशनर लेफ्टिनेंट वाल्टर और मारवाड़ के असिस्टेंट जनरल हिथकोट और लेफ्टिनेंट एन्साइन वूड कर रहे थे लेकिन पीछा करने वाली सेना को कोई सफलता नहीं मिली क्योकि स्थानीय ग्रामीणों, जागीरदारो और बागी आदिवासी लोगो ने इन सैनिक विद्रोहियों की भरपूर मदद की। परन्तु ब्रिगेडीयर मकन ने बोम्बे नेटिव केवेलरी की मदद से नसीराबाद को फिर से अपने कब्जे में ले लिया ।

नीमच में संग्राम का प्रभाव- 2 जून 1857 को यहाँ भी संग्राम की आग भड़क गयी वहा पर कर्नल अवोट ने सैनिको को राज भक्ति की सपथ दिलवाई सभी धर्म और समुदायों के सैनिको को उनके अपने अपने धार्मिक ग्रंथो पर हाथ रखवा कर कसम खिलाई गयी की वे अंग्रेज सरकार के वफादार रहेंगे । परन्तु उसी रात ग्यारह बजे बागी सिपाहियों ने 2 तोपों से फायर किये और उन बागी सिपाहियों ने छावनी को अपने कब्जे में ले लिया और वहा पर आग लगा दी वहा पर चर्जेंट की पत्नी अपने बच्चो के साथ आग में जल कर मर गयी फिर विद्रोहियों ने सेना की तिजोरी में से 5000 रुपये अपने कब्जे में लिए और एक लाख 26 हजार नो सौ रुपये खजाने से लूट लिए,देवली की छावनी भी उसी समय लूट और जला दी गयी ।

अंग्रेज सरकार की देशी फौज (स्थानीय आदिवासी और अन्य सैनिकों की टुकड़ी) ने हिंदुस्तान में क्रांति की आग लगा दी थी, सन 1857 की क्रांति की लपटे सिरोही तक भी पहुच चुकी थी, जिस कारण एरिनपुरा छावनी की फौज भी बागी हो चुकी थी, सिवाय भील कम्पनियों के

एरिनपुरा में स्थित भील कंपनियों ने विद्रोह में हिस्सा नही लिया खैर कारण जो भी रहे हो समय और परिस्थिति की मांग थी की इन भील कंपनियों को भी विद्रोह मे सम्मिलित होना चाहिए था परंतु ऐसा नहीं हुआ, विद्रोह के समय आबू के कमांडिंग अफसर कप्तान हॉल आबू में नहीं थे और दुसरे अफसर कप्तान ब्लैक नसीराबाद गए हुए थे वहा पर केवल लेफ्टिनेंट कोनोली, ऐज्युटंट और सार्जंट लोग ही अपने परिवार और बाल बच्चों और परिवार के साथ थे एरिनपुरा की पैदल सेना की एक टुकड़ी (कम्पनी) सिरोही रियासत के कहने ब्रिटिश सरकार के समर्थन से अनादरा के पास रोउआ ठिकाने के ठाकुर को सजा देने भेजी गई क्योंकी यहां का ठाकुर सिरोही राज्य से बागी हो गया था दिनांक 16,अगस्त को ये टुकड़ी हनाद्रे (अनादरा) पहुची और नासीराबाद व अन्य स्थानों पर हुए सैनिक विद्रोह से प्रभावित होकर वही से बगावत की घोषणा कर दी ओर अंग्रेज सरकार से बागी ही गई और वहा की देशी फौज की दो कम्पनियो के साथ मिलकर दिनांक 21 अगस्त 1857 को आबू पर हमला कर देती है और क्रांति का आगाज कर देती है तथा आबू में तैनात 83 नंबर की अंग्रेजी रेजिमेंट के अधिकांश सैनिक लगभग (40 से 50) सैनिक बीमार थे तथा थोड़े से अंग्रेज अफसर और औरते और बच्चे थे पर हमला कर देती है, गनीमत रही(इश्वर की कृपा रही) की बागी लोगो के पैर वहा पर ज्यादा देर तक जम नही सके कई बागी सैनिको ने बेरको के पास आके बंदूके चलायी जिसके जवाब में अंग्रेज सिपाहियों ने भी जवाबी कार्यवाही की और वहा पर हुई मुठभेड़ में एक बागी(विद्रोही) सैनिक की मौत हो गई जिससे बाग़ी सैनिकों ने वहां से अपना रुख दूसरी और कर लिया, बाग़ी सैनिको की एक दूसरी टुकड़ी ने कप्तान हॉल और कोनोली के बंगलो पर हमला कर दिया परन्तु वहां पर कोई हताहत नहीं हुआ, मिस्टर एलेक्जेंडर लोरेंस, जो की उस समय राजपुताना के एजेंट गवर्नर जनरल के पुत्र थे जो की अपनी माता और बहन के साथ वहां रहते थे कप्तान हॉल के बंगले की तरफ बन्दूको की गोलियों की आवाज सुन कर उसका कारण पता करने अपने घर से बाहर निकले तो उनको

देखते ही बागी (विद्रोहियों) ने उन पर गोली चलाई जो की उनकी जांघ में लगी यहाँ खबर सुनते ही कप्तान हॉल और और डॉक्टर यंग (जो की वहा मेडिकल अफसर थे) थोड़े से आदमियों को लेकर सिपाहियों की लाइनों की तरफ भागे और बागियों से मुकाबला करने लगे जिसमे अंग्रेज अफसर बागियों को पीछे धकेलने मे कामयाब रहे और रात के अँधेरे

फोटो -09 :1857 एरिनपुर सैनिक विद्रोह का सांकेतिक फोटो

और कोहरे की आड़ में कुछ अंग्रेज अधिकारी महिलाओ और बच्चो के साथ भागने में सफल रहे परन्तु कड़े संघर्ष के उपरांत आबू की छावनी को बागियों ने अपने कब्जे में ले लिया फिर सिरोही के महाराव के हस्तेक्षप से कुछ अंग्रेजो को बागियों से छुड़ा कर उन्हें सिरोही के महलों में शरण दे दी गयी इसके पश्चात विद्रोही सैनिक एरिनपूरा आये और एरिनपुरा के बचे हुए सैनिको को क्रांति के लिए प्रेरित किया जिससे एरिनपुरा के बाकि बचे सैनिक भी उत्साह

से भर गये और यहाँ के सैनिको ने भी हथियार उठा लिए और एरिनपुरा छावनी का सारा गोला बारूद, हथियार व सैनिक साजो समान लूट कर अपने कब्जे में ले लिए और एरिनपूरा में विद्रोह कर दिया विद्रोह होते ही वहा के अंग्रेजो ने (जिनमे सिर्फ तीन अंग्रेज, दो मेमसाहिबा(महिलाये) और पांच बालक थे) जिन्होंने रिसाले की लाइनों में जाकर(छुपकर) अपना बचाव किया, वहा से मेहरबान सिंह नाम के एक सिपाही ने उनको सही सलामत भगा दिया परन्तु कप्तान कोनोली को बागी लोग पकड़ कर अपने साथ लेकर चले गए, जब सिरोही के महाराव शिव सिंह को एरिनपूरा के विद्रोह की खबर लगी तो उन्होंने मुंशी नियामत अली खान को आदेश दिया की तुरंत एरिनपुरा जाकर किसी न किसी तरह येन- केन प्रकारेण बागियों के हाथो से अंग्रेजो को छुड़ा कर सिरोही लेकर आये जिस आदेश की पालना में मुंशी नियामत अली खान एरिनपुरा आया और मुंशी नियामत अली खान का बडगांव (शिवगंज के पास एक गाव) के पास बागियों से मुकाबला हुआ फिर एरिनपूरा से भागे हुए अंग्रेजो का पता लगा कर मुंशी नियामत अली खान द्वारा उनको सुरक्षित सिरोही पंहुचा दिया जहाँ पर महाराव शिव सिंह ने उन अंग्रेजो का शाही मेहमानों की तरह आवभगत की गई और उनको को बड़े आराम से अपने महलों में रखा, जब मुंशी नियामत अली खान को पता चला की कप्तान कोनोली को बागी लोग पकड़ कर ले गए है तब उन्होंने बागियों का पीछा किया और दो दिन के सफ़र के बाद वह उनसे मिला तथा अब्बास अली और इलाहीबख्स नामक दो सवार उस वक्त कप्तान कोनोली की सुरक्षा कर रहे थे उनको नियामत अली खान द्वारा लालच दिया गया जिस कारण लालच मे आकार वो दोनों सवार कप्तान कोनोली के साथ भाग कर वापस एरिनपुरा आ गये और एरिनपुरा से कोनोली साहब को भी सिरोही पहुंचा दिया गया, आबू मे हमले के दो दिन बाद 23,अगस्त 1857 को विद्रोही क्रांतिकारी सैनिक अपने-अपने इष्ट को याद करते हुए उनके जयकारे (भूरिया बाबा री जय, भारत माता की जी,

चामुंडा माता की जय आदि) जयकारे लगाते हुए वीर रस से भरपूर गीत गाते हुए अपने सिर पर मौत का कफन बांध भारत माता पर अपनी जान न्योछावर करने के लिये

'' चलो दिल्ली मारो फिरंगी ''

नारे का उद्‌घोष करते हुए एरिनपूरा के सैनिक देशभक्ति और जोश से सराबोर हो चुके थे अब इन सैनिको की नज़रे दिल्ली पर टिक चुकी थी अत: दिल्ली की और कुच करने की रणनीति बनायी और तय किया गया की टुकड़ी के सैनिक पाली के रास्ते अजमेर से जयपुर होते हुए दिल्ली जायेंगे और दिल्ली की तत्कालीन मुग़ल बादशाह (मुगलिया सल्तनत) के बादशाह बहादुर शाह जफ़र के नेतृत्व में ब्रिटिश सत्ता से लड़ेंगे और देश को फिरंगियों के चंगुल से आजाद करवाएंगे उधर कुछ बागी लोग सिरोही के पास से निकले वहाँ पर भी विद्रोही अंग्रेजों की मौजूदगी को लेकर आक्रोश मे थे तथा सिरोही रियासत-

क्रांति के समय अंग्रेज अफसरों द्वारा एक दुसरे को लिखे गये पत्र-1,2,3, -

अगले प्रष्ठ मे-

SUMMARY NOTES FROM FILE NO. 3 OF 1857, MARWAR CONTAINING CORRESPONDENCE BETWEEN VARIOUS POLITICAL AGENTS REGARDING THE MUTINY OF 1857-58.

Selections from Mutiny Correspondence.

I. Letters from Major Eden.

(1) How nervous they were is shown by a letter written by Major Eden at Abu to Mason at Jodhpur dated 4th June, 1857—'What times are there..... May he who orders all things, guide and lead us safely..... through these great troubles.'

(2) Extracts from a letter written by Eden from Abu dated, 13th June, 1857 to Mason, saying 'can you learn from your Rajah, whether the Bazee Bhaie of Gwalior wrote to him or other Rajpoot chiefs asking them to join our Sepoys in turning us out of India. The Bhurtpore troops seem to have promised to join them in Mutiny. We hear whisperings too..... against the character and stability of the Kotah contingent.....'

X

SUMMARY NOTES FROM FILE NO. 3 OF 1857, MARWAR CONTAINING CORRESPONDENCE BETWEEN VARIOUS POLITICAL AGENTS REGARDING THE MUTINY OF 1857-58.

Selections from Mutiny Correspondence.

II. Letters from Mason.

(3) In letter No. 485 of the 26th August, 1857 from Jodhpur, Mason wrote to General Lawrence that the Jodhpur ruler has just informed him about the Mutiny by Jodhpur Legion. Upon Mason's request, the Jodhpur ruler sent his friend Anar Singh to proceed against the Mutineers and to rescue the Europeans and to relieve Abu from their pressure.

(4) Regarding the activities of the Erinpura rebels and their association with the Auwa Thakur—the official report No. 545 of

1857 says that Anar Singh was sent by Jodhpur Chief to intercept the Mutineers before they could reach Pali. Anar Singh reached Pali earlier and when the rebels saw it, they turned towards Auwa where they entrenched themselves in conjunction with the Auwa Thakur's troops. Under instructions from the Jodhpur His Highness, Anar Singh attacked Auwa but could not achieve much success.

(5) In letter No. 546 of 1857, dated 10th September Mason informed the A.G.G. Lawrence that the Mutineers of Jodhpur Legion surprised Anar Singh's army, with the help of the chiefs of Auwa, Gular etc. and killed Anar Singh and inflicted heavy loss. Mason requested the Jodhpur ruler to take active and strong measures.

X

SUMMARY NOTES FROM FILE NO. 3 OF 1857, MARWAR CONTAINING CORRESPONDENCE BETWEEN VARIOUS POLITICAL AGENTS REGARDING THE MUTINY OF 1857-58.

Selections from Mutiny Correspondence.

III. Letters from Gulab Chand.

(6) Even private correspondence shows (as is shown by this intercepted letter from one Gulab chand Nathu Mul, Jodhpur to Manchand Ghelchand, Ahmedabad, dated 3oth August, 1857) that 'around Delhi and even in camps in this part, regiments are rising against the British Government; in short all the native regiments are against Government. In Marwar several chiefs are intriguing to rise in a rebellion against English..... In other States the case is the same.....'.

IV. Letters from Captain Hall.

(7) Letter No. 23 of 1858, dated 26-1-1858, sent by Captain Hall, Officiating Police Superintendent, Sirohi, to Major Morrison, Political Agent, Jodhpur says that 'during the mutiny at Erinpura, the villagers (from certain villages whose names cannot be deciphered owing to mutilation) (all) of Marwar plundered the cantonment to a large extent, taking off property—(worth of) above 30000 Rs.'.

फोटो :10,11,12 (सन 1857 क्रांति के दौरान अंग्रेज अफसरों द्वारा लिखे गये पत्र)

द्वारा अंग्रेजों को दी गई सुरक्षा को तोड़ कर अंग्रेजों को सजा देना चाहते थे परन्तु शहर की मजबूत सुरक्षा व्यवस्था को देखते हुए विद्रोही वहा से बिना लडे ही आगे बढ़ गये, तथा इधर एरिनपूरा विद्रोहियों के कुछ अनुभवी और बड़े नेतृत्वकर्ता जैसे- अब्बास अली, मोती खान, शीतल प्रसाद व तिलक राम जैसे नेताओ ने क्रन्तिकारी सैनिको को थोडा रुक कर सोचने को कहा और क्रांतिकारियों को समझाया की हमने विद्रोह तो कर लीया है परन्तु हमे अंग्रेजो को पत्र लिख कर उन्हे इस बात से अवगत करना चाहिए और उनके जवाब का इन्तजार करना चाहिए, हम उनके जवाब का थोड़ा इंतजार करेंगे अगर अंग्रेज हमारी शर्तें मान लेते है तो ठीक वरना हम आगे बढ़ जाएंगे काफी समझाइश के बाद उत्साही क्रन्तिकारी शांत हुए और पत्र के लिए मान गए, फिर अब्बास अली और अन्य नेताओ ने सलाह- मशविरा कर के अंग्रेज सरकार को एक पत्र लिखा जिसमे क्रांतिकारियों की कुछ शर्तें थी इंतजार के बावजूद अंग्रेज सरकार की तरफ से कोई जवाब नही आया तो फिर क्रांतिकारी आगे बढ़ गये, कुछ दूर आगे जाकर एरिनपुर के क्रांतिकारी(विद्रोही) दो समूहों में बंट गये जिनमें से विद्रोहियों/ क्रांतिकारियों का एक समूह तो सीधे दिल्ली की और आगे बढ़ गया और दूसरा समूह खेरवा(पाली के पास मारवाड़ स्टेट के क्षेत्र मे आने वाली एक छोटी सी जागीर) में आउवा के जागीरदार ठाकुर खुशाल सिंह जो की मारवाड़/जोधपुर स्टेट के प्रथम श्रेणी के सामंत थे उनसे से जा कर मिला जिनका जोधपुर (मारवाड़) स्टेट से पहले से ही विवाद चल रहा था जिस कारण ठा. खुशाल सिंह जोधपुर से बागी हो गये और जोधपुर के महाराज तख्तसिंह ठाकुर खुशाल सिंह से खफा थे महाराज तख़्त सिंह महाराजा मान सिंह का गोद लिये हुए पुत्र थे जो गुजरात की एक रियासत ईडर (राठौड़ो की रियासत) से थे जिनके विचार किसी कारणवश कुछ सामंतो से नही मिल पा रहे थे विशेष कर कुशाल सिंह से क्योकि आउवा जोधपुर(मारवाड़) स्टेट के अधीन था और आउवा के नजदीक ही एक और छोटा सा ठिकाना था जिसका नाम था बिठुडा (जागीर) जहाँ के सामंत कानजी की नियुक्ति को लेकर भी महाराजा

तख़्तसिंह और ठाकुर कुशाल सिंह में विवाद था कुशाल सिंह कानजी की नियुक्ति को लेकर तख्तसिंह से नाराज थे और जोधपुर राज्य का आदेश ना मानने के कारण तख़्त सिंह ने कुशाल सिंह पर तीन हजार रुपये का जुर्माना लगा दिया जिसका विवाद इस हद तक बढा की कुशाल सिंह ने देवजी को मौत के घाट उतार दिया, राज आज्ञा का उल्लंघन और राज्य द्वारा नियुक्त किये गए सामंत की हत्या के कारण तख्तसिंह कुशाल सिंह पर क्रोधित थे क्रांतिकारी पूरे क्षेत्र मे दुर-दुर तक फैल चुके थे जिस कारण इधर सिरोही और एरिनपूरा के आसपास के क्षेत्र में 1857 की क्रांति के दिनों में बागियों/क्रांतिकारियों के डर से आबू पर डाक नहीं पहुच पा रही थी इस कारण सिरोही रियासत के महाराव शिव सिंह के सवारों व सिपाहियों ने डाक मार्ग पर सुरक्षा प्रदान की जिससे डाक फिर से सुचारू रूप से आने-जाने लगी, दूसरी तरफ एरिनपूरा के विद्रोही सैनिको के दूसरे समूह को खैरवा मे ठाकुर खुशाल सिंह बड़ी ही चतुराई और वाक्-पटुता से अपने पक्ष मे करने मे सफल रहे क्योकि जोधपुर से पहले से ही कुशाल सिंह दुश्मनी मोल ले चुके थे और बाकि की कसर एरिनपुरा के क्रन्तिकारी विद्रोहियों को समर्थन दे के पूरी कर दी और विद्रोहीयो को अपने नेतृत्व मे जोधपुर स्टेट और अंग्रेजों की सामूहिक सेना से लड़ने के लिए मना लिया जिसमे अन्य छोटी बड़ी जागीरों के सामंत और जागीरदार भी शामिल हुए जो कुशाल सिंह के गुट के थे जिनमे आसोप के सामंत शिवनाथ सिंह, आलनीयवास के सामंत अजित सिंह साथ ही लांबिया, बंतावास, रुदावास और गूलर के जागीरदार शामिल थे जो ठाकुर कुशाल सिंह के समर्थन मे थे और जोधपुर स्टेट के बागी थे ये सारे जागीरदार इनकी सेनाए और एरिनपुरा के क्रांतिकारी(विद्रोही) सैनिकों को मिला के एक बड़ी सुदृढ़ सेना बन चुकी थी और इनको जरूरी हथियार भी इन जागीरों से उपलब्ध हो रहे थे जिस कारण ये समूहिक सेना अब मारवाड़ (जोधपुर) स्टेट और ब्रिटिश सेना से लड़ने के लिए पूर्ण रूप से तैयार थी अब एरिनपुर के क्रान्तिकारी विद्रोही सैनिकों को भी लड़ने के लिए अंग्रेज मिलने वाले थे युद्ध की तैयारिया जोरों शोरों से होने लगी जिसकी सूचना

अब तक जोधपुर को मिल चुकी थी जिस कारण जोधपुर महाराज तख्तसिंह और ब्रिटिश अधिकारी ठाकुर कुशाल सिंह और एरिनपुर के विद्रोहियों पर आग बबुला हो गए अब अंग्रेज भी कुशाल सिंह के विरुद्ध हो गये और कुशाल सिंह और एरिनपूरा विद्रोहियों को सबक सीखाने के लिए जोधपुर से सेना को आउवा पर आक्रमण का आदेश मिला अब ठा. कुशाल सिंह जोधपुर स्टेट और अंग्रेजो दोनों के दोहरे विद्रोही हो गये जिससे अंग्रेज और जोधपुर की एक सामूहिक सेना थी जिसका नेतृत्व जोधपुर (मारवाड़) स्टेट के एक सामंत कुशलराज सिंघवी और अंग्रेजो की टुकड़ी जो जोधपुर की सेना में सामिल थी का नेतृत्व कप्तान हिथकोट को सोंपा गया, दिनांक 8 सितम्बर 1857 को बिठुडा (बिठोडा) में भयंकर युद्ध हुआ, बिठुडा के युद्ध में जोधपुर (मारवाड़) स्टेट और अंग्रेजो की संयुक्त सेना से ठाकुर कुशाल सिंह, एरिनपूरा के सैनिक विद्रोही और अन्य सामंतो की सामूहिक सेना ने युद्ध लड़ा जिसमे जोधपुर की सेना की पराजय हुई और जोधपुर महाराज की सेना भाग खड़ी हुई भागती हुई सेना का क्रांतिकारियों ने पीछा किया और जोधपुर किले के किलेदार ओनाड़ (अनार) सिंह, महाराज के मंत्री और कुछ अन्य अधिकारियों को मार डाला और इस परिस्थिति मे कॅप्टन हीथकोट बड़ी ही मुश्किल अपने साजो समान को लेकर क्रांतिकारियों के हाथों से बच कर सोजत भाग गया, जोधपुर और अंग्रेजो की संयुक्त सेना की अप्रत्याशित करारी हार हुई और ठाकुर कुशाल सिंह के नेतृत्व में एरिनपूरा के सैनिको ने जोधपुर की सेना को

फोटो : 13 *(सांकेतिक फोटो आउवा किले के द्वार पर मेक मेसन का सर काट कर लटकाना)*

अपने हथियार तोपे, तंबू/डेरे और अन्य युद्ध सामग्री छोड़ कर भागने पर मजबूर कर दिया इस युद्ध में मिली अप्रत्याशित हार और बेइज्जती के कारण अंग्रेज सेना मे खलबली मच गई और जोधपुर महाराज (महाराजा तख़्तसिंह) और अंग्रेज तिलमिला उठे अब अजमेर के ब्यावर मे राजस्थान का ए.जी.जी. जॉर्ज पेट्रीक लोरेंस अंग्रेजों की एक छोटे से जागीरदार और विद्रोहियों से

फोटो:14 *(तत्कालीन आउवा और उसके आसपास के क्षेत्र का नक्शा)*

मिली हार और बेइज्जती का बदला लेकर अपनी प्रतिष्ठा फिर से प्राप्त करना चाहता था। इसलिए बिठुडा युद्ध के दस दिन बाद 18 सितम्बर 1857 को A.G.G. जोर्ज पेट्रिक लोरेंस ने ब्यावर(अजमेर) से और मारवाड़ के पोलिटिकल एजेंट मोक-मेसन जोधपुर से अपनी-अपनी सेना लेकर फिर से निकल पड़े परन्तु ब्यावर(अजमेर) से आने वाली A.G.G. जोर्ज पेट्रिक

लोरेंस की सेना आउवा पहुच गई जबकि जोधपुर से सेना लेकर आने वाले मोक मेसन समय पर नहीं पहुच सके A.G.G. जोर्ज पेट्रिक लोरेंस ने मोक मेसन का इन्तजार करने के बजाय जल्दबाजी में पहले ही आक्रमण कर दिया, तीन घंटे तक भारी गोली-बारी के बावजूद भी वह क्रांतिकारियों को नहीं दबा पाया जिसमे इस बार भी अंग्रेजो को भारी बेइज्जती के साथ मुह की खानी पड़ी इस बार भी खुशाल सिंह के नेतृत्व वाली क्रांतिकारियों की सेना की जीत हुई और A.G.G. जोर्ज पेट्रिक लोरेंस की सेना को पीछे धकेल दिया, इस हमले में अंग्रेजों को सबसे बड़ी क्षति हुई, इस लड़ाई मे जोधपुर का पोलिटिकल ऐजेन्ट मोकमेसन (जोर्ज पेट्रिक लोरेंस की सेना के साथ था) और कई युरोपियन सैनिक मारे गये **क्रांतिकारियों ने केप्टिन मोकमेसन का सिर धड़ से अलग करके आउवा दुर्ग के द्वार पर लटका दिया** । और विद्रोही सैनिको ने उसकी मौत पर जश्न मनाया और खूब नाच-गाना किया और एक गीत गाया की -

ढोल बाजे, चंग बाजे
भेलो बाजे बाँकियो।
मोक-मेसन ने काट के,
आउवे माथे टांगीयो।

देश भक्ति से सराबोर और जीत के जश्न में ख़ुशी की लहर तो उठनी स्वाभाविक ही है जिसमे जश्न का माहोल होना स्वाभाविक है हालांकि ये कृत्य अमानवीय था की किसी की मौत पर उसके मृत शरीर को क्षत-विक्षत कर उसका अपमान कर उसके के साथ जश्न मनाना मानवीय मुल्यो के विरुद्ध था भले ही वो युद्ध में मारा गया दुश्मन ही क्यों न हो खैर बात जब देश पर आती है तो कई बार मनवीय मूल्य पीछे छुट जाते है इस युद्ध में इतना बड़ा घटनाक्रम हुआ जिस कारण ज़नरल लारेन्स को पीछे हटकर चेलावास गांव में शरण लेनी पड़ी जो इस स्थान से तीन- चार मील की दूरी पर था। 3 दिन वहाँ ठहर कर उसने नसीराबाद और अजमेर

की ओर प्रस्थान किया। जब घटना क्रम की इंगलेंड अंग्रेज सरकार को लगी तो वह की सरकार ने जनरल लारेन्स के प्रति बड़ी अप्रसन्नता प्रकट की और कहा गया कि, **"इस प्रकार चुप-चाप हार कर पीछे हटना अच्छा नहीं था क्योंकि इस बात का राजस्थात पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा और अंग्रेज सरकार की प्रतिष्ठा पर धक्का लगेगा।"** बाद के इतिहास में इस चेलावास के युद्ध को ''**काले गोरो का युद्ध**'' कहा गया जो आज भी इतिहास में अपना विशेष स्थान रखता है और स्थानीय लोगो की माने तो चेलावास के करीब आज भी मोक मेसन की समाधी है इन सब घटनाक्रमों से क्रान्तिकारियों का उत्साह ओर बढ़ गया और उन्होंने मारबाड़ और मेवाड़ के लोगों के नाम एक अपील प्रकाशित की यह अपील डीसा के विद्रोही नेता रिसालदार अब्दुल-अली, अब्बासअली खान, शेख मोहम्मद बख्स तथा अन्य कई सूबेदार व जमादार और हिन्दू मुसलमान सैनिकों के नाम से प्रकाशित की गई थी।

यह अपील निम्नलिखित थी-

''मेवाड़ और मारवाड़ के सरदार हमारे पक्ष में हैं। जो हमको धर्म के नाम पर सहायता देंगे उनको स्वर्ग में पुरस्कार प्राप्त होगा. और बादशाह उनको वफादार समझकर सम्मानित करेगा''

एरिनपुरा के विद्रोही सैनिको और अन्य सहयोगी जागीरदारों के सहयोग से अंग्रेजों को पूर्णतया दबोच देने के बाद आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह ने सैनिक सहायता प्राप्त करने हेतु अन्य ठाकुरो, गोडवाड/मेवाड़ के सरदारों से पत्र व्यवहार करना प्रारंभ किया और अपनी स्थिति सूदर्ढ करने में लगे रहे, साथ ही वह स्वर्गीय धोकलसिंह के पुत्र को जोधपुर की गद्दी बिठाने का प्रयत्त करने लगे और कुशालसिह ने आउवा में 700 सैनिक आउवा की रक्षा के लिए तैनात किये। 10 अक्टूबर 1857 को जोधपुर लीजन के ओर अन्य सैनिक जो ब्रिटिश सत्ता से विरोधी हो गये थे, वे आसोप के ठाकुर शिवनाथसिंह, गूलर के ठाकुर बिसन सिंह,

आलनियावास के ठाकुर अजित सिंह, बोगावा के ठाकुर, वन्ता के ठाकुर प्रेमसिंह, बेसवाना के ठाकुर' चन्द सिंह श्रौर बुलगिरि के ठाकुर जगतसिंह के साथ बादशाह से सहायता लेने के 'लिए दिल्ली की ओर बढ़े परन्तु नारनोल (हरियाणा) पहुचने पर विद्रोहियों के आने की खबर अंग्रेजो तक पहुच जाती है और नारनोल (हरियाणा) में एक अंग्रेज अधिकारी गेरार्ड अपनी सेना की एक टुकड़ी लेकर विद्रोहियों को दिल्ली में प्रवेश करने से रोकने के लिए आता है जहा पर एरिन्पुरा के विद्रोहियों और गेराल्ड की सेना के बिच संघर्ष होता है जिसमे क्रन्तिकारी कमजोर पड जाते है और वहा से विद्रोही बिखर जाते है और अलग अलग तितर-बितर हो जाते है जिस कारण आसोप ठाकुर शिवनाथ सिंह व् अन्य वापस आ जाते है, इधर इसी बीच में मेवाड़ और मारवाड़ के विद्रोहियों की गतिविधि को देखते हुए और आउवा पर पुनः कब्जा करने के लिये राजस्थान के ए. जी. जी. ने अंग्रेज सरकार से और अधिक सेना तुरन्त भेजने की प्रार्थना की । शीघ्र ही बम्बई से अतिरिक्त सेना आ गई। जब यह सेना आउवा के पास पहुंची तो नसीराबाद की भी कुछ सेना इससे आ मिली। अब अंग्रेजों का बल 800 सैनिकों का हो गया जिसका नेतृत्व कर्नल होम्स ने किया। 20 जनवरी,1858 को आउवा को घेर लिया गया। यह घेरा 5 दिन तक चला। उन्हीं दिनों बड़ा बरसाती तूफान आया । तूफ़ानी तेज हवाओ के साथ निरन्तर मेघगर्जन होता रहा है और घोर अंधेरा हो गया । इस अंधेरे में आउवा के कुछ सैनिक शत्रु को घेरने के लिए किले से बाहर निकल गये। आउवा से निकलने वाले सैनिकों का अँग्रेज समर्थक सैनिकों ने पीछा किया तो भागने वालों में से 18 तो मारे गये और 7 पकड़े गये । पुनः 124 आदमियों को सिन्ध के सवार पकड़ कर ले आए। इसमें से 25 को तो गोलियों से उड़ा दिया । फिर जांच से मालूम हुआ कि आउवा के चारों ओर रक्षा का दोहरा प्रबन्ध था। बाहर मिट्टी का कोट और अंदर तोपखाना था ।दुर्ग के चारों ओर बड़ा जोरदार जाब्ता था । दुर्ग की दीवार पर 50 तोपें चढ़ी हुई थीं । दुर्ग में 3 टन बॉरूद था और 3 हजार गोले थे। किसी सिपाही/रक्षक को घुस देकर किले के फाटक खुलवाये गये । फिर अंग्रेज सेना ने भीतर

घुसकर इसी सामग्री से ठाकुर के महल. को उड़ा दिया । आउवा के दुर्ग पर 24 जनवरी, 1858 को ब्रिटिश फौज का अधिकार हो गया । अंग्रेजों ने बदले की भावना से गांव को लूटा और आउवा के निवासियों को अमानवीय यतनाए दी और उन पर निर्मम अत्याचार किये ।

आउवा के पतन का कारण स्पष्ट है, जहां अंग्रेजों की महती शक्ति और मारवाड़ के एक छोटे ठाकुर की कोई तुलना नहीं थी। अन्त में कुशाल सिंह आउवा छोड़ कर निकल गए और कोठारिया में जाकर रहने लगे । और 8,अगस्त,1860 को नीमच में ब्रिटिश शक्ति के समक्ष कुशाल सिंह ने आत्म समर्पण कर दिया ।

अजमेर में उनके ऊपर लगाये गए दोषों की जाँच की गयी और उनको जाँच रिपोर्ट में दोष मुक्त कर दिया गया परन्तु उन्हें अपनी जागीर पुनः नहीं मिल पाई, जब कुशाल सिंह की मृत्यु हुई तो उनके पुत्र देवी सिंह ने सन-1868 में आउवा की जागीर पुनः प्राप्त की ।

इसी प्रकार प्रतिकार /बदले की भावना से लोरेंस ने आसोप, गुलर, और अलनियावास के ठिकानो के गढो को नष्ट करवा दिया इन ठिकानों के जागीरदार कुशल सिंह और क्रन्तिकारी विद्रोहियों के सहयोगी थे और नारनोल तक पहुच कर क्रांति को बढ़ावा देने में सक्रिय थे आसोप के ठाकुर ने नारनोल से वापस आकर आउवा की पराजय का बदला लेने के लिए 35 दिन तक राजकीय फौजों से बदसू नामक स्थान पर युद्ध किया जिसमे आसोप का ठाकुर पराजित हुआ और उसने अंग्रेजो के सामने आत्मसमर्पण कर दिया उसे जोधपुर किले में बंदी बना लिया गया और उसकी जागीर जब्त करवा दी गयी इसके साथ साथ अन्य जागीरदारों जिन्होंने विद्रोहियों का साथ दिया इनकी जागीरे भी जब्त करवा दी गयी और यही स्थति बगड़ी ठाकुर की भी हुई ,इन पर कई मुकदमे चले और इन्हें दण्डित किया गया जिसमे जोधपुर स्टेट का पूरा हाथ था सम्पूर्ण घटना क्रम जो भी रहा ही परन्तु आउवा की घटना ब्रिटिश सत्ता के

विरोध की एक महत्वपूर्ण कड़ी मानी जाती है जहा पर एरिनपूरा के क्रन्तिकारी विद्रोहियों ने अपनी मातृभूमि के लिए अपनी जान दाव पर लगा दी थी

अंग्रेजो की इस हार का मुख्य कारण जोधपुर से आने वाली जोर्ज पेट्रिक लोरेंस और मोक मेसन का आपस में समंजस्य नहीं होना माना जाता है

ग़दर/क्रांति समाप्त होने पश्चात् सिरोही महाराव शिव सिंह ने अपने यहा शरण दिए हुए सब अंग्रेजो जिनमे अंग्रेज महिलाये/साहिबा व बच्चो को एजेंट गवर्नर जनरल (A.G.G.) के पास पंहुचा दिया, जिन्होंने सिरोही के महाराव को धन्यवाद दिया और उनके प्रति बड़ी प्रशंसा प्रकट की और सिरोही राज्य के कार्य की प्रशंसा करते हुए भारत की अंग्रेज सरकार को पत्र लिखा जिसमे सिरोही महराव की प्रशंसा की गई थी, जिस कारण ब्रिटिश सरकार ने खुश हो कर अधीनस्थ राज्यों द्वारा दिया जाने वाला सिरोही का राजस्व कर जो बकाया था उसे माफ़ कर दिया गया और भविष्य में लगने वाले कर को आधा कर दिया अर्थार्त- **सिरोही को अंग्रेजों के प्रति वफादारी और अपने देश के क्रांतिकारियों के दमन की नीति का इनाम मिल चुका था** इससे यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है की हमारी देसी रियासते किस तरह से अंग्रेजों की शरण वंदन मे लगी हुई थी ये एक विडंबना ही थी की एक तरफ देश की आजादी के मतवाले सिर पर कफन बांध कर अपनी जान को हथेली पर रख कर क्रांति मे कूद पड़े थे जिसमे कुछ सामंत/जागीरदार भी थे जो एरिनपुरा के क्रांतिकारियों (विद्रोहियों)के साथ अपने आत्म सम्मान और मातृभूमि के लिए लड़ाई लड़ी परंतु राजपुता ने की लगभग सारी रियासते और राजघराने अंग्रेजो की सुरक्षा मे रात दिन लगी रही, कदाचित ये रियासते चाहती ही नहीं थी की देश आजाद हो जिससें की उनकी विलसितापूर्ण सत्ता चलती रहे और इनकी विलासिता और पद लोलुपता पर ग्रहण ना लग जाए जिस कारण ये सारी देसी सत्ताये अंग्रेजो की सहयोगी हो गयी थी

1857 क्रांति/आन्दोलन की विफलता-

राजस्थान में क्रांति के विफलता का कारण स्पष्ट था की आन्दोलन जैसे ही उत्तर भारत में दबा दिया गया, राजपूताने में भी इसे निर्ममता पूर्वक कुचल दिया गया यहाँ के नरेशो और राजाओ ने अंग्रेजो का भरपूर साथ दिया **इस तथ्य को स्वयं प्रिचार्ड ने भी स्वीकार किया है** की रियासतों और राजाओ के सत्ता और पद लालसा ने क्रांति की शक्ति को निर्बल कर दिया था साथ ही अंग्रेज सेना नायक सधे हुए अफसर थे जिनमे आपसी सहयोग और सामंजस्य था अगर क्रांतिकारियों ने अपने चुने हुए नेताओ से मार्गदर्शन प्राप्त कर निर्णय लिया होता तो संभवत: स्थति कुछ और होती।

अंग्रेज इतिहासकार ने लिखा है की 'मेरे पास ऐसे कई पत्र है जिनमे हमारे अफसरों द्वारा की गयी क्रूरताओ को और उत्पीडन का वर्णन है अगर इनके विषय में मै एक शब्द भी लिखू तो लोग अब तक की क्रूरता की बातो को भूल जायेंगे और उन्हें पता लगेगा की क्रूरता किस हद तक होती थी नसीराबाद नीमच एरिनपुरा आउवा और कोटा में विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेजो ने क्रूर साधनो का स्तेमाल किया वहा इस बात का प्रमाण है की लोगो को पाश्विक ढंग से पिसा गया ,उनकी संपत्ति को लुटा गया और इससे भी अधिक लज्जाभरी अधम बात ये थी की सत्ताधरी रियासतों और उनके शासको द्वारा जनता की सम्पति लुटने वालो को पुरुस्कृत करने के लिए कमेटी बनायीं गयी।

ऊपर वर्णित विवरण से स्पष्ट है की शासको और राजाओ ने स्वतंत्रता संग्राम को दबाने और अंग्रेज शासन के पुनर्स्थापन में पूरा सहयोग दिया यहाँ जानते हुए की इस सहयोग का परिणाम उनकी स्वतंत्रता का अपहरण का कारण बनेगा।

उदहारण के लिए नीमच से भागे हुए डॉक्टर मरे और डॉक्टर गेन व अन्य अंग्रेजो की केसुन्दा निवासी राम सिंह और केसरी सिंह ने सहायता की थी राव बख्त सिंह ने अंग्रेजो के बच्चो और

औरतो को हिफाजत से उदयपुर पहुचाया, बाघ सिंह बगाणा ने भी अंग्रेजो के लिए काम किया,मारवाड़ के कुचामन के ठाकुर केसरी सिंह और सावंत सिंह ने 2000 सैनिक लेकर जयपुर राज्य की सीमा में अंग्रेजो की रक्षा की, आहोर ठाकुर ने भी क्रांतिकारियों के खिलाफ महाराजा से सहयोग किया, बीकानेर से भी लगभग 47 सरदारों ने अंग्रेजो के हित की रक्षा में योगदान दिया

परन्तु कुछ सरदार ऐसे भी थे जिन्होंने क्रांतिकारियों का भरपूर साथ दिया उनमे आउवा,कोठारिया, आसोप, गुलर, सलुम्बर आदि थे।

सन्दर्भ- जी .एन . शर्मा, सन 18 57 के भारतीय विप्लव में राजस्थान का योग- मरू भारती, अप्रेल 57 , पेज-63-66

अ.बी. दस्त्रो रिकॉर्ड जोधपुर: मारवाड़ का इतिहास भाग -2 पेज 448-450

1857 क्रांति/संघर्ष का अंत- अंग्रेजो की सैनिक शक्ति और नरेशो के सहयोग से ब्रिटिश भारत में और राजस्थान में 1857 के संघर्ष से अगस्त 1858 तक हो गया था अंग्रेज सरकार इसे दबाने में सफल रही इस क्रांति की समाप्ति पर लार्ड पमस्टर्ण (प्राइम मिनिस्टर ऑफ़ इंग्लैंड) ने कंपनी की रज्य सत्ता को समाप्त कर दिया और सम्राट और पार्लियामेंट की सत्ता स्थापित करने का प्रयत्न हुआ परन्तु कंपनी ने इसका विरोध किया और एक आवेदन पत्र पार्लियामेंट में प्रस्तुत किया परन्तु लार्ड पमस्टर्ण ने इसे निरस्त कर दिया। और जवाब में बताया की कम्पनी शासन अनुत्तरदाई था इससे पूर्व में भी सर जार्ज कार्नवालिस ने कहा था की कंपनी के समान भ्रष्ट, विश्वासघाती तथा लुटेरी सरकार इस धरती पर कोई अन्य सभ्य सरकार न है और न थी जितनी कंपनी रही है जैसा की ईस्ट इंडिया कम्पनी 1765 से 1784 तक थी।

पार्लियामेंट ने कम्पनी की सरकार को समाप्त कर दिया और भारत में सम्राट तथा पार्लियामेंट की सर्वोच्च शक्ति स्थापित की गयी इसके बाद भारत का शासन सीधा महारानी विक्टोरिया के हाथ में चला गया 1 नवम्बर 1858 को एक घोषणा के साथ 1 नवम्बर1858 को प्रयाग में बड़े ही धूमधाम से एक दरबार का आयोजन किया गया और लार्ड कैनिंग ने महारानी के घोषणा पत्र को पढ़ कर सुनाया जिसमे महारानी ने कहा की इस भरत में मेरा जितना भी राज्य है मै उसे और बढ़ाना नही चाहती और स्थानीय राजा महाराजो के साथ की हुई संधियों का पालन करने की प्रतिबद्धता दोहराइ गई और कहा गया की मै जिस प्रकार अपनी प्रजा के प्रति प्रतिबद्ध हु उसी प्रकार भारत की प्रजा के प्रति भी मै प्रतिबद्ध रहूंगी ओर साथ ही धार्मिक सहिष्णु की निति का पालन करने की प्रतिबद्धता भी दौहराई गई और प्रजा की स्वतंत्रता,समानता, और रीती-रिवाजो के संरक्षण का भी वचन दिया गया ।और राजाओ को नि:शंतान होने की स्थति में संतान गोद लेने का अधिकार भी दिया गया और कहा गया की अब सिर्फ कुशासन कि स्थति में ही अंग्रेज सरकार हस्तक्षेप कर सकेगी यहाँ हस्तक्षेप तीन तरीको से किया जा सकता था-

1. **देशी राज्य का शासन अस्थाई काल के लिए ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया जाता था**
2. **शासन स्टेट काउंसल को सोंप दिया जाता था**
3. **अयोग्य शासक को हटा कर उसी के वंश के अन्य व्यक्ति को गद्दी पर बिठा दिया जाता था**

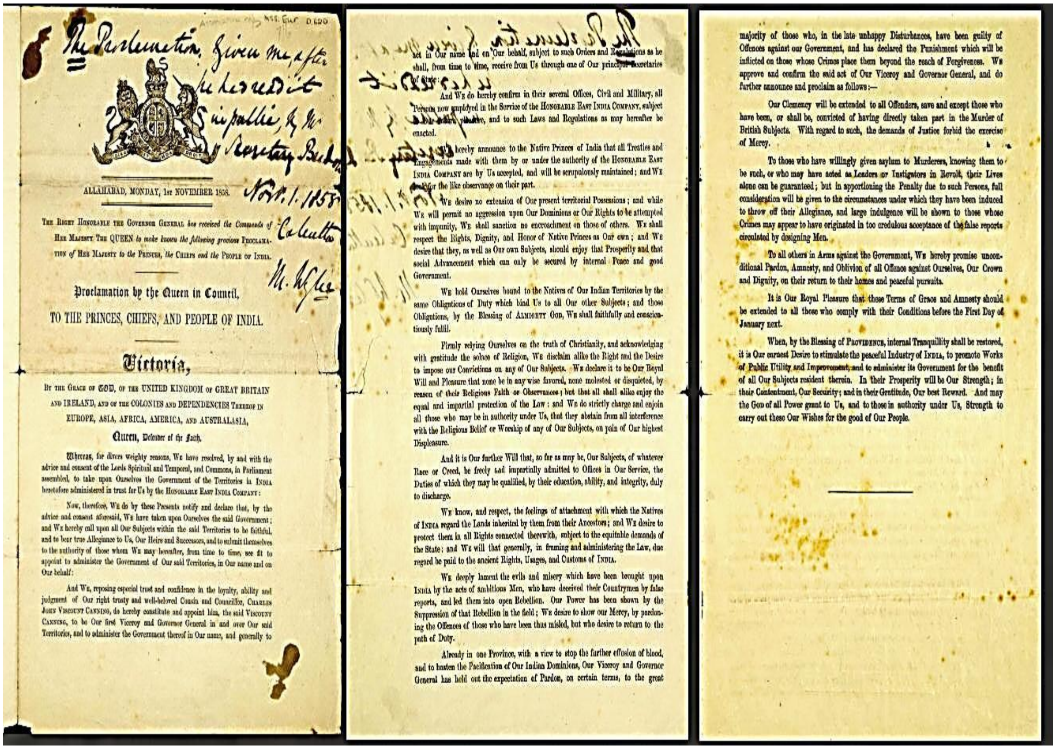

ALLAHABAD, MONDAY, 1st NOVEMBER 1858.

THE RIGHT HONORABLE THE GOVERNOR GENERAL *has received the Commands of* HER MAJESTY THE QUEEN *to make known the following gracious* PROCLAMATION *of* HER MAJESTY *to the* PRINCES, *the* CHIEFS *and the* PEOPLE OF INDIA.

Proclamation by the Queen in Council,

TO THE PRINCES, CHIEFS, AND PEOPLE OF INDIA.

Victoria,

BY THE GRACE OF GOD, OF THE UNITED KINGDOM OF GREAT BRITAIN AND IRELAND, AND OF THE COLONIES AND DEPENDENCIES THEREOF IN EUROPE, ASIA, AFRICA, AMERICA, AND AUSTRALASIA,

Queen, Defender of the Faith.

Whereas, for divers weighty reasons, WE have resolved, by and with the advice and consent of the Lords Spiritual and Temporal, and Commons, in Parliament assembled, to take upon Ourselves the Government of the Territories in INDIA heretofore administered in trust for Us by the HONORABLE EAST INDIA COMPANY:

Now, therefore, WE do by these Presents notify and declare that, by the advice and consent aforesaid, WE have taken upon Ourselves the said Government; and WE hereby call upon all Our Subjects within the said Territories to be faithful, and to bear true Allegiance to Us, Our Heirs and Successors, and to submit themselves to the authority of those whom WE may hereafter, from time to time, see fit to appoint to administer the Government of Our said Territories, in Our name and on Our behalf:

And WE, reposing especial trust and confidence in the loyalty, ability and judgment of Our right trusty and well-beloved Cousin and Councillor, CHARLES JOHN VISCOUNT CANNING, do hereby constitute and appoint him, the said VISCOUNT CANNING, to be Our first Viceroy and Governor General in and over Our said Territories, and to administer the Government thereof in Our name, and generally to act in Our name and on Our behalf, subject to such Orders and Regulations as he shall, from time to time, receive from Us through one of Our principal Secretaries of State:

And WE do hereby confirm in their several Offices, Civil and Military, all Persons now employed in the Service of the HONORABLE EAST INDIA COMPANY, subject to Our future pleasure, and to such Laws and Regulations as may hereafter be enacted.

WE hereby announce to the Native Princes of India that all Treaties and Engagements made with them by or under the authority of the HONORABLE EAST INDIA COMPANY are by Us accepted, and will be scrupulously maintained; and WE look for the like observance on their part.

WE desire no extension of Our present territorial Possessions; and while WE will permit no aggression upon Our Dominions or Our Rights to be attempted with impunity, WE shall sanction no encroachment on those of others. WE shall respect the Rights, Dignity, and Honor of Native Princes as Our own; and WE desire that they, as well as Our own Subjects, should enjoy that Prosperity and that social Advancement which can only be secured by internal Peace and good Government.

WE hold Ourselves bound to the Natives of Our Indian Territories by the same Obligations of Duty which bind Us to all Our other Subjects; and those Obligations, by the Blessing of ALMIGHTY GOD, WE shall faithfully and conscientiously fulfil.

Firmly relying Ourselves on the truth of Christianity, and acknowledging with gratitude the solace of Religion, WE disclaim alike the Right and the Desire to impose our Convictions on any of Our Subjects. WE declare it to be Our Royal Will and Pleasure that none be in any wise favored, none molested or disquieted, by reason of their Religious Faith or Observances; but that all shall alike enjoy the equal and impartial protection of the Law: and WE do strictly charge and enjoin all those who may be in authority under Us, that they abstain from all interference with the Religious Belief or Worship of any of Our Subjects, on pain of Our highest Displeasure.

And it is Our further Will that, so far as may be, Our Subjects, of whatever Race or Creed, be freely and impartially admitted to Offices in Our Service, the Duties of which they may be qualified, by their education, ability, and integrity, duly to discharge.

WE know, and respect, the feelings of attachment with which the Natives of INDIA regard the Lands inherited by them from their Ancestors; and WE desire to protect them in all Rights connected therewith, subject to the equitable demands of the State: and WE will that generally, in framing and administering the Law, due regard be paid to the ancient Rights, Usages, and Customs of INDIA.

WE deeply lament the evils and misery which have been brought upon INDIA by the acts of ambitious Men, who have deceived their Countrymen by false reports, and led them into open Rebellion. Our Power has been shown by the Suppression of that Rebellion in the field; WE desire to show our Mercy, by pardoning the Offences of those who have been thus misled, but who desire to return to the path of Duty.

Already in one Province, with a view to stop the further effusion of blood, and to hasten the Pacification of Our Indian Dominions, Our Viceroy and Governor General has held out the expectation of Pardon, on certain terms, to the great majority of those who, in the late unhappy Disturbances, have been guilty of Offences against our Government, and has declared the Punishment which will be inflicted on those whose Crimes place them beyond the reach of Forgiveness. WE approve and confirm the said act of Our Viceroy and Governor General, and do further announce and proclaim as follows:—

Our Clemency will be extended to all Offenders, save and except those who have been, or shall be, convicted of having directly taken part in the Murder of British Subjects. With regard to such, the demands of Justice forbid the exercise of Mercy.

To those who have willingly given asylum to Murderers, knowing them to be such, or who may have acted as Leaders or Instigators in Revolt, their Lives alone can be guaranteed; but in apportioning the Penalty due to such Persons, full consideration will be given to the circumstances under which they have been induced to throw off their Allegiance, and large indulgence will be shown to those whose Crimes may appear to have originated in too credulous acceptance of the false reports circulated by designing Men.

To all others in Arms against the Government, WE hereby promise unconditional Pardon, Amnesty, and Oblivion of all Offence against Ourselves, Our Crown and Dignity, on their return to their homes and peaceful pursuits.

It is Our Royal Pleasure that these Terms of Grace and Amnesty should be extended to all those who comply with their Conditions before the First Day of January next.

When, by the Blessing of PROVIDENCE, internal Tranquillity shall be restored, it is Our earnest Desire to stimulate the peaceful Industry of INDIA, to promote Works of Public Utility and Improvement, and to administer its Government for the benefit of all Our Subjects resident therein. In their Prosperity will be Our Strength; in their Contentment, Our Security; and in their Gratitude, Our best Reward. And may the GOD of all Power grant to Us, and to those in authority under Us, Strength to carry out these Our Wishes for the good of Our People.

फोटो:15 *(महारानी विक्टोरिया द्वारा देशी रियासतों को लिखा गया घोषणा-पत्र)*

महारानी विक्टोरिया की इस घोषणा से सारे देशी राज्य प्रसन्न थे, सभी देशी राज्यों के शासको ने इस घोषणा का तहदिल से स्वागत किया, राजपूताने के राजाओ ने इसके लिए महारानी विक्टोरिया के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और अपने राज्यों में उत्सव का आयोजन किया राज्यो की राजधानियों में दिवाली की भांति आतिशबाजियो का आयोजन किया गया जैसे राम घर आये हो,तोपों से सलामीयां दी गयी, जश्न में खेल कूद और घुडदौड़ अवं परेड आदि का आयोजन कर उल्लास प्रकट किया गया ये कैसा उल्लास था समझ से परे है जिन्हें देश की आजादी के लिए लड़ना चाहिए जो अपनी प्रजा की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार थे वो ही अंग्रेजो के गुलाम बन बैठे थे इतना ही नहीं यूरोपीय सैनिको को शाही भोज कराया गया और भारतीय सिपाहियों को मिठाई खिलाई गयी और नरेशो ने महारानी विक्टोरिया की लम्बी उम्र की कामना की।

राजस्थान के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति एक दृष्टिकोण-

आन्दोलन की घटनो का पुनर्वलोकन करने पर हम इस घटना क्रम के कुछ पात्रो की भूमिका दृष्टिकोण का मूल्यांकन करते है तो पाते है की राजस्थान के सारे नरेश अंग्रेजो के हाथो की कटपुतलिया बन चुके थे इन्होने अपनी विलासिता और ऐश्वर्य के नशे में अपना कर्त्तव्य निर्वहन छोड़ दिया और अपनी सत्ता बचाने के जतन करने लगे, इनके लिए अंग्रेजो की सहायता लेने देने के अलावा कुछ भी महत्वपूर्ण नही था इन्हें आम जनता और देश की गुलामी दिखाई देना बंद हो चूका था जोधपुर के महाराजा तख़्त सिंह ने तो आन्दोलन की सुचना पहुचाने के लिए जैसलमेर और मालानी से होकर जोधपुर तक ऊँटो का भी प्रबंध किया था जिससे डाक समय पर पहुच सके और बिकानेर के महाराजा सरदार सिंह ने बीकानेर की सीमा में होने वाले आन्दोलन को को दबाने मुख्या भूमिका निभाई इन्होने हरियाणा के ईसाइयों को आंदोलनकारियो से बचाने और आन्दोलनकारी अजिम बेग को दबाने के लिए सफल प्रयत्न किये जिसमे इनके कई सैनिक भी मारे गए।

उदयपुर के महाराणा स्वरुप सिंह ने निमच से भाग कर आये हुए अंग्रेजो को जगमंदिर में आश्रय दिया तथा अंग्रेज अधिकारी शावर्स की आन्दोलन को दबाने में सहायता की।

इसी तरह कोटा नरेश राम सिंह ने भी उनके राज्य में होने वाले आन्दोलन को दबाने में मेजर बर्टन की सहायता और रक्षा की और अंग्रेजी सत्ता को पुनः स्थापित करने के भरपूर प्रयत्न किये

***सन्दर्भ- राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास** -पेज-105 डॉ. गोपीनाथ शर्मा , डी. लीट. (राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर) जुलाई, 1991*

लोरेंस- डेसपैच, मुंशी ज्वाला सहाय –लायत राजस्थान पेज- 290, 291

*ओझा- **बीकानेर का इतिहास**, भाग-2, पेज – 444 - 49*

आन्दोलन का दमन के बाद जोधपुर(मारवाड़) में असंतोष-

पूर्व वर्णित आउवा के घटनाक्रम जिसमे मोक मेसन का गला काट कर उसकी की हत्या कर दी गयी थी, जिसके जवाब में जोधपुर से विशाल सेना आऊवा पर आक्रमण करने के लिए भेजी गयी परन्तु ठा.कुशाल सिंह किसी तरह बच कर निकल गए और पीछे आउवा की सुरक्षा में बचे हुए सिपाहियों और लोगो ने पांच दिन तक किले की सुरक्षा की परन्तु आखिकार जोधपुर की सेना बे आउवा पर कब्ज़ा कर लिया और जोधपुर की सेना ने आउवा में काफी नुकसान इस घटना से मारवाड़ में में जगह जगह असंतोष फैलने लगा अंग्रेजी सेना मारवाड़ में उठी असंतोष की भावना को दबाना चाहती थी इस असंतोष की स्थति से निपटने के लिए A.G.G. ने सन -1866 में मिस्टर टेलर नाम के एक अंग्रेज अधिकारी को राज्य का दीवान नियुक्त किया गया और मुंशी हाजी मोहम्मद को नायब नियुक्त किया गया इस नियुक्ति का अभिप्राय ये था की महाराजा के अधिकार अब सिमित हो चुके थे जिसकारण स्थानीय भावनाए और भड़की जिस कारण मारवाड़ कर्मचारी हर प्रकार का असहयोग करने लगे और अंग्रेजो के विरुद्ध रणनीति बनाने लगे सा सब से तंग आकर टेलर ने तीन महीने का अवकाश ले लिया और हमेशा के लिए वहा से चला गया जिस कारण दीवानी का सारा कार्य हाजी मोहम्मद पर आ गया हाजी मोहम्मद ने पुराने सारे प्रबंध बदल कर अंग्रेजी तरीके से करने लगा, मुख्य प्रशासनिक फौजी पदों पर मुसलमानों को ज्यादा नियुक्त किया जाने लगा ये अंग्रेजों की

सांप्रदायिक असंतुलन करवाने की चाल थी जो हाजी के द्वारा जोधपुर पर प्रयुक्त की गई जिस कारण मारवाड़ी जनता और शासक हाजी के विरोधी हो गए जिस कारण हाजी भई मारवाड़(जोधपुर) ज्यादा नहीं टिक सका और उसे भई मारवाड़ छोड़ कर जाना पड़ा परंतु उसे इतने से ही छुटकारा नहीं मिला गुप्त रूप से पुष्कर मे उसकी हत्या करवा दी गई, फिर भी अंग्रेज कूटनीति से बाज नहीं आये उनके आदेश से महाराजा ने चुंगी और दान के नियमो में हेरफेर कर दी जिससे माल के लेन ले जाने में असुविधा होने लगी , 1870 में जब अंग्रेज सरकार ने नमक कर लिया तो नमक की कीमत बढ़ गयी जिससे स्थानीय व्यापार को बहुत नुकसान हुआ अतः स्थानीय जागीरदारों और व्यापारियों की मदद से गोडवाड और जालोर आदि भागो में मीना और भील आदि विद्रोह करने लग गये , इस स्थति से निपटने के लिए राजपूताने के AGG लेफ्टिनेंट कर्नल कीटिंग ने गोडवाड और जालोर का प्रबंधन राजकुमार जसवंत सिंह और जलोर का प्रबंधन सिरोही के पोलिटिकल सुप्रींटेन्डेंट को की दिया गया महाराजा तख़्त सिंह के अधिकारों में कटौती कर गयी इस प्रकार सीधे प्रबंधन निति ने मारवाड़ में होने वाले विरोध को और बढ़ावा दिया

संदर्भ: *अजेंसी रिकार्ड सं :66 , म्यूटनी पेज :28*

प्रकाश व्यास : राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम : पेज 123

सनद बही नं.-128 पेज-328

रेऊ, मारवाड़ का इतिहास , भाग-2 , पेज-454

वही, पेज-455

हकीकत बही वि. सं. 1923, अ.बी.- रेऊ मारवाड़ का इतिहास, भाग -2 पेज-454

06. चलो दिल्ली मारो फिरंगी नारे की प्रासंगिकता

सन-1857 की क्रांति जिसे भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कहा गया इस क्रांति में एरिनपुरा छावनी के सैनिक विद्रोह में **"चलो दिल्ली मारो फिरंगी"** नारे का विशेष महत्व था। इस नारे ने पूरे आंदोलन को एक दिशा दी और क्रांतिकारियों में एकता और प्रेरणा का संचार किया,इस नारे ने क्रांतिकारियों को अंग्रेज सत्ता से लड़ने के लिए लक्ष्य का कार्य किया इस नारे ने क्रांतिकारियों को अपने लक्ष्य से भ्रमित होने से बचाए रखा और यह नारा उन्हें उनका लक्ष्य याद दिलाने का कार्य करता था हम इस नारे की प्रासंगिकता और महत्त्व को विस्तार से समझने की कोशिश करते है ।

नारे का अर्थ:

-**"चलो दिल्ली"**: दिल्ली तब मुग़ल साम्राज्य का केंद्र था और बहादुर शाह ज़फ़र यहाँ के सम्राट थे। बहादुर शाह ज़फ़र को क्रांतिकारीयो ने अपने नायक के रूप में देखा। जिस कारण दिल्ली को अपना लक्ष्य बनाना क्रांतिकारियों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण था, क्योंकि अगर दिल्ली पर नियंत्रण स्थापित किया जाता तो यह ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक बड़ा प्रतीक बनता क्योकि ब्रिटिश सत्ता का केंद्र भी दिल्ली ही था दिल्ली सदियों से भारत की राजधानी रही है जिस कारण दिल्ली पर अपना कब्ज़ा मतलब देश पर अपना कब्ज़ा ।

-**"मारो फिरंगी"**: "फिरंगी" का मतलब था अंग्रेज़, और आम भारतीय अंग्रेजो को फिरंगी नाम से ही संबोधित करता था जो उस समय भारत में शासन कर रहे थे। यह नारा अंग्रेज़ों के खिलाफ सीधे तौर पर विरोध की भावना व्यक्त करता था। जिसने भी इस नारे को पहली बार

बोला होगा कुछ सोच कर ही बोला होगा या अनायास भी अगर निकला हो तो भी ये नारा अपने आप में पूरी क्रांति को समेटे हुए प्रतीत होता है

नारे की प्रासंगिकता और महत्त्व:

दिल्ली का प्रतीकात्मक महत्व: दिल्ली, उस समय मुग़ल साम्राज्य का केंद्र था। अंग्रेज़ों के शासन के खिलाफ भारतीयों की भावना को एकजुट करने के लिए दिल्ली को लक्ष्य बनाना अत्यंत आवश्यक था। बहादुर शाह ज़फ़र की उपस्थिति और उनके नेतृत्व में क्रांतिकारियों को एक भावनात्मक प्रेरणा मिल रही थी। इस नारे ने दिल्ली को क्रांति का प्रतीक बना दिया था हालांकि महादुरशाह जफ़र तत्कालीन समय में इतने मजबूत नहीं रहे परन्तु थे तो मुग़ल सम्राट ही जिनका समर्थन हासिल करना भी क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणा का श्रोत था ये बात और है की क्रांति प्रत्यक्ष तौर पर अपने लक्ष्य तक नहीं पहुच सकी परन्तु 1857 की क्रांति ने परोक्ष रूप से अपना लक्ष्य हासिल कर लिया था और वो था देश के कोने-कोने में आजादी की ज्वाला जलाना और इस लक्ष्य ने आगे चल कर देश की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया

- दिल्ली शब्द का उद्देश्य था ब्रिटिश सत्ता को हिला देना और भारतीय शासक को फिर से सत्ता में लाना।
- दिल्ली को जीतने का मतलब था पूरे भारत में ब्रिटिश शासन को चुनौती देना और उसे समाप्त करना।

फिरंगी(ब्रिटिश सत्ता) के खिलाफ प्रतिरोध:

"फिरंगी" शब्द का उपयोग भारतीयों द्वारा ब्रिटिशों के लिए किया गया, इस शब्द ने पूरे आंदोलन को एक स्पष्ट लक्ष्य दिया और सम्पूर्ण देश में विद्रोह को दिशा दी।

- यह नारा राष्ट्रीय एकता को भी प्रेरित करता था, क्योंकि यह सिर्फ सैनिकों का नारा नहीं था, बल्कि सामान्य नागरिकों और किसानों और आदिवासियों के लिए भी एक आदर्श बन चुका था।
- फिरंगी के खिलाफ यह नारा न केवल एक सैन्य रणनीति थी, बल्कि यह ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ एक सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक प्रतिरोध का प्रतीक था।

एकता और संघर्ष की भावना:

"चलो दिल्ली मारो फिरंगी" नारा सैनिकों को एकजुट करने का एक प्रमुख साधन था। इस नारे ने क्रांतिकारियों के दिलों में यह विश्वास जागृत किया कि यदि वे दिल्ली पर कब्जा कर ले , तो ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंका जा सकता है। यही वो कारण था की निचले दर्जे के सैनिक जिनके उच्च अधिकारी ब्रिटिश या उनके सहयोगी रियासतों के राजपरिवार के सदस्य ही होते थे इसके बावजूद निचले स्तर के सैनिको ने ब्रिटिश सत्ता रूपी गजराज का सामना करने की हिम्मत की

- यह नारा सैनिकों और आम जनता के बीच सामंजस्य और सहयोग का प्रतीक बन गया था ।
- "चलो दिल्ली" का आव्हान सिर्फ एक भौगोलिक स्थान को लक्ष्य नहीं बनाता था, बल्कि यह स्वतंत्रता और न्याय की प्राप्ति का आव्हान था अगर देसी रियासतों और उनके शासको ने अंग्रेजो का सहयोग नहीं किया होता तो ये क्रांति भारत को सन 1857 में आजाद करवा लेती ।

संघर्ष का प्रतीक:

इस नारे का उपयोग केवल एक आक्रमण योजना के रूप में नहीं किया गया था, बल्कि यह संघर्ष और बलिदान का प्रतीक बन गया। यह नारा बताता था कि यह सिर्फ एक सैन्य लड़ाई नहीं है, बल्कि एक संघर्ष है जिसे प्रत्येक भारतीय को अपनाना चाहिए।

- इस नारे ने भारतीयों को एक सशक्त प्रतिरोध का अनुभव कराया। यह उस समय की विरोधी ताकतों (ब्रिटिश शासन) को स्पष्ट संदेश था कि भारतीय अब अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करेंगे।

एरिनपुरा छावनी से प्रेरणा:

एरिनपुरा छावनी जैसे स्थानों पर जहाँ सैनिकों में ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ गहरी नाराज़गी थी, **"चलो दिल्ली, मारो फिरंगी"** नारा सैनिकों को प्रेरित करता था। यह नारा उन्हें यह बताता था कि उनका लक्ष्य **दिल्ली** है, जो संघर्ष का केंद्र है। एरिनपुरा के सैनिको ने ही इस नारे को प्रेषित किया तथा क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय हो गए।

नारे का प्रभाव :

इस नारे का प्रभाव केवल सैनिकों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह भारतीय जनता के हर वर्ग तक पहुँच गया।

1. सैनिकों का उत्साह बढ़ा: दिल्ली पर चढ़ाई करने का उद्देश्य सैन्य अधिकारियों और सैनिकों के मनोबल को बढ़ाता था।

2. जनता की जागरूकता: इस नारे ने आम भारतीयों को भी ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने महसूस किया कि अगर दिल्ली को मुक्त किया गया, तो अंग्रेज़ों को भारतीय उपमहाद्वीप से खदेड़ा जा सकता है।
3. मुग़ल सम्राट का नेतृत्व: दिल्ली में बहादुर शाह ज़फ़र के नेतृत्व में सामूहिक रूप से राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बना। उनकी उपस्थिति ने इस नारे को और भी प्रभावशाली बना दिया, क्योंकि वह भारतीय संघर्ष के प्रतीक थे।

निष्कर्ष

"चलो दिल्ली मारो फिरंगी" नारा न केवल एक सैनिक आव्हान था, बल्कि यह 1857 की क्रांति **की** आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनीतिक भावना का प्रतीक बन गया। यह नारा राष्ट्रीय एकता, स्वतंत्रता की प्राप्ति**,** और विदेशी शासन के खिलाफ प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में उभरा। एरिनपुरा छावनी के सैनिक विद्रोह ने इस नारे को अपनी शक्ति दी और इसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना दिया।

चलो दिल्ली मारो फीरंगी ये वाकया ही अपने आप मे एक प्रेरणा श्रोत है जिसे सुन कर हर हिन्दुस्तानी कि रग-रग मे चिंगारी दौड़ जाती थी

07. 43वी एरिनपुरा रेजिमेंट का गठन

सन्दर्भ- Imperial Gazetteer of India, (1908–1931), *v. 12, p. 27, British Indian Army infantry regiment,*

Britishempire.uk

Researchingww1.co.uk के अनुसार-

जैसा की पहले के अध्याय में वर्णित है, सन-1836 ई. में सिरोही राज्य के जवाई नदी के बाये किनारे पर है जो की एरिनपूरा रोड रेलवे स्टेशन से छः मिल की दुरी पर स्थित थी जिसके निशान खंडहर के रूप में आज भी अपनी कहानी बयान करते है, सन – 1841 में इसमें तीन भील कंपनिया भी जोड़ी गयी, जिन्होंने 1857 के विद्रोह में हिस्सा नहीं लिया इना तीन भील कम्पनियों के आलावा पूरी छावनी ने भाग लिया,इस छावनी में पुरबिया सैनिक (देश के पूर्वी क्षेत्र से सम्बन्ध रखने वाले सैनिक) भी बहुतायत में थे जिन्होंने अन्य आदिवासी सैनिको के साथ में विद्रोह में महत्वपूर्ण भुमिका

फोटो-16: *(43वी 2-एरिनपूरा रेजिमेंट चिन्ह)* निभाई और 23,अगस्त,1857 को एरिन्पुरा की पूरी लिजन ने विद्रोह कर दिया तत्पच्शात विद्रोह लगभग तीन वर्ष पच्शात सन-1860 में इन तीनो भील कम्पनियों को साथ लेकर एरिनपूरा में अनियमित बल बना दिया और ये भील कम्पनियो से ही 43 एरिनपूरा रेजिमेंट की सुरुआत हुई अर्थात एरिनपूरा अनियमित बल ही 43वी एरिनपूरा रेजिमेंट

का आधार बनी।

43rd एरिनपूरा रेजिमेन्ट ब्रिटिश भारतीय सेना की एक रेजिमेंट थी, जिसकी स्थापना की प्रक्रिया जोधपुर लिजन की एक सैनिक छावनी के रूप में सन 1835 में शुरु हुई और सन 1836 में ये वर्तमान शिवगंज और जवाई नदी के किनारे स्थापित हुई थी, जिसने 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जहा के आदिवासी मीना व अन्य सैनिक विद्रोहियों और आम भारतीय नागरिको ने अंग्रेजो को कड़ी चुनौती दी यहाँ के सैनिक विद्रोहियों और क्रांतिकारियों ने अंग्रेजो के पैर उखाड दिए थे परन्तु स्थानीय रियासती सत्ता ने अंग्रेजो का साथ दिया और अपने-अपने क्षेत्र

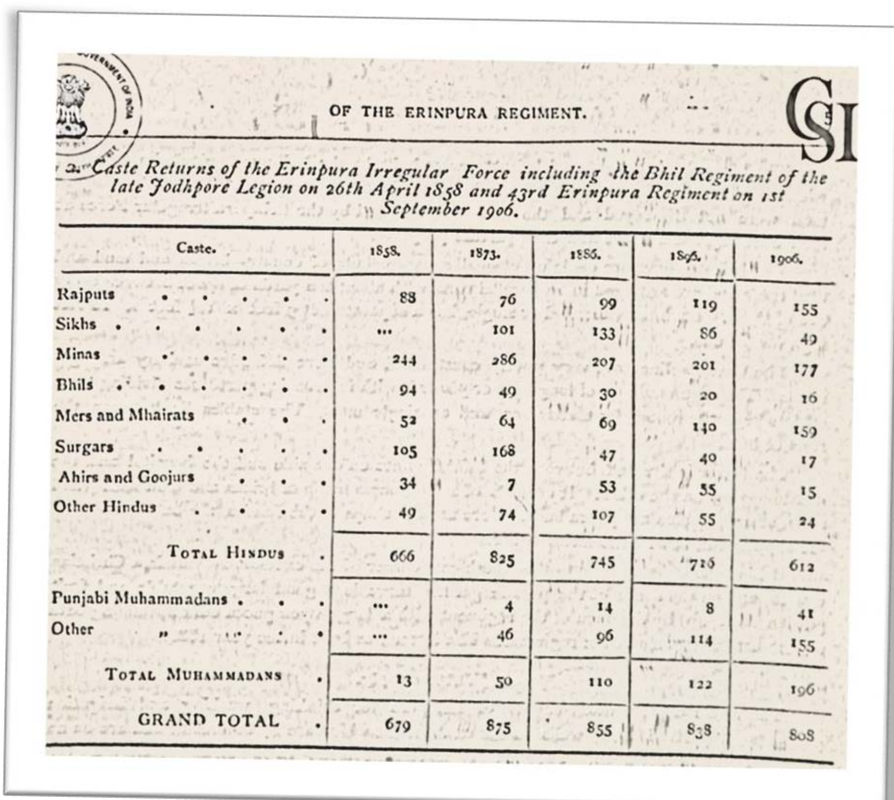

OF THE ERINPURA REGIMENT.

Caste Returns of the Erinpura Irregular Force including the Bhil Regiment of the late Jodhpore Legion on 26th April 1858 and 43rd Erinpura Regiment on 1st September 1906.

Caste.	1858.	1873.	1886.	1896.	1906.
Rajputs	88	76	99	119	155
Sikhs	...	101	133	86	49
Minas	244	286	207	201	177
Bhils	94	49	30	20	16
Mers and Mhairats	52	64	69	140	159
Surgars	105	168	47	40	17
Ahirs and Goojurs	34	7	53	55	15
Other Hindus	49	74	107	55	24
TOTAL HINDUS	666	825	745	716	612
Punjabi Muhammadans	...	4	14	8	41
Other "	...	46	96	114	155
TOTAL MUHAMMADANS	13	50	110	122	196
GRAND TOTAL	679	875	855	838	808

फोटो-17: *(सन- 26 अप्रेल,1858 से 01 सितम्बर,1906 तक जातिगत सैनिको की संख्या*)

में अंग्रेजो की स्थति मजबूत करने के लिए अपनी राजसी सत्ता की पूरी शक्ति जोंक दी इन रियासती शासको ने अंग्रेजो की राजसी मेहमान नवाजी की जिसके आधार पर ये माना जा सकता है की अगर इन राजाओ और नरेशो ने अपनी प्रजा और अपनी मातृभूमि के दुश्मनों (अंग्रेजो) से मित्रता नहीं की होती तो शायद सो साल पहले ही देश आजाद हो जाता एरिनपूरा छावनी का योगदान तो हमने पूर्व के अध्यायों में पढ़ा ही है जिस कारण एरिनपूरा छावनी का 43 वी एरिनपूरा रेजिमेंट के गठन में भी इन सत्ताओ का योगदान रहा होगा क्योकि सन 1857 के विद्रोह में ये तो जगजाहिर हो ही चूका था की रियासतों और अंग्रेजो का गठजोड़ क्या चाहता था ये रजवाड़े और रियासते ये कधापी नही चाहते थे की अंग्रेज देश छोड़ कर जाये और उनकी सत्ता पर कोई आंच आये अतः सन 1903 आते आते एरिनपूरा छावनी में अलग-अलग जाति और धर्मो के सैनिको की संख्या बढ़ा दी गयी और आदिवासी मीना और भील सैनिको की संख्या घटा दी गयी जहाँ 1858 का समय ऐसा था जब एरिनपूरा अनियमित बल में आदिवासी मीना सैनिको की संख्या काफी ज्यादा थी जिसे 1906 आते आते घटा कर आधे से भी कम कर दिया गया और यही हाल भील सैनिको के साथ भी हुआ इनकी भी संख्या लगातार घटाई गयी हालांकि एरिनपूरा में भील सैनिको की संख्या मीना सैनिको से काफी कम थी, जिसे सन 1903 में किचनर सुधारो के नाम पर एरिनपूरा छावनी अनियमित बल से 43 एरिनपूरा रेजिमेन्ट में बदल दिया गया और इसकी शक्ति को घटा दिया गया

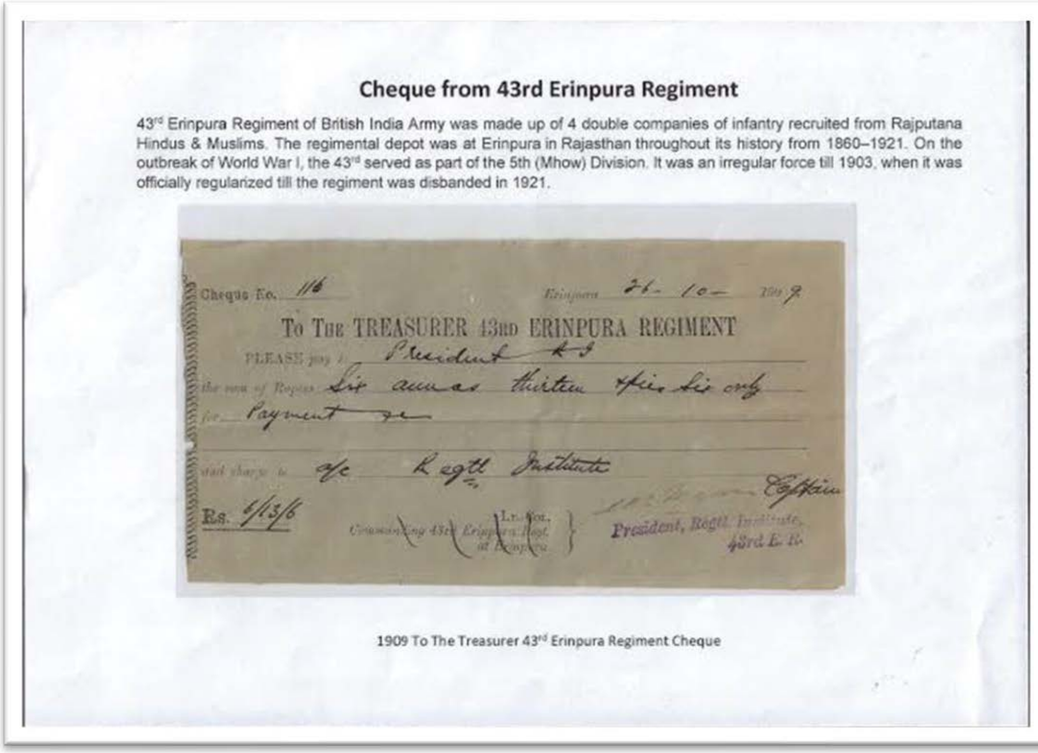

फोटो-18: *(43 एरिन्पुरा रेजिमेंट चेक)*

इस रेजिमेंट में राजपुताना (राजस्थान) के अन्य हिन्दुओ और मुसलमानों की भी भर्ती की गयी यहाँ पर चार डबल कम्पनियो की पैदल सेना थी इसका मुख्य डिपो एरिनपुरा था, जो राजपूताने में स्थित था जो की सन-1860 से 1921 तक इसका आधार रहा प्रथम विश्व युद्ध में भी 43वी एरिनपूरा रेजिमेंट ने मेसोपोटामिया अभियान में 15वी भारतीय डिविजन के हिस्से के रूप में सेवाए दी नियमित बटालियन ने मुख्य रूप से संचार लाइनों की सुरक्षा में अस्कोर्ट सेवा दी और सन-1917 में भी दूसरी इकाई ने भी विश्व युद्ध में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इस इकाई में परम्परागत युद्ध में तो निपुण परन्तु आधुनिक युद्ध प्रणाली और आधुनिक हथियारो के प्रति कम् अनुभवी सैनिक थे जिस कारण इनकी सुरक्षा कार्यो में सेवाये ली गयी तथा सन 1920 में दूसरी बटालियन को भंग कर दिया गया

प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय सेना के पुनर्गठन के तहत सन 1921 में 43वी एरिनपूरा रेजिमेंट व नौ अन्य रेजीमेंटो को भंग कर दिया गया इस रेजिमेंट के इतिहास में स्थानीय आदिवासी मीना सैनिको का विशेष योगदान रहा साथ ही अन्य आदिवासी समुदाय भील समुदाय ने भी अपनी भूमिका निभाई स्थानीय रियासती सत्ता और अंग्रेज सत्ता की नजर में इनका विद्रोह अपराध था इनके हर अच्छे बुरे कार्यो को आपराध की दृष्टि से देखा जाने लगा तथा इन्हें विद्रोह से दूर करने के लिए अंग्रेजो और स्थानीय सत्ता की भाषा में कहा जाये तो इन्हें आपराधिक गतिविधियों से दूर रखने, मुख्यधारा में लाने और इन्हें रोजगार प्रदान करने के लिए सेना में भर्ती करने की पहल को और मजबूती से आगे बढाया जबकि इन रियासती सत्ता और अंग्रेजो के गठजोड का उद्देश्य कुछ और ही था इन्हें विद्रोह से दूर करना अंग्रेजो का उद्देश्य था जिसे उस समय ये भोले भाले आदिवासी लोग समझ नहीं पाए परन्तु जब इन्हें इस चालाकी का बोध हुआ तो इन्होने अंग्रेज सत्ता के विरुद्ध हथियार उठा लिए और बाद की कहानी सर्व विदित है

एरिनपूरा छावनी का ब्रिटिश सत्ता के दौरान इतिहास में अविस्मर्णीय योगदान रहा है

08.राजपुताना रियासतों व् ब्रिटिश सत्ता के मध्य प्रमुख सुरक्षा संधियाँ

सन्दर्भ:_Rajras.in/british-treaty-rajputana states_

_राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास_

_अध्याय-2 -पेज-11-41 लेखक- डॉ. गोपीनाथ शर्मा , डी. लीट. (राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर) जुलाई, 1991_

19वी सदी के उत्तरार्ध में मराठ शक्ति के निरंतर अधीनता, पिंडारियो के हमलो से राजपुताना की रियासते बुरी तरह कुचली जा चुकी थी, साथ ही अरावली पर्वत श्रंखला के आस पास गोडवाड –मारवाड़ वर्तमान-(सिरोही-पाली-जालोर) क्षेत्र के मीना जनजाति ने भी आसपास के पुरे क्षेत्र को प्रभावित कर रखता इनके कारण पूरा क्षेत्र अस्थिर था तथा इसके साथ मेवाड़ में भी भील और मीना काफी सक्रिय थे

इन जनजातियो के युद्ध कौशल (गोरिल्ला युद्ध कौशल) से सामंतशाही, और बाहरी आक्रंताओ के खिलाफ बगावती तेवरों के कारण राजपूताने का यह क्षेत्र काफी अस्थिर था जिस कारण ब्रिटिश सत्ता को इस क्षेत्र में अपने पैर ज़माने में काफी दिक्कतों का सामना करना पद रहा था , जब जब राजपूताने की रियासतों ने मराठो के चंगुल से मुक्त होने की कोशिश तब- तब उन्हें पराजित होना पड़ा मराठो द्वारा राजपूताने के क्षेत्रो को तबाह कर दिया गया लगभग पूरा राजपुताना मराठो के अधीन आ गया था , नजो कर वसूलते थे क्षेत्र पर कब्ज़ा करते थे जबरन सब्सिडी वसूल करते थे

लार्ड वेलेजली (सन- 1798 – 1805) ने भारत में ब्रिटिश हितो की रक्षा के लिए राजपूत – मराठा मामलो में रूचि दिखाई वहा उत्तर भरात में मराठा शक्ति को रोकना चाहता था अतः मराठो के खिलाफ राजपूतो के साथ आपसी मित्रता की योजना बना रहा था कुछ कोशिशो के बाद वह अपनी योजना में सफल रहा लेकिन भारत से उनके जाने के बाद राजपूताने के प्रति ब्रिटिश निति बदल दी गयी जिससे लार्ड हेसिंगटन (सन-1813-1823) ने भारत में ब्रिटिश सर्वोच्चता स्थापित करने की कोशिश की जिसके लिए मराठो और पिंडारियो का दमन आवश्यक था ब्रिटिश अधिकारी लार्ड हेसिंगटन ने मराठो और पिंडारियो के खिलाफ राजपुताना रियासतों/ राज्यों को अपने स्वाभाविक सहयोगी के रूप में देखा जिस कारण दिल्ली में ब्रिटिश रेजिडेंट चार्ल्स मेटकाफ को राजपूताने की रियासतों के के साथ गठबंधन पर बातचीत का काम सौंपा गया

इन संधियों के माध्यम से राजपूताने की रियासते अंग्रेजो के पूर्ण अधीन हो गयी सेधान्तिक रूप से इन रियासतों के बाहरी मामले अंग्रेजो के अधीन चले गए और शासको के आंतरिक मामलो में नाममात्र की स्वतंत्रता दी गयी और कुछ समय पश्चात अंग्रेजो को आंतरिक मामलो में भी हस्तक्षेप का अधिकार दे दिया गया ये बताना मुश्किल है की राजपूताने के शासको की क्या मानसिकता रही होगी की जो भारतीय मराठो व् पिंडारियो से बचने के लिए बाहरी आक्रान्ता अंग्रेजो की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी इससे तो अच्छा था की मराठो की अधीनता स्वीकार कर लेते आखिर वो थे तो अपने ही देश के कम से कम पराधीनता इस हद तक तो न होती।

समय बीतने के बाद राजपूताने के शासक नाम मात्र के रह गए सारे निर्णय लेने के अधिकार अंग्रेजो के पास चले गए और शासक विलासिता का भोग करते रहे।

राजपुताना – ब्रिरिश सरकार के मध्य प्रमुख संधियां-

क्र.सं.	राज्य/रियासत	संधि की तिथि	तत्कालीन शासक
01	भरतपुर	सन-1803,1805	रणजीत सिंह
02	करौली	सन-15 नवम्बर,1817	हरबक्श सिंह
03	टोंक	सन-17 नवम्बर,1817	नवाब आमिर खान
04	कोटा	सन-26 दिसंम्बर,1817	महाराव उम्मेद सिंह
05	**जोधपुर(मारवाड़)**	**सन-06 जनवरी,1818**	**महाराजा मान सिंह**
06	उदयपुर	सन-13 जनवरी,1818	महाराणा भीम सिंह
07	बूंदी	सन-10 फरवरी,1818	राव विष्णु सिंह
08	बीकानेर	सन-21 मार्च,1818	सुरत सिंह
09	किशनगढ़	सन-07 अप्रेल,1818	कल्याण सिंह
10	जयपुर	सन-15 अप्रेल,1818	सवाई जगत सिंह
11	जैसलमेर	सन-02 जनवरी,1819	महाराव मूलराज
12	**सिरोही**	**सन-11 सितम्बर,1823**	**महाराव शिव सिंह**

इन संधियों मे से सिरोही और जोधपुर की संधियों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत है -

सिरोही की संधि-

सन्दर्भ – *राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास,अध्याय-2 -पेज-24-25 लेखक- डॉ. गोपीनाथ शर्मा , डी. लीट. (राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर) जुलाई, 1991*

एचिसन ट्रीटीज एंगेजमेंट एंड सनद्स जिल्द-4, पृष्ट-141

ओझा, सिरोही राज्य का इतिहास पृष्ट-155,186,246,277,279-281

राजपुताना गजेटियर, भाग-3,पृ.-243,245, ट्रीटीज एंगेजमेंट एंड सनद्स, भाग-3 पृ.-310 - 312

नेणसी की ख्यात, भाग-1 , पृष्ट-131 – 3

सन 1812-1817 मे जोधपुर ने सिरोही पर आक्रमण कर दिया और राज्य को काफी आर्थिक नुकसान पहुंचाया जिससे राज्य और प्रजा दोनों मे भय का माहौल हो गया , जब महाराव शिव सिंह राज्य बने तो उन्होंने पाया की राज्य की आर्थिक स्थति काफी सोचनीय है जोधपुर की सेनाओ के साथ ही क्षेत्र मे आदिवासी मीणा और भील समुदायों के प्रभाव व विरोध ने भी सिरोही के राज्य और सेना को भयभीत कर रखा था ये लोग अपने अचूक हमलों के लिए जाने जाते थे अरावली के नजदीकी क्षेत्र मे इन्हे हरा पाना नामुमकिन था अतः इन मीणा और भील लोगों पर नियंत्रण के लिए सीधे युद्ध के बजाय किसी दूसरी रणनीति की आवश्यकता थी और वो रणनीति सन-1823 मे सिरोही की अंग्रेजों के साथ संधि के रूप मे निकल के सामने आई

11 सितंबर 1823 को सिरोही मुकाम पर अहदनामा हुआ यथार्थ एक संधि/अग्रीमेंट हुआ जिसमे मुख्य रूप से निम्न शर्ते रही गई-

1. अंग्रेज सरकार स्वीकार करती है की यह रियासत और इलाका सिरोही को अपनी मातहती और सुरक्षा मे ली हुई रियासतो की सूची मे शामिल करेगी तथा इसकी रक्षा करेगी
2. महाराव शिव सिंह मुंसरिम अपने राव साहब की ओर उनकी प्रजा व उनके हितेशियों की तरफ से एक तहरीर के द्वारा अंग्रेज सरकार की अधीनता स्वीकार कर इकरार किया गया की प्रामाणिकता के साथ वफादारी का और फर्ज याद करेंगे और इस संधि की दूसरी सारी शर्तों का पालन करेंगे।
3. महराव सिरोही किसी दूसरे प्रभावशाली व्यक्ति या किसी रियासत से किसी प्रकार का संबंध नहीं रखेंगे और किसी दूसरे पर ज्यादती नहीं करेंगे और संयोगवश अगर किसी से झगड़ा या विवाद होता है तो वह फैसले के लिए मामले को अंग्रेज सरकार सोपेंगे।
4. अंग्रेजी हुकुमत सिरोही रियासत मे प्रवेश नहीं करेगी परंतु यहा के राजा हमेशा ब्रिटिश सरकार के अफसरों की सलाह के अनुसार ही रियासत का प्रबंध करेंगे और उनकी सलाह पर अमल करेंगे।
5. चूंकि सिरोही का राज्य के लुटेरों की लूटमार से वीरान हो गया है , इसलिए मुंसरिम रियासत वादा करते है की वे सरकारी हाकिमो की सलाह के अनुसार , जिस बात मे मुल्क की बेहतरी और इंतजाम समझ जाएगा, अमल किया करेंगे और यह भी इकरार करते है की अब और आगे मुल्क के फायदे ,चोरी, डाकेती , और **धाड़ो** को रोकने और प्रजा के के इंसाफ मे पूरी कोशिश करेंगे।

नोट- *(यहा चोरी ,डकेती के अलावा* ***धाड़ा*** *शब्द का अलग से इस्तेमाल किया गया है इसका मतलब* ***धाड़ा*** *इन सब से अलग प्रकिया थी, जैसा की हुमने पूर्व के अध्यायों मे पढ़ा है की मीना सरदार* ***(धाड़ेती)*** *धाड़ा डालते थे अर्थरत मीना लोग चोर या डकेत नहीं थे,* ***धाड़ा सत्ता और जुल्मों के खिलाफ विद्रोह का एक तरीका था जिसमे मीना धाड़ेती सिर्फ उन रसुखदार, निरंकुश सामंत शाही, महाजन आदि लोगों के घर पर धाड़ा डालते थे, जो गरीबों और मजलूमों से बेईमानी से धन अर्जित करते थे और उनका शोषण करते थे*** *इस प्रक्रिया के अपने कडे सिद्धांत और नियम थे की धाड़ा इस प्रकार के लोगों (सामाजिक अपराधी) के खिलाफ ही डाला जाएगा ,किसी भी गरीब और मजलूम पर कभी धाड़ा नहीं डाला जाएगा और धाड़े मे उतना ही धन या माल लूटा जाएगा जीतने अनुपात उस व्यक्ति ने बेमानी से धन कमाया है इस प्रकिरीय मे सामने वाले व्यक्ति के बेकसूर परिवार वालों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया जाता था और ना ही उनकी बहन बेटियों को बुरी नजर से देखा जाता था और धाड़े मे लूटे हुए धन मे से अपने परिवार के सप्ताह भर के पालन पोषण के लायक कुछ धन या अनाज मेहनताने के तौर पर रख कर बाकी का धन इसके हकदार,समाज सेवा,जरूरतमंदों और गरीबों के बाँट दिया जाता था , परंतु तत्कालीन सत्ता द्वारा पोषित लेखकों,कवियों, जगाओ व भाटों और सत्ता पक्ष ने इन्हे चोरी का दर्ज देकर इस समाज सेवा और न्याय के कार्य को बदनाम कर दिया और कालांतर मे इन्हे भी दुर्भावनावश चोर और डकेत ही कहा जाने लगा दुर्भावना की हद तो तब हो गई जब मीनाओ को चोर का पर्याय मान कर इन्हे चोर मेना कहा जाने लगा जो न्याय संगत नहीं है और इसी दुर्भावनावश बाद मे मीन जाती को जरायम पेशा कानून के दायरे मे रखा गया और इन पर खूब अत्याचार किया गया यही कारण है की मारवाड़ और गोडवाड क्षेत्र मे मीना आज भी पिछड़े हुए है)*

1. यदि सिरोही रियासत के किसी ठाकुर या सरदार मे से कोई व्यक्ति किसी जुर्म या हुक्म ना मानने का कसूरवार हुआ तो उस पर जुर्माना, इलाके की जब्ती, और अपराधानुसार सजा सिर्फ अंग्रेज सरकार के अफसर की सलाह और सहमति से ही दी जाएगी
2. सिरोही की सारी प्रजा चाहे आमिर हो या गरीब सबने एक मत होकर ये जाहीर किया है की पिछले राजा राव उदयभाण अपने जुल्म व ज्यादती के कारण सब ठाकुरों और सरदारों की संपत्ति से वाजिब तौर से बेतरफ होकर कैद किए गए है और राव शिव सिंह सबकी मंजूरी से उनके उत्तराधिकारी करार दिया गए है इस कारण सरकार अंग्रेजी राव शिव सिंह को उनकी (उदयभाण) की जिंदगी तक रियासत के मुजरिम मंजूर करेगी, परंतु उनके देहांत के बाद राव उदयभाण की संतति (संतान) मे से कोई वारिस होगा तो वह गद्दी पर बिठाया जाएगा।
3. रियासत सिरोही उतना खिराज अंग्रेज सरकार को अपनी रक्षा के खर्च लिए आज की तारीख से तीन वर्ष बीतने के बाद दिया करेगी जितना की नियत होगा , इस शर्त से की उसकी तादाद छ: आना तीन रूपया आमदनी मुल्क अधिक न हो।
4. व्यापर की तरक्की और रियाया के आम फायदों के लिए सरकारी अफसरों को यह उचित होगा की वे राहदारी व् चुंगी आदि के महसूल की शरह रियासत सिरोही के इलाके में इस तरह मुक़र्रर करावे की जो अनुभव से ठीक मालूम हो।
5. जब कोई अंग्रेजी फौज की टुकड़ी सिरोही राज्य में या उसके आस पास किसी काम पर नियत हो तो राव साहब का फर्ज होगा की वे फौज के जरूरी सामान का प्रबंध बिना किसी प्रकार का महसूल लगाये करे, उस फौज का अफसर इलाके कि फसल और जमीन की पैदावार को बचने की अपनी तरफ से पुरी कोशिश करेगा अगर

अंग्रेज सरकार की ये राय होगी की कुछ फौज सिरोही में रखे तो उसको इस बात का इख्तियार रहेगा और राव साहब की तरफ से कोई नाराजगी की कोई निशानी नहीं रहेगी,इसी तरह अगर यह जरूरी हो की कुछ फौज सिरोही रियासत की जरूरत के लिए भर्ती हो और उसमे अंग्रेज अफसर रहे तो राव साहब इस बात का वादा करते है की वे जहा तह हो सकेगा सरकारी हिदायत को तामिल करेंगे अगर ऐसी हालत में खिराज की जो रकम राव साहब देते है उसका पूरा लिहाज रहेगा राव साहब की फौज हर वक्त अंग्रेज अफसरों की मातहती में नौकरी के लिए तैयार रहेगी।

जोधपुर (मारवाड़) की संधि

सन्दर्भ- राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास

अध्याय-2 -पेज-.29-30 लेखक- डॉ. गोपीनाथ शर्मा , डी. लीट. (राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर) जुलाई, 1991

ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग-2 पृष्ट-694 – 763

जोधपुर की ख्यात ,जिल्द-4 पृष्ट-82-84

वीर विनोद भाग-2, पृष्ट- 888 -913 (इसके अनुसार 1803 अहदनामा रद्द कर दिया गया था)

महाराजा मानसिंह के समय अंग्रेजो से संधि हुई ,विजय सिंह की मृत्यु के बाद मान सिंह जोधपुर राज्य की सत्ता हथियाने के लिए अपने चचेरे भाई से संघर्ष कर रहे थे मानसिंह को सन-1804 में सफलता मिली और वह जोधपुर के राजा बन गए इसी समय लार्ड हेस्टिंग्ज ने देशी रियासतों के साथ संधि निति स्वीकार ली इसलिए जोधपुर राज्य की तरफ से ही कम्पनी

सरकार के साथ संधि की बात चलाई गयी और निम्नलिखित दस शर्तो पर 6 जनवरी 1818 को एक संधि पत्र लिखा गया वो शर्ते निम्न प्रकार से थी-

1. ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजा मानसिंह तथा उनके वंशजो के बिच मित्रता, सहकारिता तथा स्वार्थ की एकता सदा पुश्त दर पुश्त कायम रहेगी और एक के मित्र तथा शत्रु दोनों के मित्र तथा शत्रु ही माने जायेंगे
2. अंग्रेज सरकार जोधपुर राज्य और मुल्क की रक्षा करने का जिम्मा अपने पर लेती है
3. महाराजा मनसिंह और उनके उत्तराधिकारी अंग्रेज सरकार का बड़प्पन स्वीकार करते हुए उनके अधीन रह कर उनका साथ देंगे और दुसरे राजाओ अथवा रियासतों से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखेंगे
4. अंग्रेज सरकार को बताये बिना और बिना उसकी स्वीकृति प्राप्त किये महाराजा और उनके उत्तराधिकारी किसी राजा अथवा रियासत से कोई अहद – पेमान नहीं करेंगे , परन्तु अपने मित्रो और संबंधियों के साथ उनका मित्रता पूर्ण पत्र व्यवहार पूर्ववत जारी रहेगा
5. महाराजा और उनके उत्तराधिकारी किसी पर भी ज्यादती नहीं करेंगे यदि संयोगवश किसी के साथ कोई झगडा होता है तो वह मध्यस्थता और और निर्णय के लिए अंग्रेज सरकार के सम्मुख मामला पेश करेंगे
6. जोधपुर राज्य की तरफ से अब ताज सिंधिया को दिया जाना वाला खिराज, जिसका विस्तृत ब्यौरा साथ में नत्थी है अब सदा अंग्रेज सरकार को दिया जायेगा और खिराज सम्बन्धी जोधपुर राज्य का सिंधिया के साथ इकरार ख़तम हो जायेगा
7. चूँकि महाराज क कथन है की सिंधिया के अतिरिक्त और किसी राज्य कोा ओई खिराज नहीं दिया जाता और उपलिखित खिराज वह अब अंग्रेज सरकार को देने का

करार करता है इसलिए यदि अब सिंधिया अथवा अन्य कोई खिराज का दावा करते है तो अंग्रेज सरकार उस दावे का जवाब देगी

8. मांगे जाने पर अंग्रेज सरकार की सेवा में जोधपुर राज्य को पंद्रह सौ सवार देने पड़ेंगे और जब भी आवश्यकता पड़ेगी राज्य के आन्तरिक इंतजाम के लिए सेना के कुछ भाग के अतिरिक्त शेष सब सेना महाराज को अंग्रेजी सेना का साथ देने के लिए भेजनी होगी
9. महाराज और उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के खुद मुख़्तार रईस रहेंगे और उनके राज्य में अंग्रेजी हुकूमत का दखल नहीं होगा
10. दस शर्तो की यह संधि, जिस पर मि. चार्ल्स थियापिलास मेटकाफ और व्यास किशनराम एवं व्यास अभय राम के हस्ताक्षर अट्टहा मुहर है,दिल्ली में लिखी गई श्रीमान गवर्नर जनरल तथा महाराज मान सिंह और युवराज महाराज कुमार छत्र सिंह इसकी स्वीकृति कर आज तारीख से छः सप्ताह के भीतर एक दुसरे को सौंप देंगे 16 जनवरी को गवर्नल जनरल ने इसकी तस्दीक की।

09. शिवगंज स्थापना एवम् एरिनपुरा से सम्बन्ध

1911 Encyclopedia Britanica के अनुसार

सिरोही राज्य के तत्कालीन महाराव शिव सिंह ने सन- 1854 में शिवगंज की स्थापना की तथा शिवगंज को एक बाजार के रूप में विकसित किया लेखक व इतिहासकार **गौरीशंकर हिराचंद ओझा** की पुस्तक **सिरोही राज्य का इतिहास**, सन-1911के प्रष्ट संख्या 2 और 3 के अनुसार उदयपुर के महाराणा जवान सिंह के अबू की यात्रा करनी चाही जिसके लिए जवान सिंह ने अंग्रेज सरकार के सामने याचिका लगायी परन्तु उस समय उन्हें आबू जाने की अनुमति नहीं अपने आप को स्वतंत्र शासक कहने वाले राजाओ और नरेशो के लिए क्या ये अवस्था अपमान जनक नहीं थी परन्तु इस गुलामी और अपमान जनक स्थति में भी ये शासक अंग्रेजो के मित्र या यु कहे की उनके गुलाम बने रहे ये गुलामी नही तो और क्या थी की अपनी ही जमीन पर रहते हुए अपनी ही जमीं पर जाने के लिए किसी राजा को अंग्रेजो से इजाजत लेनी पड रही है धिक्कार है ऐसी वीरता पर वीरता का उदहारण तो महाराणा प्रताप ने पेश किया जिन्होंने अपनी मात्रभूमि के खातिर अपने राजसी ठाट छोड़े और जंगलो की ख़ाक छानना मंजूर किया परन्तु उन्हें अपना आदर्श मानने वाले शासको ने उनके बलिदान से भी कुछ नहीं सिखा और अपना आत्मसम्मान अंग्रेजो के कदमो में रख दिया खैर ये तो एक उदहारण है हम फिर से अपनी कहानी पर आते है उस समय भारत (हिंदुस्तान) किसी भी राजा को आबू जाने की इजाजत नहीं थी, परन्तु सिरोही के महाराव शिव सिंह जो की अंग्रेजो के काफी नजदीक थे इन्होने उदयपुर के पोलिटिकल एजेंट कर्नल स्पिअर्स के साथ कुछ लिखा-पढ़ी की और उदयपुर के महाराणा जवानसिंह को आबू जाने की अनुमति दिलवाई जिस कारण, दिनांक 21 दिसंबर 1836 को महराना जवान सिंह आबू पहुचे तथा महाराव सिव

सिंह ने जवान सिंह का बहुत स्वागत और सम्मान किया महाराणा जवान सिंह आबू से बहुत प्रसन्न हो कर लौटे तथा ठीक उसके पश्चात हिंदुस्तान के अन्य राजाओं पर से आबू जाने पर लगी हुई पाबन्दी हट गयी संभव है उस समय अंग्रेजो और भारत के राजाओ के मध्य कोई संधी हुई हो इसका कोई पुख्ता प्रमाण नहीं है परन्तु परिस्थिति के आधार पर अंदाजा लगाया जा सकता है की बिना किसी संजोते के तो अंग्रेज मानने वाले नहीं लगते सब राजाओ को इजाजत मिलजाने के पश्चात हिंदुस्तान के अन्य रजा भी गर्मी के दिनों में आबू जाने लगे और हर गर्मी के मौसम में वहा प्रवास करने लगे इस घटनाक्रम के कुछ समय पश्चात जब महाराव शिव सिंह की इच्छा के विरुद्ध अंग्रेज सरकार द्वारा सिरोही की पोलिटिकल अजेंटशिप हटा ली गयी तब महाराव शिवसिंह की हमेशा से ही इच्छा रही की अंग्रेज सरकार की फौज व् अंग्रेज सरकार का एजेंट सिरोही में रहे क्योकि इस क्षेत्र में आदिवासी मीणाओ का बहुत ही ज्यादा प्रभाव था मीना विद्रोही सरदार राज्य या सम्पूर्ण गोडवाड क्षेत्र में शोषणकारी सामंतो, सूदखोर धनाढ्यो ,और अंग्रेज काफिलो को लूट लेते थे और गरीब,जरूरतमंदो और शोषितों में बाँट देते थे स्वयं अपने और अपने परिवार के पेट पलने जितना ही रखते थे जिससे कुछ दिन परिवार का गुजारा चल जाये इस आदिवासी समुदाय ने निश्वार्थ भाव से त्याग किया और अपने हिस्से की लड़ाई अपने तरीके से लड़ी ये कार्य भी उनके लिए अपने तरीके से लड़ी गयी देश की आजादी की लड़ाई थी अगर इनके मन में लालच होता तो ये लोग लूट मार करके आमिर हो जाते जबकि ऐसा नहीं हुआ इन्होने बस अपने मेहताने के रूप में अपना परिवार पालने के लिए कुछ भाग ही रखा जिससे बस कुछ दिनों का अनाज आ सकता था

ऐसी स्थति में अंग्रेज सरकार ने वर्तमान शिवगंज शहर के आस पास के क्षेत्र में सैनिक छावनी स्थापित करने का निश्चय किया तथा वि.सं.1963 (ई.सं. 1936) को एरिनपूरा में छावनी के लिए जमीन चाही गयी (एरिन्पुरा गाव छावनी के नामकरण से पहले एक सामान्य साधारण गाव ही था) जो की महाराव शिव सिंह द्वारा ख़ुशी-ख़ुशी दे दी गयी उसके अगले वर्ष में ही

एरिनपूरा छावनी की स्थपना कर दी गयी कुछ ही समय बाद अंग्रेज कमांडिंग अफसर मेजर डाउनिंग को सिरोही का पोलिटिकल एजेंट नियुक्त किया गया तभी से सिरोही का सम्बन्ध नीमच (मेवाड़ के पोलिटिकल एजेंट) से छुट गया

पुस्तक-*सिरोही राज्य का इतिहास ,प्रथम प्रकरण –शिवगंज प्रष्ट सं.-58*

वेबपेज shaeoganj.rajasthanonline.in के अनुसार

मारवाड़ (जोधपुर) के राजा मान सिंह और अंग्रेज सरकार के बिच दिनांक 06 जनवरी,1818 को एक एक अग्रीमेंट हुआ जिसके तहत यहाँ तय हुआ की मारवाड़ (जोधपुर) रियासत के राजा मान सिंह 1500 सैनिक अंग्रेज सरकार को उपलब्ध करवाएंगे परन्तु मान सिंह ने इस शर्त को मानने से इनकार कर दिया और अग्रीमेंट तोड़ दिया फिर उसके 17 वर्ष बाद महाराजा मान सिंह आखिर शर्त मान गए और नए सैनिक भर्ती के लिए 07 दिसंबर,1835 को एक लाख पंद्रह हजार रुपये का बजट जारी किया गया तथा भर्ती पूरी होने के पश्चात इन सैनिको को अजमेर स्थित ब्रिटिश सेना के अधीन रखा गया तब सिरोही के तत्कालीन महाराव शिवसिंह से सैनिक छावनी स्थापित करने के लिए जमीन मांगी गयी और सन 1937 में वर्तमान जगह एरिनपूरा में सैनिक छावनी की स्थापना की गयी जिसका नाम कप्तान डाउनिंग के जन्म स्थल एरिन द्वीप पर रखा गया ये हम पहले के अध्याय में पढ़ चुके है तथा 1860 में इसे एरिनपूरा अनियमित बल के रूप में जाना जाने लगा तथा 19 03में इसे बदलकर 43 वी एरिनपूरा रेजिमेंट कर दिया यहाँ पर अंग्रेज अफसरों के बंगले बनाये गए,पोस्ट ऑफिस ,कई गार्डन बनाये गए और सैनिको के रहने के लिए कैंप बनाये गए जो संभवतया सैनिक टेंट के रूप में थे जिसे स्थानीय भाषा में (झुपा) कहा गया, कालांतर में यहाँ सिविलियन लोग नही रहने लग गए जिसे ध्यान में रखते हुए महाराव शिवसिंह ने अपने नाम पर 11 मई 1954 (संवत- वैशाख माह शुक्ल पक्ष मिति 10 गुरुवार 1911) को शिवगंज शहर की नीव रखी और

यहाँ पर बाजार की प्लानिंग की गयी जिससे आसपास के लोगो और विशेषकर एरिनपूरा छावनी के अंग्रेज अफसरों और सैनिको को बाजार की साडी सुविधाए मिल सके अतः महाराव शिव सिंह ने जुहारमल लोढा को नगर सेठ नियुक्त किया गया जो की पाली के निवासी थे उन्हें शिवगंज शहर की स्थापना के बाद यहाँ के विकास और देख-रेख की की जिम्मेदारी सौंपी गयी और महाराव द्वारा आसपास के व्यापारियों को शिवगंज में अपने प्रतिष्ठान लगाने के लिए आमंत्रित किया गया शिवगंज में प्रतिष्ठान लगाने वाले व्यक्तियों को कर (टेक्स) में विशेष छुट दी गयी और यहाँ पर आवासीय जमीनों का आवंटन किया गया जिसके लिए एक रुपया और पांच आने की राशि प्रति भूखंड (प्रति प्लाट) तय की गयी ऐसी लुभावनी छुटो और सुविधाओ को देखते हुए कई व्यापारी और सेवा कार्य करने वाले लोग पली और अन्य अस पास की जगहों से आकर बस गये

आज भी वर्तमान में शिवगंज सिरोही जिले का अग्रणी शहर है या यु कहे की वाणिज्य और व्यापर की दृष्टी से राजस्थान के अग्रणी शहरों की सूचि में शामिल है यहाँ पर कपडा,मिठाई , सोना-चांदी के लिए पुरे देश में प्रसिद है यहाँ का बाजार वर्तमान समय में व्यापर के लिए देशभर में प्रसिद् है जिस कारण इसे **मिनी बोम्बे** भी कहते है

10.एरिनपूरा अनियमित बल की सन-1901 में बॉम्बे प्रेसीडेंसी राफल्स एसोसिएशन की खेल स्पर्धा में जीत

सन्दर्भ- *National army Museum.uk /detail.php?acc=1978-06-30-1*

Collection.nam.ac.uk के अनुसार-

बॉम्बे प्रेसीडेंसी रायफल्स एससोसिएसन के द्वारा एक खेल स्पर्धा आयोजित की गयी जिसमे एरिनपुरा अनियमित बल ने भी हिस्स लिया जिसमे एरिनपुरा अनियमित बल विजेता रही इस प्रतिस्पर्धा में बॉम्बे रायफल्स एसोसियेसन द्वारा एरिनपूरा अनियमित बल को एक चांदी की ट्रोफी (कप) प्रदान की गयी थी इस चांदी की ट्रोफी के निचे अंकित ओ.एम.भुज भारत के उमारसी मावजी (सन-1832-1911) के लिए, 1900 (सी) एरिनपुरा अनियमित बल जिसकी स्थापना सन-1860 में एरिनपूरा, राजस्थान (राजपुताना) में स्थानीय तैनाती के लिए की गयी थी जिसमे घुड़सवार सैनिको के साथ पैदल सैनिक भी थे,सन 1903 में घुडसवार सेना को समाप्त कर दिया गया और इस बल को 43वी एरिनपूरा रेजिमेंट बना दिया गया, 1921 में

फोटो:19 (बॉम्बे प्रेसीडेंसी खेल स्पर्धा की ट्रोफी)

भारतीय सेना के पुनर्गठन के दौरान किचनर सुधारो के तहत इस इकाई को भंग कर दिया गया सन-1901 में बॉम्बे प्रेसीडेंसी रायफल्स द्वारा आयोजित होने वाली खेल स्पर्धा मे एरिनपूरा अनियमित बल ने भी हिस्सा लिया तथा इस स्पर्धा में एरिनपूरा अनियमित बल विजेता रहा जिसमे एरिनपूरा अनियमित बल की टीम को एक चांदी की नक्काशीदार खेल ट्रोफी प्रदान

की गयी यहाँ ट्रोफी एरिनपुरा अनियमित बल को कई शूटिंग मैच स्पर्धा में जीत के लिए प्रदान की गयी

-मैच 8 रेपिड इन्डेपेंडें 200 yds (यार्ड)-1st प्राइज A कम्पनी टीम ने जीता

-मैच 9 रेपिड बोलीज 3000 yds(यार्ड)-1st प्राइज Aco टीम ने जीता

-मैच 13 कुल मिला के प्रथम परुस्कार AC कम्पनी टीम ने जीत

एरिनपूरा के सैनिक प्रकार्तिः रूप से फुर्तीले और शारीरिक रूप से फुर्तीले थे जिसका ये जीता जगता उदहारण है एरिनपूरा के आदिवासी सैनिक अपनी फुर्ती के लिए जाने जाते थे इसी बात को मध्यनज़र रखते हुए इनको सेना में शामिल किया गया था की किसी न किसी प्रकार से इन आदिवासी सैनिको को संघर्ष और विद्रोह से हटा कर ब्रिटिश सरकार के पक्ष के इस्तेमाल किया जाये

11. प्रथम विश्व युद्ध की सुरुआत

संक्षिप्त परिचय-

***सन्दर्भः** पुस्तक- विश्व प्रसिद्ध युद्ध*

लेखक- राजेन्द्र कुमार ' राजीव '

तृतीय संस्करण-सन-1988, अध्याय- प्रथम विश्व युद्ध, पेज संख्या-30,31,32 के अनुसार-

प्रथम विश्व युद्ध की सुरुआत एक घटना से हुई थी जिसमे एक सर्बियावासी राष्ट्रवादी व्यक्ति ने 28 जून 1914 को **ऑस्ट्रिया के राजकुमार आर्कड्यूक फ्रेंज फ़र्डिनेंड** की हत्या कर दी इस घटना के लगभग एक महीने तक एक दुसरे पर दोषारोपण होते रहे और बाद में ऑस्ट्रिया ने सर्बिया के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी धीरे-धीरे दोनों खेमो के समर्थक देश भी युद्ध में कूद पड़े कुल मिला कर 16 देशो ने इस युद्ध में हिस्सा लिया

जिसमे मुख्य प्रतिद्वंदी निम्न थे-

ऑस्ट्रिया- हंगरी एवं जर्मनी तथा फ्रांस और ब्रिटेन थे ऑस्ट्रिया -हंगरी तथा जर्मनी जो यूरोप की **'केंद्रीय शक्तिया' (Central Power**) और रूस, फ़्रांस एवं ब्रिटेन जो **'मित्र राष्ट्र' (The Allies)** थे ये युद्ध तब और भयानक हो गया जब 1914 में तुर्की एवं 1915 में बुल्गारिया केंद्रीय शक्तियों के साथ तथा इटली मित्र राष्ट्रों के साथ आ मिले तथा बाद में जापान और सबसे अंत में अमेरिका (1917) में मित्र राष्ट्रों के साथ शामिल हो गए किन्तु इस युद्ध के मूल में पिछले पच्चास वर्षो से लगातार चली आ रही शक्ति प्रतिद्वंदिता थी, 28 जुलाई 1914 को

ऑस्ट्रिया द्वारा सर्बिया के खिलाफ युद्ध छेड़ देने पर रूस ने सर्बिया को पूर्ण समर्थन दिया तथा जर्मनी ने ऑस्ट्रिया को अपना समर्थन दिया युद्ध व्यापक पैमाने पर प्रारंभ हो गया जर्मनी ने 1 अगस्त को रूस तथा 3 अगस्त को फ़्रांस के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया तथा 4 अगस्त को ब्रिटेन ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी जब जर्मनी के सैनिक बेल्जियम में प्रवेश कर रहे थे जर्मनी को आशा थी की बेल्जियम होते हुए वह एकाएक फ़्रांस पर आक्रमण कर देगा और कुछ ही सप्ताह में फ़्रांस को पराजित कर देगा और उसके बाद रुस को देख लेगा शुरुआत में कुछ समय तक ये योजना सफल होती दिख रही थी क्योकि जर्मन सैनिक फ़्रांस की राजधानी से पेरिस से मात्र 20 किलो मीटर दूर थे परन्तु रूस का आक्रमण रोकने के लिए जर्मन सैनिको को पूर्वी मोर्चे पर जाना पड़ा इस कारण युद्ध में गतिरोध उत्पन्न हो गया, जर्मन सैनिको का पश्चिमी युद्ध क्षेत्र में आगे बढ़ना रोक देने के बाद एक नए प्रकार के युद्ध की सुरुआत हुई।

युद्धरत सेनाओ ने खाइया खोदी जिनकी मदद से वे एक दुसरे पर धावा बोलने लगी इससे पहले सेनाये खुले मैदान में लडती थी इस युद्ध में वयुयानो और मशीनगनो का प्रयोग किया गया और अंग्रेजो(ब्रिटेन) ने पहली बार युद्ध में टैंक का प्रयोग किया एक दुसरे के खाद्यान्न,हथियारों और रसद को रोकने में समुद्रि युद्ध की मुख्या भूमिका रही ,जर्मनी ने सर्वप्रथम "यु-बोट"(U-Boats) नामक पनडुब्बियो का प्रयोग न केवल युद्ध बल्कि ब्रिटिश बन्दरगाहो की और जा रहे अन्य देशो के माल वाहक जहाजो भी तबाह किया संयुक्त राष्ट्र अमेरिका अब तक युद्ध से अलग थे ये यूरोप के मामलो में दखल नहीं दे रहा था परन्तु जर्मन पनडुब्बिया अटलांटिक महासागर में तटस्थ अमेरिकी पोतो को भी नष्ट कर रही थी अतः 6 अप्रैल 1917 को अमेरिका भी जर्मनी के खिलाफ युद्ध में शामिल हो गया और अमेरिका त्रिदेशीय संधि में शामिल देशो के लिए हथियारों और अन्य आवश्यक वस्तुओ का मुख्या श्रोत बन गया

दिसंबर,1917 युद्ध की स्थति में एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ रुष में कमुनिस्टो के नेतृत्व में क्रांति हो गयी और वहा जार शासन के समाप्त होते ही रूस ने युद्ध से अपने आप को युद्ध से अलग करने की घोषणा कर दी क्रांति के बाद रूस में सत्ता में ई बोल्शेविक पार्टी की सरकार ने जर्मनी के साथ युद्ध विराम सम्बन्धी समझोता कर लिया पर अन्य देशो के मध्य युद्ध जारी रहा

ब्रिटेन, फ्रांस और अमरीका ने जुलाई, 98 मे सयुक्त सैनिक अभियान आरम्भ किया। जर्मनी और उसके मित्र देश परास्त होने लगे। सितम्बर मे बुल्गारिया युद्ध से अलग हो गया और अक्तूबर में तुर्की ने आत्मसमर्पण कर दिया। ऑस्ट्रिया-हगरी के सम्राट ने 3 नवम्बर, 98 को आत्मसमर्पण कर दिया। जर्मनी में क्रांति हो गयी और वहां गणतन्त्र स्थापित हुआ। नयी जर्मन सरकार ने 11 नवम्बर,1918 को युद्धविराम-सन्धि पर हस्ताक्षर किये और इस प्रकार युद्ध समाप्त हो गया।

प्रथम विश्व युद्ध की शांति संधियाँ-

जनवरी से जून, 1919 तक विजेता शक्तिया जो मित्र राष्ट्र थी की बैठको दौर चला और फ़्रांस में ये बैठके पहले वारसाईं और फिर पेरिस में संपन्न हुई वैसे तो इस शांति सम्मलेन में कुल 27 देशो के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया परन्तु शांति समझोतों की शर्ते मुख्या रूप से ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका के प्रतिनिधियों ने ही तय की

28 जून 1919 को ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री लोयड जोर्ज (Loyed George),अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति वुडरो विल्सन तथा तत्कालीन फ़्रांसिसी प्रधानमंत्री क्लिमेसयु ने इस संधि पर हस्ताक्षर किये पराजित देशो के प्रतिनिधियों ने बैठक में भाग नहीं लिया विजेता मित्र राष्ट्रों ने रूस को भी इस सम्मलेन से अलग रखा और मनमाने ढंग से विजेता शक्तियों ने पराजित देशो पर संधियों की शर्ते लाद दी ,संधि में जर्मनी और उसके सहयोगी देशो को आक्रमण का

दोषी माना गया तथा अल्सेस और लोरेन फ़्रांस को लौटा दिए गए जर्मनी में स्थित सार नमक कोयले की खदाने 15 वर्षो के लिए फ़्रांस को दे दी गयी, जिनका दायित्व राष्ट्र संघ की सोंपा गया जर्मनी अपने युद्ध के पहले के कुछ भाग डेनमार्क, बेल्जियम, पोलेंड और चेकोस्लोवाकिया को देने के लिए मजबूर हुआ जर्मनी की सैनिक संख्या सिमित कर दी गयी और उससे वयुयानो और पनडुब्बियो को रखने का अधिकार छीन लिए गए और उसके उपनिवेश टेगो और कैमरून ब्रिटेन और फ़्रांस ने आपस में बाँट लिये युद्ध के दौरान हुई क्षति के लिए जर्मनी से 6 अरब, 60 करोड़ पौंड की राशि बतौर जुर्माना वसूली का कहा गया

विश्व-युद्ध की समाप्ति-

जब यद्ध अपने चरम पर था तो कि कई देशों द्वारा शाति के प्रयास भी किये गये परंतु सभी प्रयास असफल रहे। जनवरी,1918 में अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति बुडरो विल्सन(1856-1924) ने एक शांति-कार्यक्रम का प्रस्ताव रखा जिसमें देशों के बीच खुले तौर पर बातचीत करना, जहाजरानी की स्वतन्त्रता, शस्त्रास्त्रों में कटौती, बेल्जियम की स्वतन्त्रता, फ्रांस को आलसेस-लॉरेन वापस करना, सभी राज्यों की स्वाधीनता की सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना, आदि बातें शामिल थी। युद्ध की समाप्ति पर इनमें से कछ बातें मान ली गयीं।

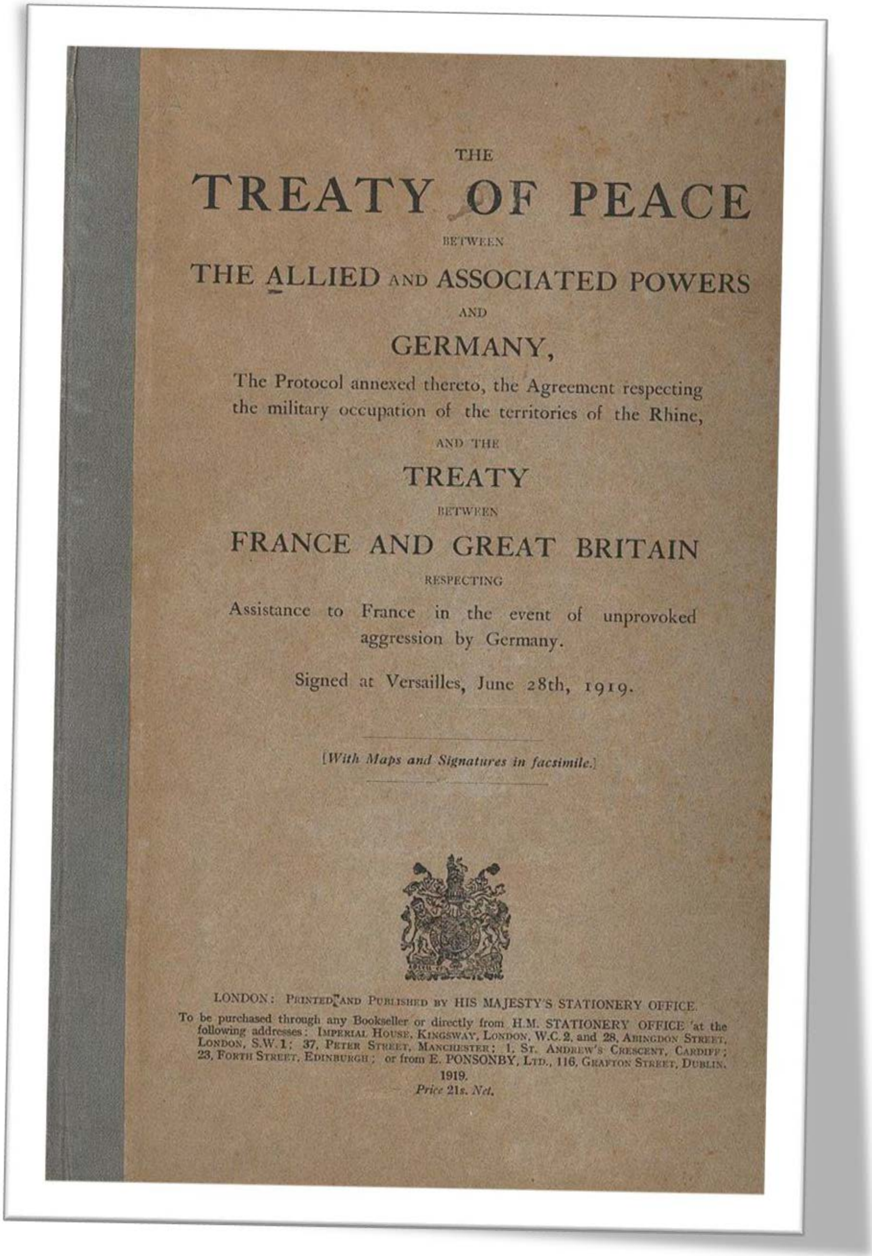

THE

TREATY OF PEACE

BETWEEN

THE ALLIED AND ASSOCIATED POWERS

AND

GERMANY,

The Protocol annexed thereto, the Agreement respecting the military occupation of the territories of the Rhine,

AND THE

TREATY

BETWEEN

FRANCE AND GREAT BRITAIN

RESPECTING

Assistance to France in the event of unprovoked aggression by Germany.

Signed at Versailles, June 28th, 1919.

[*With Maps and Signatures in facsimile.*]

LONDON: PRINTED AND PUBLISHED BY HIS MAJESTY'S STATIONERY OFFICE.

To be purchased through any Bookseller or directly from H.M. STATIONERY OFFICE at the following addresses: IMPERIAL HOUSE, KINGSWAY, LONDON, W.C.2, and 28, ABINGDON STREET, LONDON, S.W.1; 37, PETER STREET, MANCHESTER; 1, ST. ANDREW'S CRESCENT, CARDIFF; 23, FORTH STREET, EDINBURGH; or from E. PONSONBY, LTD., 116, GRAFTON STREET, DUBLIN.

1919.

Price 21s. Net.

फोटो:20 (*वर्साय की सन्धि का इंगलिश कवर पेज*)

12. प्रथम विश्व युद्ध मे एरिनपुर छावनी का योगदान

संदर्भः *वेबसाईट-researchingww1.co.uk*

July -December 1915 Direction- war Diary,January 1916- Feb. 1919 war Diary

Regimental per month tax(कर) विवरण -war Diary

Avidance for the indian army list taken by- Homeward mail from india, chaina and the east, May 1910 for Researching of British Officers of the...

43वी एरिनपुर रेजमेन्ट का गठन सन-1860 मे बनी एक इन्फेंट्री के अनियमित बल के रूप मे हुआ था जिसे सन 1903 मे बदल कर 43वी एरिनपूरा रेजिमेंट कर दिया गया जिसे अल्प समयावधि अर्थात मात्र 19 वर्ष मे पश्चात् ही 14 अक्टूबर,सन-1922 को इसे भंग कर दिया गया जो कि एक सोची समझी रणनीति मालूम पड़ती है या ये माना जा सकता है कि इसे समाप्त करने कि बिसात तो काफी पहले ही बिच चुकी थी परन्तु इसे पूर्ण रूप से भंग सन 1922 मे किया गया जिसे लार्ड किचनर के नेतृत्व में किचनर सुधारो का नाम दिया गया इन सुधारो कि आड़ मे एरिनपूरा छावनी के सैनिको कि एकता, संघटनात्मक विचारधारा, विद्रोह/क्रांति व् देश प्रेम को समाप्त करने कि कोशिश कि गयी क्योकि जिस एरिनपुरा छावनी के सैनिको ने सन 1857 कि क्रांति मे अपना अभूतपूर्व योगदान दिया और स्वतंत्रता कि ज्वाला को प्रज्ज्वलित किया ,जिसके लिए यहाँ के आदिवासी मीणा, भील और अन्य सैनिको ने अपना तन-मन-धन सर्वस्व न्योछावर करके अपने प्राणों कि आहुति दी उन क्रन्तिकारी वीर सैनिको कि स्मृति स्वरुप एरिन्पुरा रेजिमेंट को भविष्य मे बनाये रखने के बजाय इसे भंग कर दिया गया,क्योकि ये सर्वविदित है कि मीणा बाहुल्य युक्त एरिनपुरा

रेजिमेंट अपनी बहादुरी के लिए प्रसिद्द थी जहा के सैनिको ने अपना सर्वस्व त्याग कर देशभक्ति मी मिसाल कायम कि थी इसे इस तरीके से भंग कर देना इस रेजिमेंट के साथ अन्यायपूर्ण कृत्य प्रतीत होता है इस रेजिमेंट को इस तरीके से भंग कर देना इस रेजिमेंट के सैनिको का 1857 कि क्रांति मे भाग लेना और इसके सैनिको का देशभक्त होना अंग्रेजो और स्थानीय शासको और सत्ताओ कि आँख मे खटकना माना जा सकता है कदाचित अंग्रेजो कि ये सोच रही को कि अगर इस एरिनपूरा रेजिमेंट कि भविष्य मे जारी रखा जाता है तो ये उनके लिए एक बहुत बड़ा खतरा पैदा कर सकती है जिस कारण अंग्रेज तो अपने विरुद्ध उठी हुई आवाज को दबाने के लिए आगे आये ही साथ ही साथ राजपूताने कि कई देशी रियासतों और शासको ने इसे समाप्त करने के अंग्रेजो का भरपूर समर्थन और सहयोग दिया क्योकि राजपूताने कि कोई भी रियासत इन दिलेर आदिवासी देशभक्तों कि हितेषी नहीं रही क्योकि इतिहास के पन्नो को पलटने से हम पाते है कि ये राजपूत रियासते मीनो और अन्य आदिवासियों कि हितेषी कभी नहीं रही सदियों से इनका संघर्ष चलता रहा है आदिवासी कौम हमेशा से ही स्वाभिमानी और बहादुर रही है और ये अपनी मात्रभूमि,देशभक्ति और जल-जंगल और जमीन के लिए किसी भी हद तक जा सकती है क्योकि आदिवासीयो और शासकीय सत्ताओ का संघर्ष प्राचीन काल से चला आ रहा है जिसमे मीणा और राजपूतो का संघर्ष उल्लेखनीय है

अतः ये मानना कतई गलत नहीं हो सकता कि अंग्रेजो कि हितेषी रियासते इसे भंग करवाने मे शामिल ना रही हो क्योकि इस तरह का विद्रोह मे अन्य टुकड़ियों ने भी किया था जबकि उन्हें भंग नहीं किया गया यहाँ एक विचारनीय बिंदु है कि राजपूत ,जाट, मराठा, पंजाब, असम आदि के नाम से स्वतंत्र भारत कि सशत्र सेनाओ मे टुकडिया आज भी कार्यरत है क्या कारण रहे ? कि एरिन्पुरा या मीणा बटालियन वर्तमान कि सशत्र सेनाओ मे अस्तित्व मे नहीं है इन कारणों को जानने की किसी ने भी कोशिश नही की –

पुस्तक- Role of Indian Army in the First world war, page -14 के अनुसार

ब्रिटिश भारतीय सेना की टुकड़ियो के सैनिक प्रथम विश्व युद्ध में अलग अलग मोर्चो पर लडे , जिसके लिए लार्ड किचनर ने युद्ध के मध्यनज़र रखते हुए भारतीय सैनिको की ट्रेनिंग में सुधार के तहत भारतिय सेना के निम्नलिखित दस डिवीज़न बांये गये-

01.पेशावर डिवीज़न-1903 में प्रथम (पेशावर) डिवीजन के रूप में गठित की गयी, पश्तून जनजातियों और पड़ोसी अफ़ग़ानिस्तान साम्राज्य के साथ कई संघर्षों के कारण यह क्षेत्र रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण और अस्थिर था। ब्रिटिश भारतीय सेना ने ब्रिटिश हितों की रक्षा और औपनिवेशिक नियंत्रण बनाए रखने के लिए पेशावर में एक महत्वपूर्ण सैन्य उपस्थिति बनाए रखी। पेशावर डिवीजन इन कार्यों के लिए और विश्व युद्धों के दौरान अन्य क्षेत्रों में तैनात होने से पहले नई बटालियनों के प्रशिक्षण के लिए आवश्यक था।

02.रावलपिंडी डिवीज़न-ब्रिटिश भारतीय सेना का रावलपिंडी डिवीजन, जिसे आधिकारिक तौर पर द्वितीय (रावलपिंडी) डिवीजन के नाम से जाना जाता था**,** किचनर **सुधारों**के तहत 1903 में स्थापित एक नियमित सैन्य इकाई थी। रावलपिंडी स्वयं एक रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण गैरीसन शहर था और ब्रिटिश भारतीय सेना की उत्तरी कमान के शीतकालीन मुख्यालय के रूप में कार्य करता था।

03.लाहौर डिवीज़न-तीसरा **(लाहौर) डिवीजन** ब्रिटिश भारतीय सेना का एक महत्वपूर्ण पैदल सेना डिवीजन था, जिसकी स्थापना 1852 में हुई थी और यह प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अपनी व्यापक सेवा के लिए जाना जाता था। यह मुख्य रूप से एक प्रशासनिक संगठन था जो आवश्यकता पड़ने पर क्षेत्रीय बल प्रदान करता था।

04.क्वेटा डिवीज़न-चौथा (क्वेटा) डिवीज़न ब्रिटिश भारतीय सेना का एक पैदल सेना डिवीज़न था, जिसका गठन जनरल किचनर ने भारत के कमांडर-इन-चीफ रहते हुए किया था। क्वेटा ब्रिटिश भारतीय सेना, विशेष रूप से उत्तर पश्चिमी सीमांत क्षेत्र के प्रबंधन के लिए, एक महत्वपूर्ण सैन्य छावनी और मुख्यालय था।

05.महू डिवीज़न-महू, ब्रिटिश राज के दौरान ब्रिटिश भारतीय सेना की एक प्रमुख छावनी और दक्षिणी कमान की 5वीं (महू) डिवीजन**का मुख्यालय था**। इस छावनी की स्थापना 1818 में इंदौर के होल्करों के साथ मंदसौर की संधि के बाद हुई थी।

06.पूना डिवीज़न-ब्रिटिश राज के दौरान, पुणे क्षेत्र में प्राथमिक इकाई **ब्रिटिश भारतीय सेना की छठी (पूना) डिवीजन** थी । पुणे (तब पूना) शहर एक महत्वपूर्ण सैन्य अड्डा था और बॉम्बे आर्मी की दक्षिणी डिवीजन का मुख्यालय था, जो बाद में 1903 के किचनर सुधारों के बाद छठी (पूना) डिवीजन बन गई।

07.मेरठ डिवीज़न-मेरठ डिवीजन पहली बार 1829 में भारतीय सेना की सूची में शामिल हुआ। प्रारंभ में यह एक प्रशासनिक संगठन था, जो बाद में एक प्रमुख क्षेत्रीय गठन के रूप में विकसित हुआ।

08लखनउ डिवीज़न-लखनऊ का एक महत्वपूर्ण सैन्य इतिहास रहा है, विशेष रूप से 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान एक प्रमुख केंद्र के रूप में, जिसमें प्रसिद्ध घेराबंदी और उसके बाद शहर पर अंग्रेजों का पुनः कब्ज़ा शामिल है। आधुनिक भारतीय सेना लखनऊ छावनी में अपनी मज़बूत उपस्थिति बनाए रखती है, जो शहर के सैन्य बल के साथ लंबे समय से जुड़े होने को जारी रखती है।

09.सिकंदराबाद डिवीज़न-1947 में भारत की स्वतंत्रता और 1948 में हैदराबाद राज्य के विलय (ऑपरेशन पोलो) के बाद, सिकंदराबाद छावनी आधुनिक भारतीय सशस्त्र बलों के

अधिकार क्षेत्र में आ गई और आज भी एक महत्वपूर्ण सैन्य केंद्र बनी हुई है। रक्षा प्रबंधन महाविद्यालय (सीडीएम) वर्तमान में वहाँ स्थित एक उल्लेखनीय सैन्य संस्थान है।

10.बर्मा डिवीज़न- ब्रिटिश भारतीय सेना का बर्मा डिवीजन द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मौजूद था, और इसमें विभिन्न ब्रिटिश और भारतीय सैनिक शामिल थे। बर्मा अभियान में कई डिवीजनों ने भाग लिया, जिनमें से कुछ को 26वीं भारतीय डिवीज़न और 77वीं भारतीय इन्फैंट्री ब्रिगेड (जिन्हें "चिंडिट" के नाम से जाना जाता था) सहित बर्मा अभियान के लिए भेजा गया था। ये इकाइयाँ मुख्य रूप से ब्रिटिश सेना के तहत काम करती थीं, जिसमें भारतीय उप-महाद्वीप के सैनिक शामिल थे, और उन्होंने बर्मा को वापस पाने के लिए भीषण लड़ाई लड़ी।

सन्दर्भ : Mac Munn, Maj. GF., The Armies if india, Adam and Charles Black, London,1911, pp.1-173. के अनुसार-

भारतीय सिपाही प्रथम विश्व युद्ध से पहले भी भारत से बाहर विदेशी अभियानों में भी गए थे और वहा पर मोर्चा संभाला था,जैसे सन-1762 में फिलिपिन्स, सन-1779 में सुमात्रा , सन-1796 में एम्बोयना, सन-1852 में बर्मा, सन-1840–42 और 1860 में चीन आदि जगहों पर गए और अपना योगदान दिया भारतीय सैनिको ने ब्रिटिश सेना के हिस्से के रूप में कई देशो के खिलाफ लड़ाइयाँ लड़ी और कुछ महत्वपूर्ण जीत भी हासिल की जैसे की सन-1795 में डच से लंका को जीतना इसके अलावा सन-1800 में फारस, सन-1801 में मिश्र और सन-1839 में काबुल में साह शुजा को गद्दी पर बिठाया, सन 1840-42 में भारतीय सिपाही अफीम युद्ध के लिए चीन भी गए, 1852 में बरमा के दुसरे युद्ध में भी गए और बाद में 1856 में पर्शिया के युद्ध में, सन 1860 में भारतीय टुकडियो ने दुसरे चीन- भूटान युद्ध में भी भाग लिया

सन्दर्भ: Imperial Gazatiar of india (1808-1931), खंड-12,पेज-27

ब्रिटिश साम्राज्य, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, उपनिवेश ,सुमनेर पेज सं.–15

Barthor P, Micheal Burn, Jeffrey(1979)

Indian Infantry Regiments (1860-1914),Osprey Publication, ISBN-0-85045-307-0

Sumner Ian (2001) The Indian Army (1914-1917),Osprey Publication

ISBN-1-84-176-196-6

सिरोही का इतिहास – पहला प्रकरण, पेज-56-57 (एरिनपूरा)

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 43वी एरिनपूरा रेजिमेंट ने 5वी मह डिवीज़नके हिस्से के रूप में अपनी सेवाए दी थी तथा प्रथम विश्व युद्ध में इस रेजिमेंट ने मेसोपोटामिया अभियान के दौरान अपनी प्रमुख भूमिका निभाई।

पहली या नियमित बटालियन को मुख्या रूप से एस्कॉर्ट ड्यूटी और संचार लाइनों की रखवा ली के लिए तैनात किया गया था हालांकि सितम्बर 1917 में ये दूसरी लड़ाई में मौजूद थी .सन 1917 में एक दूसरी बटालियन का गठन किया गया युद्ध कालीन इकाई में आधुनिक हथियारों के मामले में अनुभव की कमी के कारण या या शायद इसकी 1857 के विद्रोह में हिस्सा लेने के

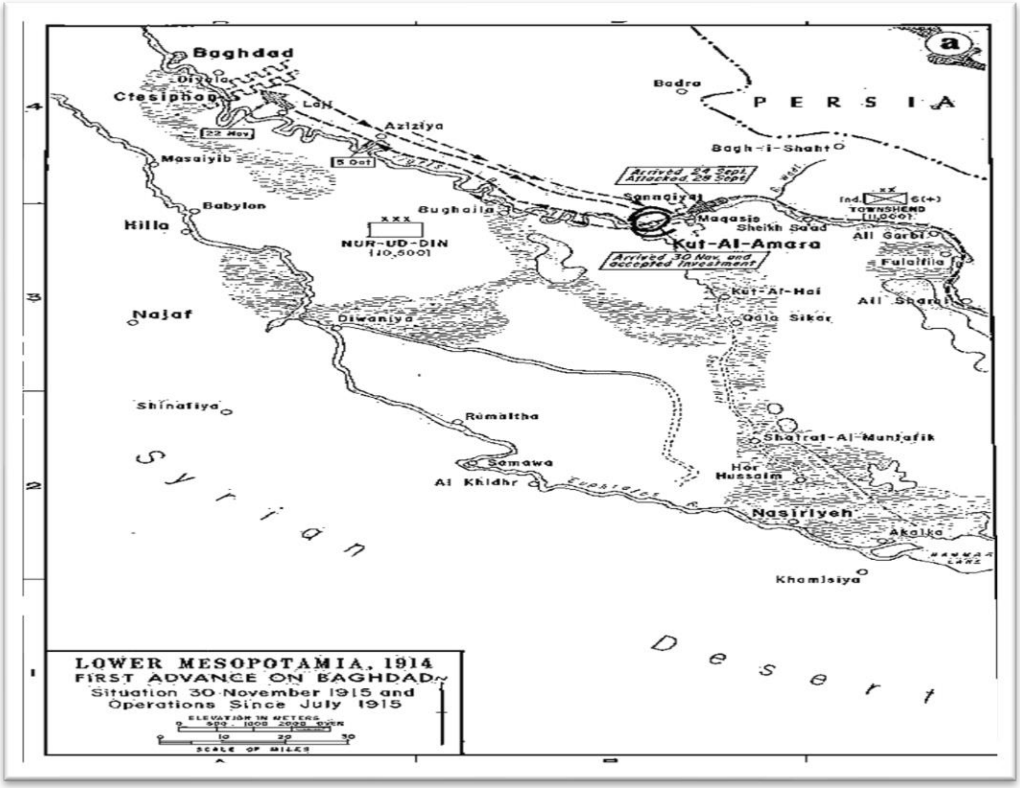

फोटो:21 *(1914 के युद्ध काल का मेसोपोटामिया अभियान का नक्शा)*

कारण इसे मुख्या रूप से बॉम्बे में गार्ड और अन्य सुरक्षा उद्देश्यों के लिए नियोजित किया गया था जुलाई 1914 में एरिनपुरा रेजिमेंट जोधपुर-सिरोही राजपूताने की रियासतों की सीमा अर्थात वर्तमान राजस्थान के सिरोही और पली जिले की सीमा पर तैनात थी 43 वी एरिनपुरा रेजिमेंट एक इंडियन इन्फेंट्री जिसने प्रथम विश्व युद्ध में अपनी अविस्मरनीय सेवाए दी थी जब अगस्त 1914 में प्रथम विश्व युद्ध की सुरुआत हुई उस समय नसीराबाद ब्रिगेड 5वी महू डिविजन का हिस्सा थी तथा इसके उपरांत भी 27 जुलाई 1915 की 43 वी एरिनपुरा रेजिमेंट को चमन (बलोचिस्तान)के लिए रवाना होने का आदेश मिला जब ये सैनिक एरिनपूरा से रवाना हो रहे थे तो इनमें आस पास के क्षेत्र के मीना सैनिक भी बहुतायत में थे जब ये सैनिक युद्ध के रवाना हुए तो इनके परिजन इन्हें विदा करने आये और मीना समुदाय के

सैनिको को उनके परिजनओ ने ढोल नगाड़े बजा के अपने सैनिको को विदा किया तथा एरिनपूरा के सैनिको ने यहाँ से जाके दूसरी क्वेटा इन्फेंट्री चौथी (क्वेटा) डिवीज़न के भाग के साथ अपनी सेवाए दी, जैसे की पांचवी महू डिवीज़न, चौथी क्वेटा डिवीज़न दोनों ही युद्धकाल में मौजूद थी

43वी एरिनपुरा रेजिमेंट 5,अगस्त 1915 को करांची से किराये के परिवहन ''एग्रा'' नामक जहाज पर स्वर हो कर 10 अगस्त 1915 को बसरा , मेसोपोटामिया,(ईराक) पहुंची तथा महीने के बाकि दिनों में बसरा के कुर्नाह में रुकी ,मेसोपोटामिया पहुचने के बाद एरिनपूरा रेजिमेंट 30 वी भारतीय डिवीज़न में शामिल हो गयी

(जुलाई-दिसम्बर 1915 War Diary)-सुरुआत में 43 वी एरिनपूरा रेजिमेंट को कुर्नाह ,बसरा और अम्वाह क्षेत्र में में संचार लाइनों की रखवाली के लिए तैनात किया गया इसके पश्चात रेजिमेंट की 2 कम्पनिया 19 अक्टूबर 1915 को हकीका चैनल में चली गयी जहां पर ये कम्पनिया रुकी और ग्फरात नदी पर सैना के काफिलो के लिए अस्कोर्ट प्रदान किया तथा उस समयावधि में इन कम्पनियों का मुख्यालय कुर्नाह में रहा और अन्य दो कम्पनियां अज्वः में रही

(जनवरी,1915 से फरवरी,1919 के बिच के समय की विस्तृत जानकारी युद्ध डायरी को पढ़ा जा सकता है) रेजिमेंट ने 1916 का अधिकांश समय निसिरिया में बिताया ,एरिन्पुरा रेजिमेंट ने 20 दिसंबर 1916 को हकीका में 114 वी मराठा रेजिमेंट को सहायता देने के लिए एक कम्पनी भेजी जिसने एक बार फिर फरात नदी फरात नदी पर अस्कोर्ट प्रदान किया तथा हकिलिया में टुकड़ी अप्रेल1917 को रेजिमेंट में फिर से शामिल हो गयी , अप्रेल 1917 के बाद रेजिमेंट निसिरिया में तबतक रही जब तक की वे 1917 के अंत में कराडा में 33वी इन्फेंट्री ब्रिगेड में नहीं चले गए

सन 1917 में मीना बटालियन की जब 8 कम्पनियों को लेकर एरिनपुरा छावनी से शांताक्रुज छावनी जाने का आदेश मिला तो सब सैनिको के सगे सम्बन्धी परिवारजन रिश्तेदार एकत्रित हुए और सभी मताओ बहनों और भाई बंधुओ ने गौतम बाबा के जयकारे लगाये और बड़ी ही बहादुरी और हर्षोल्लास के साथ सैनिको को तिलक लगा कर विदा किया गया रवानगी के दिन जोशीले ढोल और बिगुल बजे तो मेएन सैनिको में यूद्ध लड़ने का जोश जगा और सारे सैनिक गाड़ियों में बैठ कर रवाना हो जाने के बाद छावनी के खाली पड़े टेंटो को देख कर मीना समाज के लोगो ने उनकी विजय के लिए गीत गाए और उनके सकुशल लौटने की कामना की और गौतम बाबा से अरज की जिसके बोल कुछ इस तरह है-

डेरे डेरे फरियो रे ,नौकरियां नजरे नी आया रे,
नौकरियां पासा आवे तो थारे ईडो सोना रो चडावे |
मैनी रो जायो जो जंग जीतवा जावे रे,
बाबा था में हास वे तो रे नौकरियां पासा लावे रे |

भावार्थ

(एक-एक सैनिक टेंट में देखने पर सारे टेंट खाली मिले इनमे कोई नज़र नहीं आया क्योकि सबयुद्ध के लिए निकल चुके है उनकी सलामती के लिए गौतम बाबा (मारवाड़ गोडवाड मे मीना समाज के आराध्य देव) से प्रार्थना की जा रही है की मैनी के जाये (मीना सैनिक),नौकरिया (सेना की नौकरी करने वाले मीना सैनिक) सही सलामत युद्ध से जंग जीत कर वापस घर आ जाये अगर गौतम बाबा में शक्ति है तो उन्हें सही सलामत जीत कर वापस लायेगे और अगर ये सैनिक जीत कर सही सलामत घर वापस आते है तो गौतम बाबा के मंदिर पर सोने का कलश चढ़ाएंगे)

इस युद्ध में जितने सनिक लड़ने गए थे उन में से 62000 सैनिक मारे गए थे और अन्य 67000 घायल हुए थे कुल मिला कर 74187 भारतीय सैनिको की मौत हुई थी ब्रिटिश उपनिवेश होने

के नाते भारतीय सेना ने प्रथम विश्व युद्ध में यूरोपिय, भुमाध्यसगारिय , और मध्य पूर्व के संघर्षो में में बड़ी संखिया में सैनिको का योगदान दिया भारतीय सेना ने पूर्वी अफ्रीका और पच्छिमी में भी जर्मन साम्राज्य के खिलाफ लड़ाई लड़ी

प्रथम विश्व युद्ध में लगभग 13 लाख भारतीय सैनिको ने अंग्रेजो के लिए हिस्सा लिया था फ़्रांस ,बेल्जियम, मेसोपोटामिया, मिश्र, गेलीपोली, फिलिस्तीन, और सिनाई जैसे विविध स्थानों पर अपनी सेवाये दी अंग्रेजो के लिए लड़ने वाले 13 लाख सैनिको में से 74187 भारतीय सैनिको ने अपनी जान गँवाई थी भारतीय सेना के कमांडर इन चीफ सर क्लार्क लौचिंलैक ने एक बार कहा था की अगर ब्रिटेन के पास भारतीय सेना नहीं होती तो वे युद्ध में बाख नहीं पाते वे नायक थे कुछ पहचाने गए पर अधिकतर गुमनाम ही रहे युद्ध के दौरान भारतीय सेना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई भारतीय सेना के 69,241 सैनिक घायल होकर लौटे थे जिनमे मारवाड़ गोडवाड के मेएन सैनिक बहुतायत में थे प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय ने कुल 11 विक्टोरिया क्रोस जीते विक्टोरिया क्रोस वीरता के लिए प्रदान किया जाने वाला सर्वोच्च

13. द्वितीय विश्व युद्ध

सन्दर्भः *पुस्तक- विश्व प्रसिद्ध युद्ध*

लेखक- राजेन्द्र कुमार ' राजीव ' अध्याय- द्वितीय विश्व युद्ध, पेज- 24-29

प्रथम विश्म-पुद्ध के बाद लगभग 20 वर्षों तक शांति रही परंतु इस अंतराल में वे देश भीतर ही भीतर सुलगते रहे, जिन्हें वारसाई-संधि की कठोर शर्तों के कारण आहत और अपमानित होना पड़ा था। जर्मनी में हिटलर के आते ही जातीय श्रेष्ठता, स्वतंत्रता तथा सीमा-सुरक्षा जैसे अनेक सवाल खड़े हुए, जिनके फलस्वरूप न केवल जर्मनी में ही बल्कि इटली, आदि अनेक देशों में '**घोर राष्ट्रवाद**' पनपने लगा। इसी से फासिज़्म अर्थात् नाज़ीयाद का उदय हुआ वस्तुतः द्वितीय विश्व-युद्ध जातीय श्रेष्ठता, राष्ट्रवाद और प्रतिशोध के इन्हीं संदर्भों की कहानी है जिसके महाविनाश के स्मृतिचिन्ह आज भी ताजा हैं- जापान के हिरोशिमा और नागासाकी की बर्बादी के खंडहर और आणविफ अस्त्रों के तले जन्म लेती विकलांग पीढ़ियाँ इस बर्बादी की कहानी बयान कर रही है

प्रथम विश्व-युद्ध (1914-1918) की भाति द्वितीय विश्व-युद्ध भी यूरोप से शुरू हुआ और बाद में पूरे विश्व में फैल गया। प्रथम विश्व-युद्ध के बाद हुई वारसाई-सधि द्वारा बलात थोपी गयी शर्तों से जर्मनी परेशान था। हिटलर के आते ही उसे नया बल मिला और उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला तेज और हिंसक होती गयी। मंचूरिया पर आक्रमण से लेकर चेकोसलोवाकिया पर अधिकार करने तक पश्चिमी देशों ने जापान, इटली और जर्मनी के सभी आक्रमणो को मौन सहमति दी थी जिससे फासिस्ट देशों -जर्मनी, इटली की महत्त्वाकांक्षाएं बढती गयीं। वे नये सिरे से विश्व के पुर्विभाजन की योजना बना रहे थे। इस प्रकार स्थापित

साम्राज्यवादी शक्तियों ब्रिटेन, फ्रांस, आदि से उनका टकराव शुरू हो गया। ऑस्ट्रिया तथा चेकोस्लोवाकिया को साथ मिला लेने के बाद हिटलर ने पोलैंड को आतंकित करना शुरू कर दिया। ब्रिटेन तथा फ्रांस ने महसूस किया कि हिटलर के बुलंद इरादो की कोई सीमा नही है, इसीलिए मार्च, 1939 में उन्होंने पोलैंड के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किये तथा जर्मनी द्वारा आक्रमण करने पर उसकी सहायता करने का निश्चय किया। अगस्त, 1939 में जर्मनी और रूस के बीच एक-दूसरे पर आक्रमण न करने तथा तटस्थ रहने की संधि हुई।

द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारंभ-

जर्मनी ने पोलेंड पर आक्रमण कर दिया और जर्मन सेनाए 1 सितम्बर, 1939 को पोलैंड में घुस गयीं। अतः ब्रिटेन और फ्रांस ने 3 सितम्बर को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। पोलैंड पर आक्रमण के साथ द्वितीय विश्व-युद्ध आरम्भ हुआ। पोलैंड को बाहर से सहायता न पहुंचने के कारण जर्मन सेनाओ ने उसे पूरी तरह से जीत कर अपने कब्जे मे ले लिया। युद्ध की घोषणा के बावजूद कई महीनो तक कोई विशेष युद्ध नहीं हुआ। इसलिए सितम्बर, 1939 और अप्रैल,1940 के बीच के युद्ध को **'नकली युद्ध'** की सज्ञा दी गयी।

जर्मनी ने 9 अप्रेल 1940 को नॉर्वे और डेनमार्क पर हमला कर दिया ,ब्रिटेन व फ़्रांस ने नॉर्वे की सहायता के लिए अपनी सेनाए भेजी परंतु इन सेनाओ को वापस बुलाना पड़ा क्योंकि इनकी जरूर फ्रांस मे ज्यादा थी 10 जून, 1940 तक नॉवें का प्रतिरोध भी समाप्त हो गया और डेनमार्क ने बिना किसी लडाई के आत्मसमर्पण कर दिया। बेल्जियम, लक्समबर्ग और हॉलैंड पर मई के आरम्भ मे आक्रमण हुआ और महीने के अन्त तक वे पूरी तरह जर्मनी के अधिकार मे आ गये। अब तुरन्त ही जर्मन सेनाएं फ्रांस में घुस गयी और 14 जून, 1940 को बिना किसी बड़े युद्ध के जर्मनी ने पेरिस पर अधिकार कर लिया। इस बीच इटली भी अपने मित्र-देश जर्मनी की ओर से युद्ध में शामिल हो गया। फ्रांस ने 22 जून, 1940 को अत्मसमर्पण कर दिया

और उसने जर्मनी के साथ एक युद्ध विराम-संधि पर हस्ताक्षर कर दिये। फ्रांस को विभाजित करके जर्मनी ने एक हिस्से को अपने आधिपत्य मे रखा और शेप भाग फ़्रांस की सरकार के अधीन रहा। वाइची को राजधानी बना दिया गया। फ्रांस की पराजय होते ही जर्मनी यूरोपीय महाद्वीप की सबसे बड़ी शक्ति हो गया।

द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीय सेनिको का योगदान-

जिस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैनिको ने अपनी वीरता का परिचय दिया उसी प्रकार द्वित्य विश्व युद्ध में भी भारतीय सैनिको ने अपनी वीरता और बहादुरी का परिचय दिया

ब्रिटेन की लड़ाई-

फ़्रांस के पतन के बाद युरोप में केवल ब्रिटेन ही प्रमुख शक्ति शेष रह गया था इस पर भी अपना अधिपत्य ज़माने के लिए सन 1940 में जर्मन वायु सेना ने ब्रिटेन पर हमला कर दिया इस हमले की प्रतिक्रिया में ब्रिटेन ने भी जवाबी हवाई हमला कर दिया जिसमे ब्रिटेन ने जर्मनी के बढ़ते कदमो को थाम दिया किन्तु जर्मनी बाल्कन प्रायद्वीप के देशो –यूनान , यूगोस्लाविया, बुल्गारिया, और उत्तरी अफ्रीका के काफी घगो पर अधिकार करने में सफल रहा

रूस पर आक्रमण-

एक दुसरे पर आक्रमण न करने के समझोते के बावजूद जर्मनी ने 22 जून 1941 को रूस पर हमला कर दिया रूस इस आकस्मिक और अपत्याषित हमले से स्तब्ध था प्रारंभ में जर्मनी को कुछ लाभ हुआ और रुसी सेनाओ को काफी नुकसान हुआ। स्टेलिनग्राद (लेनिनग्राद)पर्घेरा दल दिया दिया गया दिसंबर 1941 को जर्मन सेनाये मोस्को से कुछ ही किलोमीटर दूरी पर थी की हिटलर का सपना चकनाचूर हो गया क्योकि सोवियत सेनाओ ने 6 दिसम्बर 1941 को

जवाबी कर्यवाही करते हुए जर्मन सेनाओ पर धावा बोल दिया और जर्मन सेना को पश्चिम में 400 किमी पीछे धकेल दिया इस कार्यवाही में जेमानी के 3 लाख सैनिक मारे गए

दूसरे मोर्चे की लड़ाई –

बाकि के क्षेत्रो में फासिस्ट देशो को हार का सामना करना पड़ा जापान हवाई द्वीप पर कब्ज़ा करने में असफल रहा, मई,1943 में मित्र राष्ट्रों ने इटली की सेनाओ पर आक्रमण करके उन्हें आत्म समार्पण के लिए बाध्य किया इस्ससे पूर्व इटली में मुसोलिनी की सत्ता परिवर्तन कर नयी सरकार की स्थापना हो चुकी थी जिसने बिना शर्त मित्र-राष्ट्रों को समर्थन दिया ,6 जून 1944 को एक लाख से अधिक ब्रिटिश और अमेरिकी सैनिक फ़्रांस में नोरमंडी के समुद्र तट पर उतरे और युद्ध की सुरुआत से पहले ही उत्तरी फ़्रांस में उन्होंने रेलवे पुलों पर भारी बमबारी की ताकि जर्मनी की सेनाओ को आगे बढ़ने से रोका जा सके युद्ध के इस मोर्चे पर जर्मनी हार की कगार पर आ खड़ा हुआ 3 सितम्बर को मित्र राष्ट्रों की सेनाओ ने बेल्जियम और होलेन्ड के अन्दर प्रवेष किया पूर्व में सोवियत सेना और पश्चिम में अन्य मित्र राष्ट्र सेनाये बर्लिन में घुसती रही , 24 अप्रैल 1945 को एक भीषण युद्ध के बाद रुसी सैनिको ने बर्लिन पर अपना अधिकार कर लिया **30 अप्रेल 1945 को हिटलर ने अपने भूमिगत किले में आत्महत्या कर ली** और मई 1945 की सुरुआत में ही जर्मन सेनाओ ने आत्मसमर्पण करना शुरू कर दिया और अंतत **8 मई 1945 को जर्मनी ने पूर्ण आत्मसमर्पण कर दिया**

जापान का आत्मसमर्पण-

जर्मनी की पराजय के पश्चात् भी एशिया में लगभग 3 महीने तक युद्ध चलता रहा क्योकि जापान के पास अभी भी विशाल सेना थी तत्कालीन **अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमेन** ने एक एक भयानक तरीका सोचा की जापान विजय के लिए लाखो सैनिको को मौत के मुह में

भेजने के बजाय क्यो ना **परमाणु बम** का प्रयोग करके युद्ध को शीघ्र समाप्त किया जाए **6 अगस्त 1945 को अमेरिका ने जापान के दो शहरो हिरोशिमा और 9 अगस्त1945 को नागासाकी पर परमाणु बम गिरा दिए** ये दोनों शहर बर्बाद हो गए **जिसमे 1,20000 से अधिक लोग मारे** गए अंतत जापान ने 14 अगस्त 1945 को अमेरिका के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और उसके बाद द्वितीय विश्व वुद्ध समाप्त हो गया

फोटो:22 -(*सितम्बर 1945 सिंगापुर में बंधक बनाये गये जापान के सैनिक और 5वी डिविजन का सैनिक इनकी रखवाली करते हुए*)

द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम-

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व मानचित्र पर दो नयी महाशक्तियो का उदय हुआ- सोवियत संघ और अमेरिका इन दोनों महाशाक्तियो में दो अलग-अलग विचारधारा पनपी रूस में साम्यवाद और अमेरिका में पूंजीवादी विचारधारा को अपनाया ये दोनो विचारधाराएँ एक दुसरे के विपरीत थी जिस कारण इन दोनों महा शक्तियों में मतभेद और भी गहराने लगे

इन दोनों महाशक्तियो ने विश्व को अपने अपने प्रभाव क्षेत्र में विभाजित किया जिस कारण शीत युद्ध (Cold War) का प्रारंभ हुआ

युद्ध में हुई अपार क्षति के कारण ब्रिटेन, फ़्रांस जैसे साम्राज्यवादी देशो की शक्ति क्षीण हुई और इनसे अब अपने अधीन उपनिवेशों को सँभालने की क्षमता नही रही अतः इन देशो को दूर दराज पर स्थित अपने उपनिवेशों को स्वतंत्र राष्ट्र घोषित करने के लिए मजबूर होना पड़ा तथा इसके साथ ही उपनिवेशवाद का भी अंत हुआ जो की एक नए दौर की सुरुआत थी

द्वितीय विश्व युद्ध में **5 करोड़ से ज्यादा लोग मारे गए** थे, जिनमे **20 लाख से ज्यादा आम लोग थे** लगभग **1 करोड़ 20 लाख लोगो को यंत्रणा शिविरों व् फासिस्ट यातनाओ के फलस्वरूप अपनी जान गंवानी पड़ी** इसके साथ ही अनेको देशो की अर्थवयवस्था बुरी तरह तबाह हुई

अनेक नए हथियारो के अविष्कार किये गए और परमाणु बमों की होड़ शुरू हुई जो अभी तक जरी है ऐसा लगता है ये हथियारों और परमाणु बमों की होड़ तीसरे विश्व युद्ध पर जाकर ही ख़त्म होगी , अगर तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो विश्व में ऐसी तबाही होगी की मानवता अपने अस्तित्व को तलाशती मिलेगी या शायद मानवता ही ख़त्म हो जाएगी

14. प्रथम तथा द्वित्य विश्व युद्ध में हिस्सा रहे कुछ मीना सैनिक

वैसे तो प्रथम और द्वित्य विश्व युद्ध में में लाखो भारतीय फौजियों ने हिस्सा लिया जिनमे कुछ को पहचान मिली तो कई ज्यादा गुमनाम रहे ऐसे ही मारवाड़ गोडवाड मीना समाज के हजारो की संख्या में फौजी थे परन्तु वो सव गुमनामी के अंधेरो में ही रहे क्योकि उनकी भावी पीढ़ी की शिक्षा के प्रति कम जागरूकता तथा इस बात तवज्जो नहीं दिए जाने के कारण उनके पदक, साक्ष्य, व् दस्तावेज नष्ट हो गए जो की समाज की अपूर्णीय क्षति है परन्तु काफी जद्दोजहत और कठिन परिश्रम के के बाद कुछ नाम उपलब्ध हो सके जो निम्न है-

क्र.सं.	नाम/पद	पता	समय(WW-1,WW-2)	परिवार के सदस्य
01	राजा राम मीना (जमादार)	केशरपुरा(झुपा)	वी.वी.-1(1914-1918) या वी.वी.-2 (1939-1945)	जामा राम मीना- पोता (व्याख्याता Rtd.)
02	नाथा राम मीना	''	''	-
03	सेना राम मीना	पोसालिया	''	-
04	वरदा राम मीना	''	''	-
05	अलदा राम मीना (पूर्व	मालनू	वी.वी.-1(1914-1918) या	अशोकपाल जी मीना- पोता (व्ख्यता)

	विधायक)		वी.वी.-2 (1939-1945	
06	भूरा राम भेबरसा-मीना	सादड़ी (झुपा)	वी.वी.-1(1914-1918)	-
07	खुमा राम भेबरसा-मीना (सूबेदार) S/O रामा राम मीना	मालनू	वी.वी.-1(1914-1918) या वी.वी.-2 (1939-1945	-
08	तोला राम मीना (जमादार) S/O जीवाजी बरोड़-मीना	बापूनगर,पालडी जोड़	वी.वी.-1(1914-1918)	-
09	केरा राम सांगेसा (मीना)	सेणा	वी.वी.-2 (1939-1945) शांताक्रुज	-
11	लाला राम मीना	केसरपुरा (झुपा)	वी.वी.-1(1914-1918	-
12	निम्बा राम मीना	देसुरी	वी.वी.-2 (1939-1945	-
13	गुगजी मीना (चोदरेसा)	बेदाना,अहोर, जालोर	वी.वी.-2 (1939-1945) ऑपरेशन	-

			यु-गो के दौरान	
14	नैनजी मीना (चोदरेसा)	बेदाना,अहोर, जालोर	वी.वी.-2 (1939-1945) ऑपरेशन यु-गो के दौरान	-

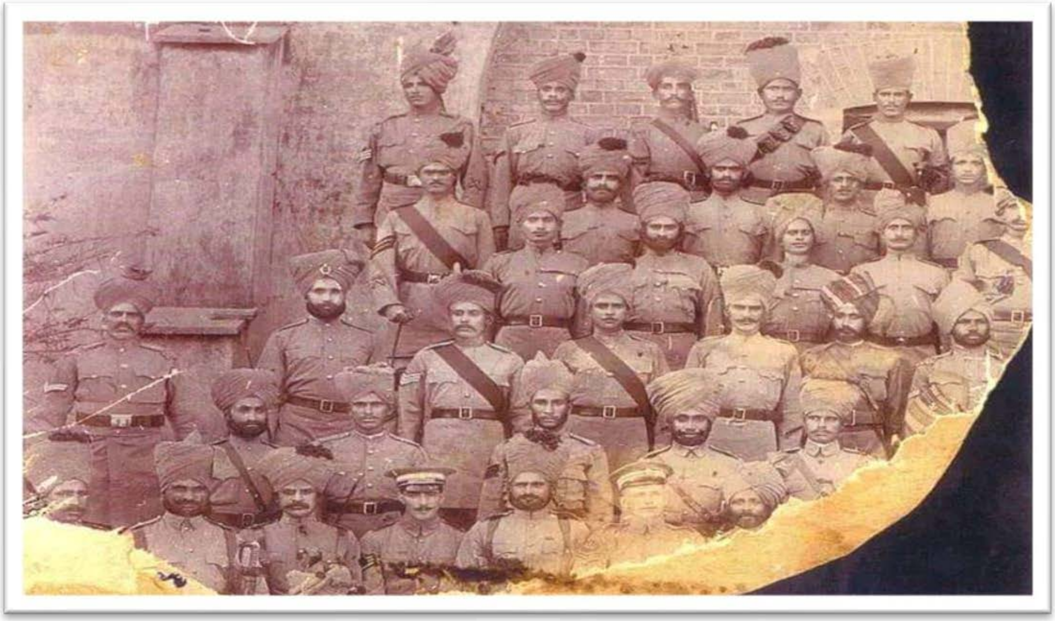

फोटो23: (भारतीय सैनिको का सामूहिक फोटो)

फोटो:24 ***(सेना भर्ती विज्ञापन)*** **फोटो:25** ***(एरिनपूरा सिपाही/अधिकारी का डंडा)***

- **जमादार राजा राम मीना, केशरपुरा (प्रथम विश्व युद्ध सन-1914-1918)-**

- **लाल राम मीना, केशरपुरा (प्रथम विश्व युद्ध सन-1914-1918)-**

फोटो:26 *(जमादार रजा राम मीना), फोटो:27 (लाला राम मीना)*

15. एस.एस. एरिनपूरा जहाज परिचय (नामकरण, उपयोग और नष्ट)

यह ब्रिटिश इंडिया नेविगेश कम्पनी का एक जहाज था जिसे विलियम डेनी एंड ब्रदर्स ने स्कोटलेंड के संबर्ग में £108,606 की लागत से इसका निर्माण किया था, जिसका नाम भारत के तत्कालीन राज्य राजपुताना में स्थित एरिनपूरा गाव जहा एरिनपूरा छावनी स्थित थी जिसका नामकरण जोधपुर लिजन के तत्कालीन कमांडेंट केप्टन डाउनिंग के जन्म स्थल यूरोप के एक द्वीप एरिन से लिया गया था इसी से प्रेरित होकर इस जहाज का भी नाम एस. एस. एरिनपूरा रखा गया, यह एक ई-क्लास श्रेणी का महासागरीय जहाज था, यह पहला ब्रिटिश इंण्डिया जहाज था जिसका निर्माण सन 1911 में पूर्वी सेवा के लिए किया गया था जिसमे संचार के लिए रेडियो लगा हुआ था इस जहाज ने दोनों विश्व युद्धों में अपनी भूमिका निभाई थी

यहाँ दो इंजनो वाला जहाज था जो जिसकी अधिकतम गति 16.7 समुद्री मील (30.9 किमी/घंटा) थी तथा ये जहाज ग्लासगो में पंजीकृत था और इसका कोड KPWS था जिसे 1914 तक वायरलेस टेलेग्राफी के लिए तैनात किया गया था जिसका कॉल साइन MVJ था

एस एस एरिनपुरा सात ई-क्लास जहाजो में से एक था जिन्हे चार अलग अलग शिपयार्डो ने इन्हें बंगाल की खाड़ी- सिंगापूर जलडमरू सर्विस के लिए बनाया गया था एरिन्पुरा के लावा छ: अन्य जहाजो के नाम – एलेंगा, ऐडवाना, एलिफेंटा, एग्र,एलोरा, और एकमा थे ब्रटिश भारत के इतिहास में इ क्लास जहाज सबसे सफल, आरामदायक, लाभदायक और सबसे लम्बे समय तक चलने वाले जहाज माने जाते है और एरिनपूरा इन में से एक था

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उपयोग –

एस एस एरिनपूरा प्रथम विश्व युद्ध के शुरुआती दौर में एक सैन्य जहाज था जो करांची से मार्सिल और फिर मेसोपोटामिया (ईराक) के सन्नीया तक सैनिको को ले जाता था , 24 दिसम्बर 1914 को अबादान जाते समय हनीश द्वीप के नजदीक मुहनरा बार के लाल सागर में फंस गया इससे जहाज को काफी नुकसान तो हुआ परन्तु वहा बम्बई लौटने में सफल रहा, अगस्त 1915 में इस को अस्पातल जहाज में परिवर्तित कर दिया गया तथा इस जहाज ने 475 बिस्तरों और 104 चिकित्सा कर्मियों वाले अस्पताल के रूप में भारतीय सेना जिसे भारतीय ब्रिटिश सेना कहा जाता था इस सैन्य बल की चिकित्सा सहायता और बॉम्बे बसरा सेवा में सेवारत रहा तथा नवम्बर 1917 में इसे एक एम्बुलेंस परिवहन के रूप में उपयोग में लिया गया

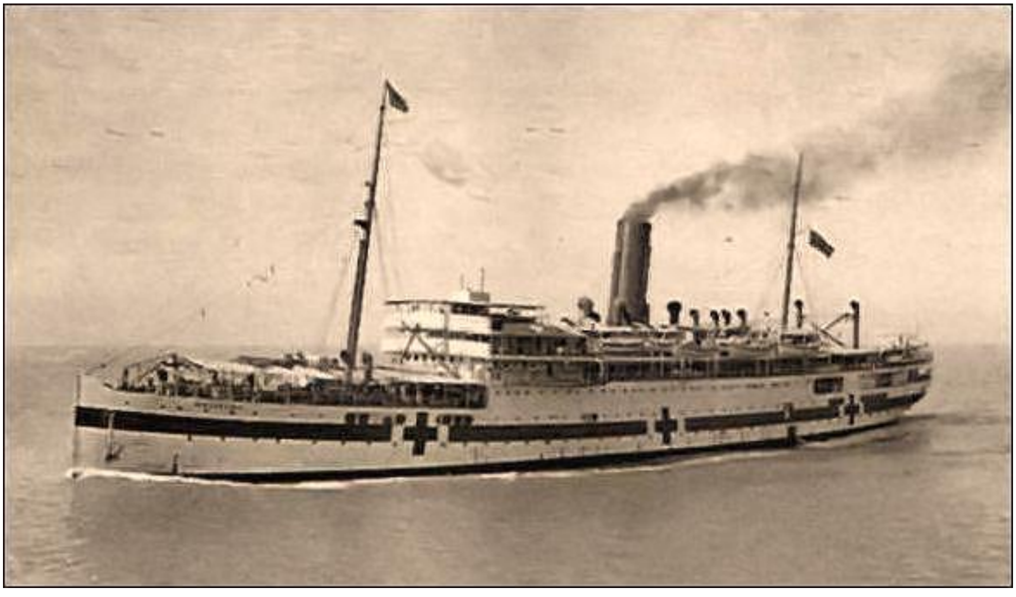

फोटो:28 *(एरिनपुरा एक अस्पताल जहाज के रूप में)*

- **प्रथम व द्वितय विश्व युद्ध के मध्यांतर में एस एस एरिनपूरा जहाज-**

इस समयांतर में 15 जून 1919 को ये फिर से लाल सागर में फस गया इस बार ये मुस्शेजेरा रीफ में फंस गया तो इस बार टोपेज़ श्रेणी के जहाज क्रूजर HMS-टोपेज़ ने इसके यात्रियों और सैनिको को बचाया और उन्हें अदन ले गया, एस एस एरिनपूरा को निकलने के सरे प्रयास विफल रहे तथा 1920 में इसे ख़राब मौसम के कारण रीफ पर इधर उधर ले जाया गया जिस कारण इसका पतवार क्षतिग्रस्त हो गया तथा सितम्बर 1920 में इसे इसके स्वामित्व वाली कंपनी द्वारा पुल से ठीक आगे दो टुकडो में काटने का फैसला किया गया परन्तु इसका आगे वाला हिस्सा रीफ में ही अटका रह गया और बाकि के हिस्से को काट कर अदन ले जाया गया डेनिस ने डंबर्टन में एक नया 'बो'(जहाज के आगे वाला हिस्सा) बनाया और उसे बंबई भेजा गया, 1921 एस एस एरिनपूरा जहाज के पीछे वाले हिस्से को को खीच कर बम्बई लाया गया तथा उस पर नया 'बो' जहाज का आगे वाला हिस्सा लगाया गया , 1923 में ये जहाज तैयार हो कर फिर से सेवा में लौट आया और सन-1934 में इसके कोड और वायरलेस कॉल साइन का अंतर्राष्ट्रीय पुनर्गठन किया गया और इसे नया कॉल साइन GJWN मिला जिसने इसके मूल कोड का स्थान ले लिया

- **द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उपयोग –**

सन-1938 में सुडेटेनलैंड संकट (मुनिख समझोता जिसके तहत जर्मनी द्वारा चेकोच्लावीया के सुडेटेनलैंड हिस्से पर कब्ज़ा करने का प्रावधान था) के दौरान एरिनपुरा को बुलाया गया तथा मार्च 1940 को इसे लिनार डिविजन के लिए तैयार किया गया तथा अप्रेल,1943 तक यह हिन्द महासागर में अपनी सेवाए देता रहा जब यहाँ जहाज स्वेज नहर से होकर भूमध्य सागर में पंहुचा जहाँ इस एरिनपूरा जहाज ने अलेक्जेंड्रिया से त्रिपोली और वहा से वापसी की यात्रा भाप के इंजन से की। 29 अप्रैल 1943 को एस एस एरिनपुरा अलेक्जेंड्रिया से MW 27

काफिले में माल्टा के लिए रवाना हुआ ।तब कैप्टन पीवी कॉटर ने एस एस एरिनपुरा जहाज की कमान संभाली जिसमे यह काफिले के लिए कमांडर का जहाज था जो 1,000 से ज़्यादा सैनिकों को ले जा रहा था, जिनमें अफ़्रीकी ऑक्सिलरी पायनियर कॉर्प्स के बसुतो, बत्सवानन सदस्य , और ब्रिटिश सेना की 462 ट्रांसपोर्ट कंपनी के फ़िलिस्तीनी यहूदी सैनिक शामिल थे ।

यह एमडब्ल्यू-27 के 20 व्यापारी जहाजों में से एक था, जिसमें उसके सहयोगी जहाज एग्रा और दो अन्य ब्रिटिश इंडिया एसएन कंपनी के जहाज भी शामिल थे तथा इनकी छह रॉयल नेवी विध्वंसक , चार हेलेनिक नेवी विध्वंसक और दो रॉयल नेवी माइनस्वीपर्स ने काफिले की सुरक्षा की,1 मई1943 की शाम को, जर्मन बमवर्षक विमानों ने बेनगाज़ी से 30 समुद्री मील (56 किमी) उत्तर में काफिले पर हमला किया। जहाजों ने बचाव की कार्रवाई की और जवाबी गोलीबारी की। एक हेंकेल हे-111 विमान ने एक बीटीसी टैंकर, 8,466 जीआरटी ब्रिटिश ट्रस्ट पर टारपीडो से हमला किया , जिसमें आग लग गई और वह तीन मिनट में डूब गया, जिससे उसके चालक दल के 10 सदस्य मारे गए।

हमले की अगली लहर में, एस एस एरिनपुरा के आगे के हिस्से में एक बम गिरा, जिससे वह स्टारबोर्ड की ओर झुक गया और चार पाँच मिनट के भीतर डूब गया। उसकी 12-पाउंडर एंटीएयरक्राफ्ट गन के- डी.ई.एम.एस चालक दल ने तब तक जवाबी गोलीबारी जारी रखी जब तक वह डूब नहीं गई। एरिनपुरा पर सवार 800 से ज़्यादा लोग मारे गए। संख्या के बारे में अलगअलग विवरण हैं-, लेकिन एक अनुमान के अनुसार मृतकों में 633 बसुतो पायनियर, 140 फ़िलिस्तीनी यहूदी सैनिक, 11 बत्सवान पायनियर, एरिनपुरा के 54 भारतीय लस्कर चालक दल, छह डीईएमएस गनर और दो इंजीनियर अधिकारी शामिल थे

- **माउंट हर्ज़ल पर बना एस.एस.एरिनपूरा का स्मारक-**

सन्दर्भ-

It's a Long Way to Tipperary - An Irish Story of the Great War

-UNIVERSITY OF LIMERICK'S WW1 Onlne Exhibition

वेबसाइट-*www.25thlondon.com/index.htm,www.poheritage.com*

https://www.convoyweb.org.uk, samilitaryhistory/vol085nchtml

माउंट हर्ज़ल (हर हा जिकोरान), इजराइल पर एरिनपुरा में डूबे 140 यहूदी सैनिकों का एक स्मारक है। यह स्मारक एक जहाज़ के आकार का है जिसमें एक केंद्रीय कुंड है तथा जिसके तल पर शहीदों के नाम लिखे हैं। कुंड के ऊपर एक बुर्ज है जिस पर एक (इश्वर के कथन) प्साल्म -68,भाग 22 का हिब्रू लेख अंकित है: "***यहोवा ने कहा, मैं बाशान से वापस लाऊँगा, मैं अपनी प्रजा को समुद्र की गहराइयों से वापस लाऊँगा।***"

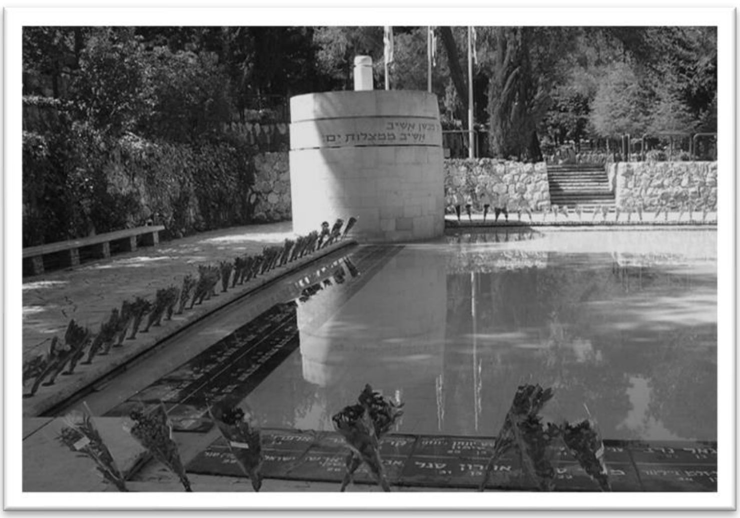

फोटो:30 (माउंट हर्ज़ल पर बना एस.एस.एरिनपूरा का स्मारक)

फोटो:29 (हिब्रू भाषा के अंग्रेजी में लेख (भजन सहिंता) लिखे हुए सिक्के)

विषय: *स्मरणोत्सव,फ़ोटोग्राफ़र: डॉ.* ***अविशाई टीचर,फ़ोटो योगदानकर्ता: डॉ. अविशाई टीचर***

स्थान: माउंट हर्ज़ल सैन्य कब्रिस्तान,फोटोग्राफी की तिथि17.3.2011, लाइसेंस प्रकार: एट्रिब्यूशन आरोपण

आवश्यक श्रेय पाठ: फोटो: डॉ. अविशाई टीचर*, पिकविकी वेबसाइट से*

नोट: *स्मारक पानी में तैरते जहाज़ की तरह बनाया गया है। कमान चौकी के ऊपर भजन संहिता 68 का एक श्लोक है:*

हिब्रू कैलेंडर के अनुसार , एरिनपुरा का डूबना 26 निसान का दिन है, जो योम हाशोआ से एक दिन पहले का दिन है । इसलिए, हर साल योम हाशोआ पर स्मारक समारोह आयोजित किया जाता है । इसके अलावा, इज़राइल में हिब्रू स्काउट्स मूवमेंट के मोदीइन जेरूसलम चैप्टर द्वारा हर योम हाज़िकारोन पर एरिनपुरा स्मारक पर एक समारोह आयोजित किया जाता

है , जिसमें चैप्टर के स्नातक, मोदीइन के शहीद सैनिकों के परिवार और आम जनता शामिल होती है ।

16. 42वी देवली रेजिमेंट (मीना बटालियन)

सन्दर्भ: *Website: iindiiameena.wordpress.com,*

Notes of the armies of indiia, part-51914-1918) by-The Margness of Cambriidge G.C.V.O.

पुस्तक: *राजस्थान का स्वतंत्रता आन्दोलन एक शौर्य परम्परा, अध्याय:4-राजस्थान की जनजातियों का आन्दोलन*

42वीं देवली रेजिमेंट और 43वीं एरिनपुरा रेजिमेंट, दोनों ही ब्रिटिश भारतीय सेना की अनियमित सेना की रेजिमेंट थीं, जिन्हें 1857 के विद्रोह के दौरान गठित किया गया था

ये रेजिमेंट मुख्य रूप से जोधपुर लिजन सेना के मीना जनजाति के सैनिकों से बनी थीं। सन 1857 से 1860 तक ये मीना बटालियन के नाम से जानी जाती थी 43 वी एरिनपूरा रेजिमेंट शिवगंज के समीप स्थीत थी तथा 42वी देवली रेजिमेंट मुख्या रूप से मीना बटालियन कहलाई 42 वी देवली रेजिमेंट ब्रिटिश भारतीय सेना की एक पैदल रेजिमेंट थी इस रेजिमेंट की उत्पत्ति 1857 में हुई और मीना बटालियन का कालखंड सन- 1857 से 1860 रहा तथा सन-1860 से 1903 तक ये देवली अनियमित बल के रूप में रही परन्तु इसे मीना सैनिको के बाहुल्य के कारण सामानांतर मीना बतालियन के नाम से जाना जाता रहा

42वी देवली रेजिमेंट ब्रिटिश भार्त्तिया सेना की एक पैदल सैनिक टुकडी थी, जब 1857 की क्रांति/विद्रोह हुआ तब इसका गठन किया गया था ईस समय 42वी रेजिमेंट विशेष रूप से पैदल सैना की रेजिमेंट बन गयी विद्रोह के पश्चात 42वी रेजिमेंट का निर्माण हुआ जिसमे पहली आगरा में मई से अक्टूबर 1861 तक रही तथा ईसकी प्रथम लाइट इन्फेंट्री अक्टूबर

1861 से 42 वी रेजिमेंट बन गयी तथा 1/6 गोरखा रायफल्स बन्ने तक ये इसी तरह से चलती रही परन्तु 1903 में तीसरी 43 वी रेजिमेंट बनी जो की पुरानी देवली अनियमित बल पर आधारित थी जिसे 18 57 में में कप्तान जे डी मेक्डोनाल्ड के अधीन मीना बटालियन के रूप में स्थापित किया गया था यह बटालियन देवली की पैदल सैना का केंद्र थी जिसकी मई 1861 तक आठ कंपनियों थी जो 1865 तक घुड़सवार सेना को भी शामिल कर लिया त्तथा 1917 दूसरी बटालियन बनाई गयी लेकिन 1922 में एकीकरण तक पहुचने में असफल रही तथा 10 दिसम्बर 1921 को सभी बटालियनो को भंग कर लिया गया

अपनी स्थापना के समय से ही रेजिमेंट में मुख्य रूप से मीना समुदाय के लोगो की भर्ती होती रही जनवरी,1919 की भारतीय सेना सूची में भर्ती के आधार पर मुख्य रूप से मीना समुदाय के लोग भर्ती होते रहे , जनवरी 1919 क भारतीय सेना में भर्ती का अधर मोटे त्तौर पर ' राजपुताना के हिन्दुओ,मुसलमानों की चार कम्पनियों के रूप में वर्णित किया गया था

मीना बटालियन का प्रथाम विश्व युद्ध में योगदान-

42 वी देवली रेजिमेंट ने 5वी महु डिविजन के की द्वितीय अफगान युद्ध और प्रथम विश्व युद्ध में अपनी सेवाए दी, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1917 में एक दूसरी बटालियन का गठन किया गया, जो युद्ध के दौरान आंतरिक सुरक्षा ड्यूटी के लिए भारत में ही रही लेकीन मीणाओ की एक कम्पनी मेसोपोटामिया में तैनात की गयी ,प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय पैदल सेना का पुनर्गठन किया गया और यहाँ एकल बटालियन से बहु- बटालियन रेजिमेंटो में परिवर्तित हो गयी और इस पुनर्गठन के अंतर्गत नौ रेजिमेन्टो को भंग कर दिया गया तथा 42 वी देवली रेजिमेंट नयी संरचना के लिए अधिशेष रेजिमेंटो में से एक थी और इसे 10 दिसंबर 1921 को भंग कर दिया गया, बार-बार ये विचार जेहन में आता है की जब मीना सैनिको ने अपने पुरे इतिहास में अपना अतुलनीय योगदान दिया चाहे वो 1857 का विद्रोह हो या चाहे प्रथम विश्व

युद्ध फिर भी क्या कारण रहे जो इन आदिवासियों की वीरता और देशभक्ति की प्रतिक 43वी एरिनपुरा और 42वी देवली रेजिमेंट को ख़त्म कर दिया गयाजिन्हें में मीना बटालियन भी कहा जाता था सैन्य सुधार के नाम पर अनगिनत रेजीमेंटो के भंग करने की प्रक्रिया के पीछे अंग्रेजो के अलावा अन्य सत्तावादी शक्तियों के हाथ या समर्थन का ईनकार नही किया जा सकता अगर ये भंग की गयी रेजीमेंटो और बटालियनो पर नज़र डाली जाये तो प्रतीत होगा की बहादुरी से लड़ने वाली और अंग्रेजो का विरोध करने वाली रेजीमेंटो और बटालियनो को ख़त्म कर दिया गया

17. CRPF की स्थापना तथा एरिनपूरा और देवली की मीना कोर का विलय

सन्दर्भ-

The Crapler -T he Central Reserve Police News Letter & Magazine1972.

Vol.-01.No.06, Editorial: Central Reserve Police- A versatile firce Page No.221,222, 223.

सी.आ.पी.एफ. की स्थापना सन 1939 में रियासतों की सुरक्षा के लिए की गई थी। इसे इन राज्यों में नागरिको की सहायता के लिए सैन्य के आधार पर संगठित और प्रशिक्षित एक आत्मनिर्भर बल बनाया जाना था जो आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था का ध्यान रखती थी। यह क्राउन प्रतिनिधि के अधीन थी । इसलिए इसका नाम **क्राउन प्रतिनिधि पुलिस (सीआरपी)** रखा गया। इस बल के लिए आवश्यक उपकरण और एक ब्रिटिश इन्फैंट्री मशीन गन कंपनी के भारतीय कर्मियों से उपलब्ध कराए गए थे, जिनमें से अधिकांश सिख थे। बाद में, 4 बटालियन 2 पंजाब रेजिमेंट, **एरिनपुरा और देवली की मीना कोर** के कर्मियों के अलावा, पंजाब, उत्तर पश्चिम सीमांत, राजपूताना और दिल्ली के सेवानिवृत्त और सेवामुक्त सैन्य कर्मियों को भी इसमें भर्ती किया गया तथा **मेजर जे.एफ. पीयर्ट इसके पहले कमांडेंट थे।**

प्रारंभिक तैनाती-

द्वितीय विश्व युद्ध के छिड़ने से नए बल के गठन और प्रशिक्षण में कुछ हद तक बाधा आई। इन बाधाओं के बावजूद, इसे नागरिक शक्ति की सहायता के लिए बुलाया गया और मध्य

भारत के चरखारी, महू और इंदौर में टुकड़ियाँ भेजी गईं। सन-1942-44 के दौरान, बल की प्रमुख प्रतिबद्धता सिंध में थी जहाँ हूरों के खतरे से निपटने के लिए तीन कंपनियाँ भेजी गईं। हूरों की कट्टरता उनके नेता, पगारो के पीर की गिरफ्तारी से उन्माद की हद तक बढ़ गई और उन्होंने सिंध में, विशेष रूप से खैरपुर राज्य में, हत्या और लूट का एक नियमित अभियान शुरू कर दिया। सीआरपीएफ ने इस क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा की। कई पुरस्कार अर्जित किए तथा स्वतंत्रता-पूर्व काल में सीआरपीएफ को बालासिनोर राज्य, बड़ौदा, किशनगढ़ में तैनात किया गया था, जहाँ दो किंग्स पुलिस पदक और तीन भारतीय पुलिस पदक प्रदान किए गए थे, रीवा, पटौदी, दुजाना, दतिया,चरखारी और लोहारू राज्य, रतलाम और अजमेर अदि थे ।

विभाजन के बाद के कर्तव्य-

देश के विभाजन का असर सीआरपी पर भी पड़ा क्योंकि इसने 419 मुस्लिम अधिकारियों को खो दिया था अर्थात् विभाजन में वे लोग पाकिस्तान के साथ चले गए तथा कुछ अन्य रैंकों ने भी सितंबर,1947 में पाकिस्तान जाने का विकल्प चुना। इस रिक्तता को 150 गोरखाओं सहित भारतीय नागरिकों ने भरा गया तथा स्वतंत्रता के तुरंत बाद सीआरपीएफ को दिल्ली और रामपुर में और बाद में राजकोट, जूनागढ़, नौगांव, चंबा और विरही में तैनात किया गया।

क्राउन प्रतिनिधि पुलिस(CRP) का नाम बदलकर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल(CRPF) कर दिया गया और इसकी संख्या बढ़ाकर 1746 कर दी गई। यह संघ के सशस्त्र बलों में से एक होना था। इसके पिछले रिकॉर्ड के लिए एक उपयुक्त श्रद्धांजलि के रूप में, 19 मार्च, 1950 को राष्ट्रपति द्वारा बल को "ध्वज" प्रदान किए गए। बल का वार्षिक दिवस 31 अक्टूबर तय किया गया, जो संयोग से सरदार पटेल के जन्मदिन के साथ मेल खाता है।

विस्तार-

सीआरपीएफ पर लगातार बढ़ती जिम्मेदारी बढ़ती गईं और इसे राजस्थान की पश्चिमी सीमाओं पर तैनात किया गया। इसने 1949-54 के दौरान पंजाब और पूर्वी पंजाब राज्य संघ (पेप्सू) और चंबल घाटी में डकैतों के खिलाफ भी अभियान चलाया। इन अतिरिक्त ज़िम्मेदारियों के कारण बल में वृद्धि आवश्यक हो गई और 1956 तक इसकी 6 बटालियनें हो गईं। 1958 में दो बटालियनों को पूर्वी सीमांत क्षेत्र में तैनात किया गया। 1959 में इसका और विस्तार हुआ, जब नीमच, अजमेर, देवली, भरतपुर, रामपुर और मोकामाघाट में छह और बटालियनें गठित की गईं, जिससे कुल 12 बटालियनें हो गईं। इन्हें दो उप महानिरीक्षकों के अधीन रखा गया, जिनका समग्र नियंत्रण पुलिस महानिरीक्षक दिल्ली के पास था। 1962 में चीनी आक्रमण के बाद, दो और बटालियनों का गठन किया गया और इसका और विस्तार हुआ। प्रत्येक बटालियन में दो और सेवा कंपनियाँ जोड़कर बटालियनों की संख्या भी बढ़ाई गई। 3 अगस्त, 1963 को बल के लिए एक अलग महानिरीक्षक पुलिस की नियुक्ति की गई।

श्री वी.जी. कानेटकर, आईपी, इसके पहले पदस्थ अधिकारी थे। कंपनी कमांडरों की भी सीधी भर्ती की जाती थी। ये पूर्णकालिक सीआरपी अधिकारी थे। 1964-65 के दौरान तीन और बटालियनें गठित की गईं जिससे कुल संख्या 17 हो गई।

सी.आर.पी.एफ. द्वारा सीमा सुरक्षा -

सीआरपीएफ को देश की रक्षा का भार भी साझा करना पड़ा। 21 अक्टूबर, 1959 को सीआरपीएफ के एक गश्ती दल ने **हॉट स्प्रिंग्स** में एक प्रभावी **चीनी सेना के खिलाफ** एक वीरतापूर्ण लड़ाई लड़ी। इसमें दस जवान शहीद हो गए और एक अधिकारी और कई अन्य को बंदी बना लिया गया। इन वीर जवानों की उत्कृष्ट सेवाओं के सम्मान में, **21 अक्टूबर** को

पूरे भारत में **पुलिस द्वारा शहीद दिवस** के रूप में मनाया जाता है। हॉट स्प्रिंग्स में हर साल एक स्मारक सेवा आयोजित की जाती है और इसमें भारत के सभी पुलिस बलों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। सीआरपीएफ की एक बटालियन ने पुंछ सेक्टर में दो महत्वपूर्ण चौकियों (बालाकोट और तारकुंडी) पर कब्जा कर उनकी रक्षा की और दुश्मन के भारी हमलों का सामना किया। इस ऑपरेशन के दौरान एक अधिकारी और एक जमादार को वीरता के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। चौथी बटालियन ने 1957 से 1962 तक जम्मू क्षेत्र के जौरियन सेक्टर की रक्षा की। बाद में यह जिम्मेदारी छठी बटालियन ने संभाली। पाकिस्तानियों के साथ कई मुठभेड़ें हुईं और कांस्टेबल सीता राम को उत्कृष्ट वीरता के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। उसके बाद से, नौशेरा, राजौरी और पुंछ सेक्टरों में और बटालियनें तैनात की गईं।

1962 से सीआरपीएफ की बटालियनें अरुणाचल प्रदेश, असम, नागालैंड और मिजोरम में भी तैनात हैं। दुश्मनों के साथ मुठभेड़ में असाधारण वीरता के लिए और उन्हें हथियार और गोला-बारूद के साथ पकड़ने के लिए, जबकि वे स्वयं घायल थे, 7वीं बटालियन के जैश-ए-मोहम्मद माम चंद सोम को 1963 में राष्ट्रपति का पुलिस और अग्निशमन सेवा पदक मिला।

बल की दो बटालियनों ने 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में पश्चिमी मोर्चे (शकरगढ़ और चिकन नेक क्षेत्र) पर सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। 20वीं बटालियन के जवानों - जैश-ए-मोहम्मद जगमेहर सिंह और कांस्टेबल डेविड वर्गीस को सेना पदक से सम्मानित किया गया। पूर्वी मोर्चे पर, 25, 32, 38 और 46 बटालियनों के कर्मियों ने बांग्लादेश की मुक्ति में मदद की और उनकी सेवाओं को विधिवत स्वीकार किया गया है। अब तक 25 राष्ट्रपति पुलिस और अग्निशमन सेवा पदक, वीरता के लिए पुलिस पदक और सराहनीय सेवा पदकों की घोषणा की जा चुकी है।

आगे विस्तार

1966 के दौरान विभिन्न राज्यों से सात भारतीय रिज़र्व पुलिस बटालियनों को सीआरपीएफ में शामिल किया गया। इस वर्ष एक सिग्नल बटालियन का भी गठन किया गया। इससे बल की संख्या बढ़कर 24 बटालियन और एक सिग्नल बटालियन हो गई। 1967 में एक और आईजीपी की नियुक्ति को मंजूरी दी गई और श्री वी.पी. नायर, आईपीएस ने 22 अप्रैल को कार्यभार ग्रहण किया। 1968 में आईजीपी सीआरपीएफ के पद को महानिदेशक के रूप में उन्नत किया गया और श्री वी.जी. कानेटकर, आईपी को पहला महानिदेशक नियुक्त किया गया। दोनों आईजीपी सेक्टर-1 और सेक्टर-2 नामित दो सेक्टरों के लिए जिम्मेदार बने। श्री बी. बी. मिश्रा, आईपी ने आईजीपी सेक्टर-II का पदभार ग्रहण किया। 1968 में बल का बड़े पैमाने पर विस्तार और पुनर्गठन हुआ। ग्रुप केंद्र बनाए गए और उनमें से प्रत्येक को तीन या चार बटालियन आवंटित किए गए। 1968 के दौरान उन्नीस भारतीय रिज़र्व पुलिस बटालियनों को सीआरपीएफ में शामिल कर लिया गया और तीन नई बटालियनें बनाई गईं, जिससे बटालियनों की संख्या 46 हो गई। 1969 के दौरान दो भारतीय रिज़र्व पुलिस बटालियनों को शामिल कर लिया गया और चार नई बटालियनें बनाई गईं, जिससे बटालियनों की संख्या 52 हो गई। श्री कानेटकर, आईपी 15 सितंबर, 1969 को सेवानिवृत्त हुए और श्री इमदाद अली, आईपी ने उसी तिथि से बल का कार्यभार संभाला पिछले कुछ वर्षों में बल का व्यापक विस्तार और पुनर्गठन हुआ है और इसकी गतिविधियों का दायरा कई गुना बढ़ गया है। अकेले 1969 के दौरान ही बल के कर्मियों को वीरता के लिए एक राष्ट्रपति पुलिस और अग्निशमन सेवा पदक, वीरता के लिए चार पुलिस पदक, सराहनीय सेवाओं के लिए दो राष्ट्रपति अग्निशमन सेवा पदक और सराहनीय सेवाओं के लिए छह पुलिस पदक प्रदान किए गए। 1971 के दौरान आठ और बटालियनें जोड़ी गईं, जिससे वर्ष के अंत तक बल की संख्या 60 बटालियनों

तक पहुँच गई। 1971 के दौरान तीसरे पुलिस महानिरीक्षक की नियुक्ति को मंजूरी दी गई और श्री एन. एस. सक्सेना, आईपी ने 3 जनवरी, 1972 को कार्यभार ग्रहण किया।

17. केशरपुरा (झुपा) गाँव का एरिन्पुरा छावनी से सम्बन्ध

Website: Onefivenine.com और जनश्रुतियों के अनुसार-

वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी और स्थानीय जनश्रुतियों की माने तो केशरपुरा इसके बसने के समय से ही सिरोही जिले का मीना बाहुल्य वाला गाव है जो शिवगंज कस्बे से 3 किमी की दूरी पर स्थित है वेबसाइट, अन्य एतिहासिक तथ्यों और जनश्रुतियों से साझा निष्कर्ष निकालने पर इस गाव का सिरोही रियासत के समय एरिनपूरा छावनी की स्थापना के समय से होना प्रतीत होता है रियासत काल और ब्रिटिश काल के समय में यहाँ क्षेत्र सिरोही रियासत के अंतर्गत आता था तथा यहाँ मन जाता है की सामान्य रेंक के सैनिको के रहने के लिए इस स्थान को सैनिक कैंप के तौर पर चिन्हित किया गया था तथा यहाँ सामान्य रैंक के मीना सैनिको के कैंप थे क्योकि ये सर्वविदित है की अंग्रेज अधिकारी भारतीय सैनिको के साथ भेद रखते थे और हमेशा सर्वोच्च पदों पर अंग्रेज अधिकारी या उनसे दुसरे दर्जे के पदों पर भारतीय रियासतों के राजघरानो के सम्बंधित लोग की होते थे तथा अधिकारी आवास हमेशा ससमान्य सैनिको के आवास से अलग होते थे तथा भारतीय आदिवासी सैनिको के कैंप के लिए अलग स्थान होते थे

मीना समुदाय के लोगो का रहन सहन अन्य समुदायों से भिन्न हुआ करता था क्योकि ये समुदाय हमेशा से ही स्वछन्द विचरण करने वाला समुदाय हुआ करता था यह समुदाय स्वतंत्र, युद्धप्रेमी व निडर समुदाय रहा है ये समुदाय आज भी किसी की अधीनता पसंद नहीं करता आदिवासी समुदायों की सामाजिक अलगाव,विशिष्ट जीवनशैली, विशेषत: बोली, भाषीय भेद, प्रकर्ति पूजक आदि गुण समाहित होते थे जो मीना समुदाय में आज भी देखने को मिलते है

अतः: यह संभव है कि इन आदिवासी मीना सैनिको का ये रहने का स्थान या सैनिक कैंप रहा हो क्योकि आज भी मीणाओ के आम बोल-चाल की भाषा में टेंट या कैंपनुमा संरचना को झुपा कहते है और आज भी बुजुर्ग लोग केशरपुरा गाव को झुपा नाम से ही संबोधित करते है और अन्य शब्दों मर जिसे झोपडी समझा जाता है इस आधार पर मजबूत सम्भावना व्यक्त की जा सकती है की यहाँ पर मेएन व् अन्य आदिवासी सैनिको का सैन्य बेस होने के कारण व उनका एरिनपूरा छावनी से सम्बन्ध इस जगह को मीणों का झुपा कहा जाना लगा और कालांतर में इसका नाम बदलकर केशरपुरा रख दिया गया परन्तु बुजुर्ग आज भी इसे मीणों का झुपा ही कहते है कालांतर में एरिनपूरा छावनी भंग हो गयी, देश आजाद हो गया तो समय के साथ इन आदिवासी लोगो को रोजगार के लिए भारतीय सेना, अर्द सैनिक बल के आलावा कृषि, मजदूरी आदि की तरफ मुड़ना पड़ा तथा कालांतर में इन सैनिको के रिश्तेरदार और अन्य लोग भी यहाँ आकर बस गए क्योकि यह गाव शिवगंज के नजदीक होने के कारण रोजगार की सम्भावनाये ज्यादा थी आज ये गाव मीणा समाज का सुद्रढ़ गाव है यहाँ पर मारवाड़ मीना समाज ग्यारह परगना (सिरोही,जालोर,पाली) का मुख्यालय भी है और यहाँ पर समाज की जाजम अर्थात रुढ़िवादी परम्परा के अनुसार सामाजिक नियम, कानून और सामाजिक न्याय के लिए (मीना समाज हाई कोर्ट) सभा भवन भी है जिसकी प्रासंगिकता आज भी मीना समाज में उतनी ही मायने रखती है जितनी पहले रखती थी

सन-1960 के लगभग से यहाँ के लोग मुख्यतया CRPF,पुलिस,सेना व् अन्य सरकारी संस्थाओ में सेवाए देते रहे है जी इस गाव के विशिष्ट होने की और इशारा करता है

फोटो:31 (केसरपुरा में स्थित समाज-ग्यारह परगना मीना हाई कोर्ट (सभा भवन)

18. वर्तमान में एरिनपूरा के नष्ट होते एतिहासिक साक्ष्य

एरिन्पुरा छावनी तो समय के साथ इतिहास के पन्नो में दब गयी जिसका अस्तित्व अब सिर्फ किताबो और पुराने दस्तावेजो में ही बचा है अपने ज़माने की गाथा सुनाते ब्रिटीश काल जर्जर भवन और पुरानी इमारते अपने अस्तित्व की जंग लड़ रही है।

वर्तमान स्थति –वर्तमान समय में एरिनपुरा छावनी के एतिहासिक अवशेष तेजी से नष्ट होते जा रहे है जिनमे ब्रिटीसकालीन पुरानी इमारते जो कभी ब्रिटिश सैन्य शासित और भारतीय 1857 के विद्रोह/क्रांति की गवाह रही है परन्तु वर्तमान में राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमी व इतिहास के प्रति उदासीनता के कारण प्राकर्तिक क्षय का शिकार हो रही है इनमे से कई संरचनाये जर्जर हो चुकी है और रख-रखाव के आभाव में दीवारे ढह गयी छावनी क्षेत्र में मौजूद प्राचीन हथियारो के अवशेष, शिलालेख और अन्य समकालिन सामग्रियां भी समय के साथ नष्ट हो चुकी है।

ब्रिटिश कालीन इमारते जो सही हालत में है उनमे से एक डाक बंगला है जो शिवगंज का एक महत्वपूर्ण लैंडमार्क है अगर इन ऐतहासिक स्थलों का समय रहते संरक्षण नहीं किया गया तो तो हम देश की आजादी से सम्बंधित एक महत्वपूर्ण लैंडमार्क है अगर समय रहते संरक्षण नहीं किया गया तो हम देश की आजादी के इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी खो देंगे जो एक खजाने को खो जाने के बराबर होगा।

अवशेषों के नष्ट होने के मुख्य कारण :

उपेक्षा और रख रखाव - सरकार और स्थानीय प्रसाशन द्वारा ऐसे एतिहासिक स्मारकों, साक्ष्य, तथा स्थलों के संरक्षण के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया अत: इसके परिणाम स्वरुप ये संरचनाये और धरोहर प्राकर्तिक आपदाओ और मौसम की मार झेल कर आज नष्ट होने की कगार पर है जिन्हें संरक्षित करना सरकार ही नहीं अपितु आम जन की भी नैतिक जिम्मेदारी है क्योकि जो समाज अपने इतिहास की अच्छी- बुरी यादो को संजोये नहीं रखता वहा समय भविष्य के दिशा हिन हो जाता है।

1.उपेक्षा और रख-रखाव की कमी – सरकार व स्थानीय प्रशासन द्वारा इन ऐतहासिक साक्ष्यो के संरक्षण के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया, जिसके परिणाम स्वरुप ये संरचनाएं,धरोहर प्राकर्तिक आपदाओ और मौसम की मार जैसे धुप ,बरसात आदि के प्रभाव से नष्ट होती जा रही है।

2.शहरीकरण का दबाव- शिवगंज सिरोही जिले का व्यापारिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण और सम्रद्ध क़स्बा है, अत: यहाँ पर शहरीकरण का दबाव काफी बढ़ गया है जिस कारनण आधुनिक निर्माणकार्यो की वजह से यहाँ के ऐतहासिक स्थलों के लिए खतरा और बढ़ गया है प्रशासन की लापरवाही व् नजरंदाजी के चलते कई बार नये सडको ,इमारतो तथा भूमिगत लाइनों के कार्य और खुदाई के लिए पुराने ढासों को तोडा गया और नए विकाश कार्य किये गए और ये प्रकिर्या आज भी जरी है।

3.आमजन में इतिहास के प्रति जागरूकता की कमी- स्थानीय लोगो में इस छावनी /क्रांति स्थल के एतिहासिक महत्त्व के प्रति ज्ञान और जागरूकता की कमी है, जिसके कारण यहाँ आने वाले देशी विदेशी पर्यटकों में इस जगह के महत्व की अनभिज्ञता रहती है जिस कारण इसके संरक्षण और विकास की मांग नहीं उठती।

अभी स्थानीय मीना समुदाय इस स्थान के संरक्षण और विकास की मांग कर रहा है जो की एक सराहनीय पहल है अभी इस पहल में अन्य समुदायों को भी आगे आने की जरूरत है क्योकि इसे विकसत करने से यहाँ पर्यटकों और खोजकर्ताओ और इतिहासकारों के साथ साथ पर्यटकों का भी आना जाना बढेगा जिससे स्थानीय लोगो के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और इतिहास के पन्नो में दबे अनगिनत क्रन्तिकारी देशभक्तों को सम्मान मिलेगा।

4.प्राकर्तिक क्षरण- समय, मौसम की मार और पर्यावरणीय कारको ने पत्थरो और लकड़ी की संरचनाओ को जर्जर कर दिया है जिसे अतिशीघ्र संरक्षित करने के आवश्यकता है इतिहास के क्षरण को प्रशासन यु मूकदर्शक बन कर नहीं देख सकता एतिहासिक धरोहरों को बचाना प्रशासन की जिम्मेदारी है।

ऐतेहासिक साक्ष्य जो खतरे में है -

ब्रिटिश काल की बैरके और उनके रहने के स्थान और इमारते आज कुछ खंडहर होकर ढह चुकी है और कुछ ढहने की कगार पर है यहाँ पर छावनी/ रेजिमेंट के समय उपयोग होने वाले हथियारो के अवशेष आज या तो नष्ट हो चुके है या खो चुके है

इस स्थल से सम्बन्धीत लेख और अभिलेख जो छावनी के इतिहास को अपने में समेटे हुए थे मानवीय गतिविधियों और मौसम की मार के कारण अपठनीय और नष्ट हो चुके है

एरिनपुरा छावनी के एतिहासिक साक्ष्यो को बचने के लिए तत्काल कदम उठाने की जरूरत है,पुरातत्व विभाग और स्थानीय प्रशासन को मिल कर इन इमारतों और संरचनाओ का जीर्णोद्धार करना चाहिये और साथ ही इसे एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने और राष्ट्रीय धरोहर के रूप मे विकसित करने में मदद करनी चाहिए जिससे स्थानीय अर्थवयवस्था को बढ़ावा मिलेगा तथा 1857 की क्रांति में हिस्सा रहे सैनिको और क्रांतिकारियों को सम्मान

मिलेगा और स्थानीय आदिवासी मीना समुदाय भील समुदाय और अन्य समुदाय को अपने पूर्वजो के देश हित में किये गए कार्य और बलिदान के लिये सम्मान मिलेगा और इनके प्रति सर्व समाज में सम्मान बढेगा तथा क्षेत्र में हो रही छुआ-छुत की घटनाओ में भी कमी आयेगी, यह स्थल सामाजिक सौहार्द्य को बढ़ने में मदद करेगा और इससे सामाजिक समरसता और भाईचारा बढेगा जो देश के विकास के लिए आवश्यक है

इस छावनी में आदिवासी समुदायों के आलावा अग्रवाल,जैन, ब्राहमण,दलित अदि समाजो के योगदान को भी जानने का मौका मिलेगा, इसके लिए जागरूकता अभियान चला कर स्थानीय लोगो को इसके महत्त्व से अवगत करना आवश्यक है।

फोटो: 32-36 (*एरिनपूरा छावनी की जर्जर होती इमारते*)

संदर्भ: Google Map ©2025, Airbus, Maxar Technologies,Map data ©2025

19.ब्रिटिश सरकार द्वारा ब्रिटिश व भारतीयों को दिए जाने वाले मेडल

फोटो :37-48 (मैडल)

(Victory Medal-United kingdom)

(Conspiquse Service Order)

(Distingus Service Order)

(DSC, DMC, DFC)

(George Cross)

(George Madel)

(Knight Grand Cross)

(Most Exilance Order)

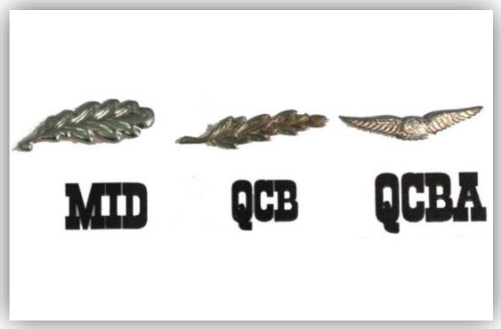

(MID)

(QCVS)

(Royal Red Cross)

(Victoria Cross)

सन्दर्भ सूचि

- *ऑनलाइन जर्नल Tylor & Francis*
- *Imperial Gajetiar of India (1908-1931) खंड-02*
- *Imperial Gazetteer of India, (1908–1931), v. 12, p. 27, British Indian Army infantry regiment*
- *ब्रिटिश साम्राज्य, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, उपनिवेश, सुमनेर, प्रष्ठ सं.-15*
- *Barthor P, Michael Burn, Jeffrey (1979)Indian Infantry Regiments- (1860 - 1914)*
- *Osprey Publication, ISBN-0-85045-307-0, Sumner Ian (2001) The Indian Army (1914-1917),Osprey Publication ISBN-1-84-176-196-6*
- *राजस्थान सरकार के पोर्टल, राजस्थान सरकार, लेख व पुस्तक- अनाल्स ऑफ़ एक्टिविटी ऑफ़ राजस्थान - जेम्स टॉड*
- *रहस्थान का इतिहास - गोपीनाथ शर्मा*
- *The tribes are costs of the central provinces of india- R.V. Russell (1916).*
- *History of Rajasthan - Rima Hooja – 2006*

- *Book- Penal Power and Colonial Rule, by-Mark Brown-2014, page-02,80,81,138. Published by-Taylor & Francis.*
- *गोरीशंकर ओझा, हिराचंद ओझा की पुस्तक सिरोही राज्य का इतिहास" पेज संख्या-310*
- *राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास - डॉ. गोपीनाथ शर्मा , डी. लीट. (राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर) जुलाई, 1991. प्रष्ठ संख्या – 73,74, 81, 82, 83*
- *मेंसन का पंत्र लारेन्स को, 10 सितम्बर, 1857, फाइल नं. रा.अ.; म्यूटीनी भाग-3, ए.जी .जी .. की रिपोर्ट, एफ एण्ड पी.; नं. 3146-47, 31 दिसम्बर, 1856; हीटकोट का पत्र, 13 सितंबर, 1857, फाइल नं, 01 ll, म्यूटीनी, भाग-3, रा.अ.*
- *सी.,एल. शावसं-ए मिर्मिंग चेप्टर ऑफ इंडियन म्युटीनी, पृ. 108*
- *एफ. एण्ड पी. डिपार्टमेंट सीक्रेट कंसल्टेंसन दि, 27 नव, सन् 1857, नं.. 249-251], रा.अ, दस्त्री रेकार्ड, जोधपुर, बही नं. 18 पृ, 278-389,*
- *जी .एन . शर्मा, सन 18 57 के भारतीय विप्लव में राजस्थान का योग- मरू भारती, अप्रेल 57 , पेज-63-66*
- *बी. दस्त्रो रिकॉर्ड जोधपुरः मारवाड़ का इतिहास भाग -2 पेज 448-450*
- *राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास -पेज-105 डॉ. गोपीनाथ शर्मा , डी. लीट. (राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर) जुलाई, 1991*

- *लोरेंस- डेसपैच, मुंशी ज्वाला सहाय –लायत राजस्थान पेज- 290, 291*
- *ओझा- बीकानेर का इतिहास, भाग-2, पेज – 444 - 49*
- *अजेंसी रिकार्ड सं :66 , म्यूटनी पेज :28*
- *प्रकाश व्यास : राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम : पेज 123*
- *सनद बही नं.-128 पेज-328*
- *रेऊ, मारवाड़ का इतिहास , भाग-2 , पेज-454*
- *वही, पेज-455*
- *हकीकत बही वि. सं. 1923, अ.बी.- रेऊ मारवाड़ का इतिहास, भाग -2 पेज-454*
- *Rajras.in/british-treaty-rajputana states*
- *राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास*
- *अध्याय-2 -पेज-11-41 लेखक- डॉ. गोपीनाथ शर्मा , डी. लीट. (राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर) जुलाई, 1991*
- *राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास,अध्याय-2 -पेज-24-25 लेखक-डॉ. गोपीनाथ शर्मा , डी. लीट. (राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर) जुलाई, 1991*
- *एचिसन ट्रीटीज एंगेजमेंट एंड सनट्स जिल्द-4, पृष्ठ-141*
- *ओझा, सिरोही राज्य का इतिहास पृष्ठ-155,186,246,277,279-281*

- *राजपुताना गजेटियर, भाग-3,पृ.-243,245, ट्रीटीज एंगेजमेंट एंड सनद्स, भाग-3 पृ.-310 -312*
- *नेणसी की ख्यात, भाग-1 , पृष्ट-131 – 3*
- *राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास*
- *अध्याय-2 -पेज-.29-30 लेखक- डॉ. गोपीनाथ शर्मा , डी. लीट. (राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर) जुलाई, 1991*
- *ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग-2 पृष्ट-694 – 763*
- *जोधपुर की ख्यात ,जिल्द-4 पृष्ट-82-84*
- *वीर विनोद भाग-2, पृष्ट- 888 -913 (इसके अनुसार 1803 अहृदनामा रद्द कर दिया गया था)*
- *1911 Encyclopedia Britanica*
- *सिरोही राज्य का इतिहास ,प्रथम प्रकरण –शिवगंज प्रष्ट सं.-58*
- *वेबपेज shaeoganj.rajasthanonline.in*
- *National army Museum.uk /detail.php?acc=1978-06-30-1*
- *Collection.nam.ac.uk*
- *पुस्तक- विश्व प्रसिद्ध युद्ध*
- *लेखक- राजेन्द्र कुमार ' राजीव '*
- *तृतीय संस्करण-सन-1988, अध्याय- प्रथम विश्व युद्ध, पेज संख्या-30,31,32*

- researchingww1.co.uk
- July -December 1915 Direction- war Diary,January 1916- Feb. 1919 war Diary
- Regimental per month tax(कर) विवरण -war Diary
- Role of Indian Army in the First world war, page -14
- Mac Munn, Maj. GF., The Armies if india, Adam and Charles Black, London,1911,pp.1-173
- Imperial Gazatiar of india (1808-1931), खंड-12,पेज-27
- ब्रिटिश साम्राज्य, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, उपनिवेश ,सुमनेर पेज सं.–15
- Barthor P, Micheal Burn, Jeffrey(1979)
- Indian Infantry Regiments (1860-1914),Osprey Publication, ISBN-0-85045-307-0
- Sumner Ian (2001) The Indian Army (1914-1917),Osprey Publication
- ISBN-1-84-176-196-6
- पुस्तक- विश्व प्रसिद्ध युद्ध
- लेखक- राजेन्द्र कुमार ' राजीव ' अध्याय- द्वितीय विश्व युद्ध, पेज- 24-29 सिरोही का इतिहास – पहला प्रक It's a Long Way to Tipperary - An Irish Story of the Great War

- *-UNIVERSITY OF LIMERICK'S WW1 Onlne Exhibition*
- *वेबसाइट-www.25thlondon.com/index.htm,www.poheritage.com*
- *https://www.convoyweb.org.uk, samilitaryhistory/vol085nchtmlरण, पेज-56-57 (एरिनपूरा)*
- *Website: iindiiameena.wordpress.com,*
- *Notes of the armies of indiia, part-51914-1918) by-The Margness of Cambriidge G.C.V.O.*
- *पुस्तकः राजस्थान का स्वतंत्रता आन्दोलन एक शौर्य परम्परा, अध्यायः4-राजस्थान की जनजातियों का आन्दोलन*
- *The Crapler -T he Central Reserve Police News Letter & Magazine1972.*
- *Vol.-01.No.06, Editorial: Central Reserve Police- A versatile firce Page No.221,222, 223.*
- *Website: Onefivenine.com और जनश्रुतियों के अनुसार*

- *Special thanks to my* **एरिनपूरा इतिहास बचाओ संघर्ष समिति** whatsApp ग्रुप *and my research team mambers-*

  1. *Mr. Jora Ram Meena (Sedariya)*
  2. *Mr. Bharatraj Meena (palari Jod)*
  3. *Mr. Narendra Kumar meena (Malnu)*

4. *Mr. Ram lal Meena (Purara)*
5. *Mr. Jagdish Meena (Pindwara)*
6. *Mr. Tarun Meena (Pindwara)*
7. *Mr. Jayanti lal Meena (palampur)*
8. *Mr. Khima Ram Meena (Falna)*

नोट्स

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

……………………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………

2
43

43RD ERINPURA REGIMENT. 1913.
Colour Havildar.
Mina.